सी-डैक
CDAC

17 वाँ अंक
वर्ष 2025

अभिव्यक्ति

वार्षिक हिन्दी पत्रिका

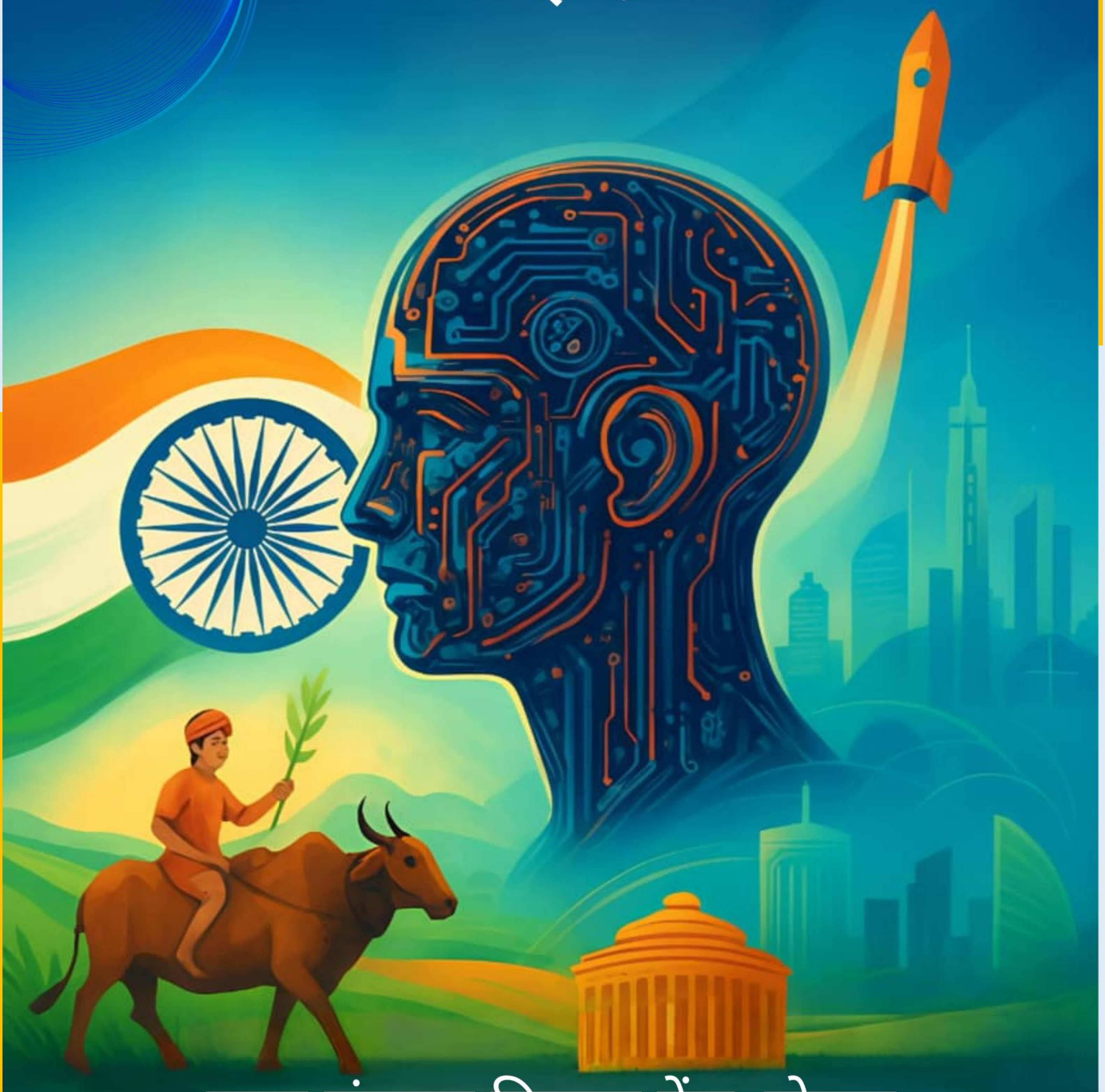

प्रगत संगणन विकास केंद्र, नोएडा

अभिव्यक्ति

अंक - सत्रहवां, वर्ष - 2025

संरक्षक

विवेक खनेजा

संपादक

डॉ. करूणेश अरोड़ा

सुनीता अरोड़ा

सह संपादक

ओम प्रकाश शर्मा

डॉ. चन्द्र मोहन

कवर डिजाइन

ऋषभ सिंह

विशेष सहयोग

नवीन चन्द्र

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं, उनसे सी-डैक, नोएडा और संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक)

अनुसंधान भवन, सी-56/1, सैक्टर-62, नोएडा- 201309

फोन: 0120-2210800, ई-मेलः hindicellnoida@cdac.in

इस अंक में

तकनीकी लेख				
1	भारत का डिजिटल भविष्य: ई-गवर्नेंस में तकनीकी क्रांति	:	ऋषि प्रकाश	6
2	साइबर सुरक्षा : सरकारी प्रयास और नागरिकों की जिम्मेदारी	:	सुश्री कान्ती सिंह सेंघर सुश्री रेखा सरस्वत	9
3	महिलाओं की साइबर सुरक्षा: चुनौतियां और समाधान	:	श्रीमती रेखा सारस्वत डॉ. मैरी जैसिंथा	13
4	उभरती तकनीकों में साइबर खतरों की चुनौती	:	रिया चेची डॉ. मैरी जैसिन्था डॉ. लक्ष्मी कल्याणी	15
5	कृत्रिम बुद्धिमत्ता की दोहरी प्रकृति - एक सुरक्षा जोखिम और एक सुरक्षा समाधान	:	शिवांगी नंदा तुषार पटनायक	17
6	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) का हमारे दैनिक जीवन में योगदान	:	नितिन कुमार वार्ष्णेय	19
7	स्वास्थ्य सेवा में एआई (AI): भारत के लिए चुनौतियां और अवसर	:	अनंत कौशिक	22
8	सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन डेवलपमेंट जीवन चक्र में रोबोटिक्स का योगदान	:	दीपशिखा वन्दना	25
9	सोशल मीडिया का कंटेंट और डिजिटल निगरानी	:	आशीष गौतम विवेक आर्य	27
10	UI/UX डिजाइनः अनुभवों की भाषा, भविष्य की दृष्टि	:	डोला मुनदीप राव	29
11	संसद भाषिनी पहल: AI के साथ भाषा और शासन का मेल	:	सोमेश	30
12	सॉफ्टवेयर परीक्षण में ऑटोमेशन की भूमिका – एक व्यावहारिक अनुभव	:	भावेश गुप्ता	32
13	सॉफ्टवेयर	:	शशांक कुमार	34
14	स्प्रिंग बूट माइग्रेशन: आसान, तेज और आधुनिक डेवलपमेंट	:	देवेश सिंह	36
15	स्प्रिंग सिक्योरिटी - सुरक्षित वेब अनुप्रयोगों की नींव	:	अनुज सजवाण	39
गैर-तकनीकी लेख/कहानी				
1	बदलती पीढ़ियाँ और समय का चक्र	:	दीपशिखा वन्दना	42
2	तुलसी: धर्म और विज्ञान का मेल	:	प्रांशु जगूरी	43
3	ईश्वर की दुकान	:	अनिल कुमार	44
4	भारत में कृषि और ड्रोन तकनीक: नवाचार की ओर बढ़ते कदम	:	भावेश गुप्ता	45
5	पालमपुर : एक खूबसूरत घाटी	:	चंद्र मोहन	48
6	युद्ध और शांति	:	रवि कुमार सिंह	51

7	कर्म बनाम भाग्य	:	हिमांशु पाण्डेय	55
8	मौत का उत्सव	:	राजेंद्र सिंह भंडारी	57
9	डिजिटल गिरफ्तारी: मेरी कहानी एक चेतावनी	:	दिशा राठौर	60
10	खुद से दोस्ती कैसे करें?	:	जय कुमार	62
11	बारिश	:	रजनी शर्मा	64
12	प्रोत्साहन	:	भुबन दास	66
कविता				
1	वापसी की राह	:	किरण वालिया	67
2	एआई की अहमियत (व्यंग)	:	दीपशिखा वन्दना	68
3	याद पिता की	:	देव कुमार मिश्रा	69
4	परमात्मा की तलाश	:	राजेंद्र सिंह भंडारी	70
5	माँ का रिश्ता	:	पुनीत गुरमुखानी	73
6	चार लोग	:	ईशा गुप्ता	75
7	कोविड और महाकुंभ	:	अनिल कुमार	77
8	तकनीक की उड़ान	:	प्रिंस तोमर	78
9	महाकुंभ की बेला में	:	पार्थ पी. चट्टराज	79
10	मानवता की सेवा में प्रकृति का योगदान	:	सुदेश शर्मा	81
11	मानव जीवन	:	रजनी शर्मा	83
12	बेटे की जिम्मेदारी	:	पुनीत गुरमुखानी	85
13	जब मां 25 की थी	:	काजल भारद्वाज	86
14	विराम के बाद	:	जितेन्द्र जैन	88
15	फंदा	:	रिषभ शर्मा	90
राजभाषा कॉर्नर				
1	सी-डैक, नोएडा में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन संबंधी रिपोर्ट- वर्ष 2024-25	:	ओमप्रकाश शर्मा	91
2	राजभाषा संबंधी विभिन्न गतिविधियों की चित्रमय झलकियां	:	-	94

♦♦♦

संरक्षक की कलम से

संदेश

मुझे इस केन्द्र की वार्षिक हिन्दी पत्रिका “अभिव्यक्ति” का 17वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए गर्व एवं प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस केन्द्र के लेखकों ने विविध विधाओं में विभिन्न विषयों पर अपनी रचनाओं के द्वारा अपने विचार व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। इस पत्रिका में प्रकाशित तकनीकी, गैर तकनीकी लेखों, कहानियों और कविताओं से लेखकों और लेखिकाओं के विभिन्न पहलुओं पर उनके विचार आपको पढ़ने को मिलेंगे। इससे मौलिक लेखन को प्रोत्साहन मिलेगा।

मेरा मत है कि ऐसी पत्रिकाएँ राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग तथा इसके उत्तरोत्तर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं और कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित भी करती हैं।

मैं, इन सभी लेखकों/रचनाकारों एवं संपादक मंडल को वार्षिक हिन्दी पत्रिका ”अभिव्यक्ति” के 17वें अंक को प्रकाशित करने पर हार्दिक बधाई देता हूँ और इस पत्रिका के अनवरत प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

विवेक खनेजा
कार्यकारी निदेशक
सी-डैक, नोएडा

♦ ♦ ♦

संपादकीय

संविधान सभा द्वारा विस्तृत चर्चा और गहन मंथन के पश्चात 14 सितम्बर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। स्वतन्त्रता के पश्चात भारत सरकार द्वारा प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति को अपनाकर हिन्दी के प्रयोग को निरंतर बढ़ाने के प्रयास किए गए हैं। इसके लिए आधारभूत ढांचा स्थापित करने के साथ-साथ केन्द्रीय सरकार के हिन्दीत्तर कर्मचारियों को हिन्दी में प्रशिक्षित करने के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है, ताकि हिन्दीत्तर कर्मचारी सेवाकालीन हिन्दी प्रशिक्षण प्राप्त करके अपना कार्य सरलता से निष्पादित कर सकें।

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी कार्य का सुचारू अनुवीक्षण करने और इससे संबंधित सुविचारित योजनाएं बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा 26 जून, 1975 को गृह मंत्रालय के अधीन स्वतंत्र राजभाषा विभाग की स्थापना की गई। जो इस वर्ष अपनी स्थापना की स्वर्ण जयंती मना रहा है। इसी क्रम में भारतीय भाषाओं में आपसी समन्वय और विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा इसी वर्ष राजभाषा विभाग के अंतर्गत "भारतीय भाषा अनुभाग" की भी स्थापना की गई है।

वार्षिक हिन्दी पत्रिका "अभिव्यक्ति" के इस अंक के लिए इस केन्द्र के कर्मचारियों ने तकनीकी, गैर तकनीकी लेख, कहानियां और कविताओं का योगदान करके प्रशंसनीय कार्य किया है। जो यह प्रमाणित करता है कि कर्मचारी सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर अनुसंधान और विकास संबंधी कार्य करने के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को सतत बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत रहते हैं। सी-डैक परिवार के नन्हें मुन्नों ने भी पत्रिका के लिए चित्रांकन संबंधी प्रविष्टियों का योगदान देकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित की है, जो सराहनीय है।

संपादक मंडल द्वारा कर्मचारियों से प्राप्त रचनाओं में से रोचक और ज्ञानोपयोगी रचनाओं को चयनित करके इस पत्रिका में शामिल किया गया है। विगत की भांति इस वर्ष भी पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों के मनोबल को ऊंचा बनाए रखने के लिए उचित प्रोत्साहन दिए जाएंगे, ताकि होनहार और उभरते रचनाकारों का उत्साहवर्धन किया जा सके।

जिन कर्मचारियों ने इस पत्रिका के लिए ज्ञानवर्धक, रोचक और उपयोगी रचनाओं का योगदान दिया है, वे प्रशंसा और बधाई के पात्र हैं। इस पत्रिका के बारे में हमें अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव अवश्य भेजें, ताकि हम इस पत्रिका के आगामी अंकों को आपकी अपेक्षाओं के अनुसार बना सकें।

शुभकामनाओं सहित,

- संपादक

♦♦♦

भारत का डिजिटल भविष्य: ई-गवर्नेंस में तकनीकी क्रांति

- ऋषि प्रकाश
वैज्ञानिक- जी

भारत आज एक डिजिटल क्रांति के दौर से गुजर रहा है। विशाल जनसंख्या और तेजी से बढ़ते तकनीकी परिदृश्य के साथ, भारत सरकार ने ई-गवर्नेंस यानी इलेक्ट्रॉनिक शासन को अपनाकर सरकारी सेवाओं को आम लोगों तक आसान, तेज, और पारदर्शी बनाने का संकल्प लिया है। "डिजिटल इंडिया" पहल ने इस दिशा में एक मजबूत नींव रखी है, जिसके तहत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), ब्लॉकचेन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), क्लाउड कंप्यूटिंग और 5G जैसी नई तकनीकों ने ई-गवर्नेंस को नया रूप दिया है। ये तकनीकें न केवल सरकारी कामकाज को कुशल बना रही हैं, बल्कि हर नागरिक को सरकार से सीधे जोड़ रही हैं। यह लेख भारत में ई-गवर्नेंस की वर्तमान स्थिति, इन तकनीकों की भूमिका, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करता है।

ई-गवर्नेंस का वर्तमान परिदृश्य

कभी सरकारी दफ्तरों में लंबी कतारें, कागजी फाइलों का ढेर और महीनों की देरी आम बात थी। लेकिन पिछले कुछ सालों में ई-गवर्नेंस ने इसे बदल दिया है। आज डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत कई ऐसी पहल शुरू हुई हैं, जो नागरिकों के जीवन को आसान बना रही हैं। आधार, जो दुनिया का सबसे बड़ा बायोमेट्रिक डिजिटल पहचान कार्यक्रम है, ने सरकारी सेवाओं में पहचान को सरल और सुरक्षित बनाया है। इससे न केवल समय की बचत हुई, बल्कि भ्रष्टाचार और रिसाव को भी कम किया गया। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) ने पैसों के लेन-देन को इतना आसान बना दिया कि अब गली-गली में डिजिटल भुगतान हो रहा है। यह नकदी रहित अर्थव्यवस्था की ओर एक बड़ा कदम है।

इसी तरह, सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM) ने सरकारी खरीद को पारदर्शी और कुशल बनाया है। डिजिटल लॉकर ने कागजात को डिजिटल रूप में सुरक्षित रखने की सुविधा दी, जिससे अब आपको हर जगह फाइलें ले जाने की जरूरत नहीं। ई-साइन ने कागजी हस्ताक्षर की जरूरत खत्म कर दी, और मोबाइल सेवा ने आपको तुरंत सरकारी सूचनाएँ और अलर्ट देने का रास्ता खोला। नेशनल सिंगल साइन ऑन (NSSO) ने कई पासवर्ड याद रखने के झंझट से छुटकारा दिलाया और सुरक्षा को बढ़ाया है। ये सभी कदम दिखाते हैं कि भारत ई-गवर्नेंस के जरिए एक डिजिटल रूप से सशक्त समाज की ओर बढ़ रहा है।

उभरती तकनीकों का योगदान

ई-गवर्नेंस को नई ऊँचाइयों तक ले जाने में उभरती तकनीकों की भूमिका बेहद अहम है। आइए इनमें से कुछ प्रमुख तकनीकों को समझें:

1. **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग**: AI आज सरकार के लिए एक स्मार्ट सहायक की तरह काम कर रही है। यह न केवल फैसले लेने में मदद करती है, बल्कि सेवाओं को तेज और सुरक्षित भी बनाती है। INDIAai जैसे कार्यक्रम AI को सामाजिक भलाई के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। मिसाल के तौर पर, AI से फसल उत्पादन की भविष्यवाणी हो रही है, जिससे किसानों और नीति-निर्माताओं को फायदा हो रहा है। AI चैटबॉट्स नागरिकों के सवालों का जवाब दे रहे हैं और सरकारी प्रक्रियाओं को स्वचालित कर रहे हैं।

2. **ब्लॉकचेन**: यह तकनीक एक ऐसी डिजिटल बहीखाता है, जिसे कोई बदल नहीं सकता। भारत में नेशनल ब्लॉकचेन फ्रेमवर्क के तहत इसे जमीन के रिकॉर्ड, आपूर्ति श्रृंखला और डिजिटल पहचान के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। कई राज्यों में ब्लॉकचेन से जमीन के रिकॉर्ड डिजिटल हो रहे हैं, जिससे भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी कम हो रही है। प्रामाणिक नाम का प्लेटफॉर्म मोबाइल ऐप्स की सुरक्षा को ब्लॉकचेन से जाँचता है।

3. **5G और IoT**: 5G की तेज इंटरनेट स्पीड और IoT यानी इंटरनेट ऑफ थिंग्स ने शासन को स्मार्ट बनाया है। IoT डिवाइस वास्तविक समय में डेटा इकट्ठा करते हैं, जैसे ट्रैफिक, कचरा प्रबंधन या पर्यावरण की स्थिति। 5G इसे तेजी से सरकार तक पहुँचाता है। भारतनेट परियोजना गाँवों को फाइबर ऑप्टिक से जोड़ रही है, और 5G इंडिया 2023 रोडमैप इसे और आगे ले जा रहा है।

4. **क्लाउड कंप्यूटिंग**: डिजिलॉकर और मेघराज जैसे क्लाउड प्लेटफॉर्म डेटा को सुरक्षित रखते हैं और सेवाओं को सस्ता व लचीला बनाते हैं। यह तकनीक सरकार को बिना भारी ढांचे के बड़े पैमाने पर काम करने की ताकत देती है।

चुनौतियाँ और समाधान

ई-गवर्नेंस का यह सफर आसान नहीं है। सबसे बड़ी चुनौती है डेटा की गोपनीयता और साइबर सुरक्षा। डिजिटल सिस्टम में साइबर हमले और डेटा चोरी का खतरा बना रहता है। इसके लिए डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन (DPDP) बिल और मजबूत साइबर नीतियाँ जरूरी हैं। दूसरी बड़ी समस्या है डिजिटल विभाजन। गाँवों और दूरदराज के इलाकों में तेज इंटरनेट की कमी अभी भी है। भारतनेट और PM-WANI जैसे कदम इसे दूर कर सकते हैं।

इन तकनीकों को लागू करने की लागत भी बहुत ज्यादा है। AI, ब्लॉकचेन और 5G के लिए बड़े निवेश की जरूरत है, जिसे सरकार अकेले नहीं कर सकती। इसके लिए पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (PPP) एक अच्छा विकल्प है। इसके अलावा, तकनीक को चलाने के लिए कुशल लोग कम हैं। फ्यूचरस्किल्स प्राइम और कर्मयोगी जैसे कार्यक्रम सरकारी कर्मचारियों को प्रशिक्षित कर रहे हैं। साथ ही, अलग-अलग राज्यों और विभागों में सिस्टम का एक-दूसरे से तालमेल न होना भी मुश्किल पैदा करता है। इसके लिए नेशनल ई-गवर्नेंस स्टैंडर्ड्स जरूरी हैं।

अगले पाँच साल: एक झलक

अगले पाँच सालों में ई-गवर्नेंस और सशक्त होगा। AI चैटबॉट्स दिन-रात आपकी मदद करेंगे, जैसे सवालों के जवाब देना या फॉर्म भरने में गाइड करना। ब्लॉकचेन से मतदान, जमीन के रिकॉर्ड और सरकारी खरीद सुरक्षित और पारदर्शी होंगे। 5G और IoT स्मार्ट शहरों को हकीकत बनाएँगे, जहाँ ट्रैफिक, कचरा और पानी का प्रबंधन अपने आप होगा। गाँवों में 5G से टेलीमेडिसिन और ऑनलाइन पढ़ाई को बढ़ावा मिलेगा, जैसे आयुष्मान भारत और दीक्षा प्लेटफॉर्म। डेटा एनालिटिक्स सरकार को नागरिकों की जरूरतें समझने और बेहतर नीतियाँ बनाने में मदद करेगा।

वैश्विक मंच पर भारत

भारत का डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (DPI) जैसे आधार और UPI दुनिया के लिए मिसाल बन रहा है। डिजिटल पब्लिक गुड्स अलायंस (DPGA) के जरिए भारत अपने अनुभव को बाँट सकता है। आधार से डिजिटल पहचान और UPI से तुरंत भुगतान का मॉडल दूसरे देश अपना सकते हैं। यह भारत को डिजिटल दुनिया का लीडर बनाने का मौका है।

निष्कर्ष

उपरोक्त चर्चा के आधार पर हम कह सकते हैं कि ई-गवर्नेंस भारत के डिजिटल भविष्य का आधार है। ये उभरती तकनीकें सरकार को नागरिकों के करीब ला रही हैं, पारदर्शिता बढ़ा रही हैं और जवाबदेही सुनिश्चित कर रही हैं। लेकिन इसके लिए तेज इंटरनेट, डिजिटल साक्षरता, मजबूत नीतियाँ और निवेश आवश्यक हैं। अगर भारत इन चुनौतियों से पार पा लेता है, तो यह न केवल अपने 140 करोड़ लोगों के लिए, बल्कि पूरी दुनिया के लिए डिजिटल क्रांति का मार्ग प्रशस्त करेगा। यह एक ऐसा भारत होगा, जहाँ हर नागरिक तक सरकार की पहुँच होगी–सिर्फ एक क्लिक की दूरी पर।

♦ ♦ ♦

सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है।
- महात्मा गाँधी

साइबर सुरक्षा : सरकारी प्रयास और नागरिकों की जिम्मेदारी

- रेखा सारस्वत, वैज्ञानिक-ई
- कान्ती सिंह सेंघर, वैज्ञानिक-ई

जैसे-जैसे भारत डिजिटलीकरण और उन्नत तकनीक की ओर तेज़ी से अग्रसर हो रहा है, वैसे-वैसे साइबर अपराधों, खतरों और हमलों की संख्या में भी निरंतर वृद्धि हो रही है। डिजिटल इंडिया, स्मार्ट शहर, ऑनलाइन बैंकिंग, UPI और सरकारी सेवाओं के ऑनलाइन माध्यम से आम नागरिकों की ज़िंदगी आसान हो गई है। लेकिन इसी तकनीकी विकास के साथ-साथ साइबर अपराधियों ने भी अपने तरीकों को आधुनिक बना लिया है। आज की तारीख में फिशिंग, रैनसमवेयर, डेटा चोरी, और सोशल इंजीनियरिंग जैसे हमले न केवल व्यक्तियों को प्रभावित कर रहे हैं, बल्कि देश की राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक प्रणाली और गोपनीय सूचनाओं को भी खतरे में डाल रहे हैं। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि भारत न केवल डिजिटल रूप से सशक्त बने, बल्कि साइबर सुरक्षा की दृष्टि से भी जागरूक और सुरक्षित बने। इसी उद्देश्य से भारत सरकार ने "साइबर सुरक्षित भारत (Cyber Surakshit Bharat)" जैसे कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं ताकि आम नागरिक से लेकर सरकारी संस्थाएं तक, सभी इस डिजिटल खतरों से सुरक्षित रह सकें।

प्रमुख साइबर खतरे और हमले:

- **फिशिंग (Phishing) :** ईमेल या SMS के ज़रिए नकली वेबसाइट भेजकर लोगों से पासवर्ड, OTP, बैंक डिटेल्स चुराना।

- **मैलवेयर (Malware) :** यह एक प्रकार का हानिकारक सॉफ्टवेयर होता है जो सिस्टम में घुसकर डेटा चुराता है या सिस्टम को नुकसान पहुँचाता है। इसके प्रकार वायरस (Virus), वॉर्म (Worm), ट्रोजन हॉर्स (Trojan), स्पायवेयर (Spyware)

- **रैंसमवेयर (Ransomware):** यह एक ऐसा मैलवेयर होता है जो आपके डेटा को लॉक कर देता है और उसे वापस देने के लिए फिरौती (ransom) माँगता है। भारत में कई सरकारी और निजी संस्थानों को ऐसे हमलों का सामना करना पड़ा है।

- **स्पूफिंग (Spoofing):** जब कोई हैकर खुद को किसी भरोसेमंद व्यक्ति/सिस्टम के रूप में प्रस्तुत करता है। जैसे: ईमेल स्पूफिंग, कॉलर ID स्पूफिंग आदि।

- **DDoS हमला (Distributed Denial of Service):** एक वेबसाइट या सर्वर को एक साथ कई सिस्टम्स से ट्रैफिक भेजकर क्रैश करना या धीमा कर देना। इससे वेबसाइट कुछ समय के लिए काम करना बंद कर देती है।

- **जीरो-डे हमला:** जब कोई हैकर उस कमजोरी (vulnerability) का फायदा उठाता है जो अभी तक किसी को पता ही नहीं चली है।यह बेहद खतरनाक और तुरंत प्रतिक्रिया की मांग करता है।

- **Man-in-the-Middle Attack (MITM) :** जब दो लोगों के बीच हो रही डिजिटल बातचीत में कोई तीसरा व्यक्ति बीच में घुसकर जानकारी चुरा लेता है। यह पब्लिक Wi-Fi पर अक्सर होता है।

- **सोशल इंजीनियरिंग (Social Engineering)** : इसमें साइबर अपराधी धोखे या भावनात्मक तरीके से जानकारी हासिल करता है - जैसे: “आपका बेटा एक्सीडेंट में है, तुरंत पैसे भेजें”, “आपने लॉटरी जीती है, बैंक डिटेल भेजें”.

कैसे बचें इन साइबर हमलों से:

- मजबूत पासवर्ड रखें और समय-समय पर बदलें।
- अनजान ईमेल, लिंक या अटैचमेंट न खोलें।
- एंटीवायरस और फ़ायरवॉल का उपयोग करें।
- संवेदनशील जानकारी सार्वजनिक रूप से साझा न करें।
- सुरक्षित (HTTPS) वेबसाइट का ही उपयोग करें।
- पब्लिक Wi-Fi से बचें।
- 2-फैक्टर ऑथेंटिकेशन का उपयोग करें।

भारत सरकार द्वारा साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में प्रमुख पहल :

- **भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (CERT-In (Indian Computer Emergency Response Team) -** यह भारत की राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा एजेंसी है जो साइबर हमलों की निगरानी, रिपोर्टिंग और प्रतिक्रिया देती है। यह संगठनों को अलर्ट, एडवायजरी और दिशानिर्देश जारी करती है। वेबसाइट: www.cert-in.org.in

- **साइबर सुरक्षित भारत अभियान (Cyber Surakshit Bharat Abhiyan) -** MeitY द्वारा, सरकारी अधिकारियों और विभागों को साइबर सुरक्षा के प्रति संवेदनशील और सक्षम बनाना। इसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम, वर्कशॉप और जागरूकता अभियान शामिल हैं।

- **साइबर स्वच्छता केन्द्र (Cyber Swachhta Kendra)** (Botnet Cleaning and Malware Analysis Centre)- लॉन्च: 2017, नागरिकों को उनके संक्रमित कंप्यूटर/मोबाइल की पहचान और सफाई में मदद करता है। मुफ्त टूल्स और साइबर सफाई समाधान प्रदान करता है। वेबसाइट: www.cyberswachhtakendra.gov.in

- **राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति (National Cyber Security Policy) (2013) -** उद्देश्य: भारत को सुरक्षित और लचीला साइबर स्पेस देना। 5 लाख साइबर सुरक्षा पेशेवर तैयार करने का लक्ष्य। नीति को अब अपडेट कर " राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा रणनीति (National Cyber Security Strategy)" के रूप में लागू करने की योजना है।

- **सूचना सुरक्षा शिक्षा और जागरूकता ISEA (Information Security Education & Awareness) Project:** Ministry of Electronics and IT द्वारा शुरू किया गया जागरूकता कार्यक्रम। आम जनता, छात्रों और शिक्षकों को साइबर सुरक्षा के प्रति शिक्षित और जागरूक बनाना। वेबसाइट: **www.isea.gov.in**

- **राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (National Cyber Crime Reporting Portal):** आम नागरिकों को ऑनलाइन साइबर अपराध (जैसे कि बैंक धोखाधड़ी, महिलाओं से संबंधित अपराध) की शिकायत दर्ज करने का प्लेटफॉर्म। वेबसाइट: **www.cybercrime.gov.in**

- **राष्ट्रीय महत्वपूर्ण सूचना अवसंरचना संरक्षण केन्द्र (National Critical Information Infrastructure Protection Centre (NCIIPC) -** यह केंद्र राष्ट्रीय महत्व की सूचना प्रणाली की सुरक्षा करता है - जैसे कि रेलवे, बिजली, बैंकिंग और दूरसंचार।

- **राष्ट्रीय साइबर समन्वय केन्द्र (National Cyber Coordination Centre (NCCC) -** एकीकृत प्रणाली जो इंटरनेट ट्रैफिक और साइबर खतरों की रीयल-टाइम निगरानी करती है।

भारत तेजी से डिजिटल युग की ओर बढ़ रहा है, जहाँ आधार, UPI, डिजिलॉकर, ऑनलाइन बैंकिंग और सरकारी सेवाएँ अब इंटरनेट पर आसानी से उपलब्ध हैं। लेकिन इस डिजिटल विस्तार के साथ-साथ

साइबर खतरों का दायरा भी तेज़ी से बढ़ रहा है। हर दिन हजारों लोग फिशिंग, व्हाट्सऐप स्कैम, बैंक धोखाधड़ी जैसे साइबर अपराधों का शिकार हो रहे हैं, जिनमें विशेष रूप से बच्चे, महिलाएँ और वरिष्ठ नागरिक निशाना बन रहे हैं। ऐसे में ई-गवर्नेंस, CoWIN, GST, डिजिलॉकर जैसी सेवाओं की गोपनीयता और उपलब्धता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

साइबर हमले देश की आर्थिक और प्रशासनिक व्यवस्था को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचा सकते हैं। रेलवे, बिजली, संचार और रक्षा जैसी महत्वपूर्ण आधारभूत संरचनाएँ भी किसी भी समय साइबर हमलों का लक्ष्य बन सकती हैं। लोग अनजाने में लिंक खोलकर, पासवर्ड साझा करके या निजी जानकारी लीक करके स्वयं को और देश को खतरे में डाल देते हैं। इसलिए नागरिकों में साइबर सुरक्षा के प्रति **व्यवहारिक जागरूकता** और **नैतिक डिजिटल आचरण** को विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। यदि भारत साइबर स्पेस में व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा में सशक्त होता है, तो वैश्विक मंच पर उसकी छवि और अधिक मज़बूत होगी और विदेशी निवेशक तथा तकनीकी साझेदार भारत पर अधिक भरोसा करेंगे। वास्तव में, **साइबर सुरक्षा के बिना डिजिटल इंडिया की कल्पना अधूरी है।** केवल जागरूकता, तकनीक और उचित नीति के माध्यम से ही नागरिकों और राष्ट्र, दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

♦ ♦ ♦

बच्चों की फुलवारी

- शिवांश कुमार
कक्षा- प्रथम
सुपुत्र नवीन चन्द्र

महिलाओं की साइबर सुरक्षा: चुनौतियां और समाधान

- डॉ. मैरी जैसिन्था, वैज्ञानिक- एफ
- रेखा सारस्वत, वैज्ञानिक- ई

आज के डिजिटल युग में, इंटरनेट दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है, जो संचार, शिक्षा, व्यवसाय और सामाजिक संपर्क के अनगिनत अवसर प्रदान करता है। लेकिन अवसरों के साथ-साथ, यह कनेक्टिविटी विशेष रूप से महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण जोखिम भी लेकर आई है, जो तेजी से विभिन्न प्रकार के साइबर अपराधों का टारगेट बन रही हैं। ऑनलाइन उत्पीड़न, दुर्व्यवहार और शोषण की घटनाओं की बढ़ती संख्या के कारण, महिलाओं के लिए साइबर सुरक्षा का मुद्दा भारत में महत्वपूर्ण हो गया है।

महिलाओं को साइबर जगत में कई तरह के खतरों का सामना करना पड़ता है, जो उनकी सुरक्षा और निजता से समझौता करते हैं। मार्च 2025 में गृह मंत्रालय द्वारा लोकसभा में प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार, भारत में पिछले पाँच वर्षों में महिलाओं के विरुद्ध कुल 48475 साइबर अपराध के मामले दर्ज किए गए हैं।

सबसे आम और चिंताजनक खतरों में से एक साइबरस्टॉकिंग है, जहां व्यक्तियों का लगातार पीछा किया जाता है, निगरानी की जाती है और उन्हें ऑनलाइन परेशान किया जाता है, जिससे अक्सर भावनात्मक संकट और डर पैदा होता है। एक और बड़ी चुनौती साइबरबुलिंग है, जहां महिलाओं को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर आपत्तिजनक, धमकी भरे या अपमानजनक संदेश और टिप्पणियों का सामना करना पड़ता है। निजी तस्वीरों को बिना सहमति के साझा करने का मुद्दा, एक और गंभीर समस्या है, जहां पीड़ित को शर्मिंदा या ब्लैकमेल करने के उद्देश्य से महिला की सहमति के बिना निजी तस्वीरें और वीडियो ऑनलाइन लीक कर दिए जाते हैं। नकली प्रोफाइल के माध्यम से किसी अन्य व्यक्ति का दिखावा करना, फ़िशिंग हमलों के माध्यम से सेक्सटॉर्शन, डॉक्सिंग जिसमें पते और फ़ोन नंबर जैसी व्यक्तिगत जानकारी लीक करना शामिल है, और महिलाओं को लक्षित करके ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी कुछ अन्य महत्वपूर्ण साइबर खतरे हैं।

सुरक्षित इंटरनेट प्रथाओं और कानूनी उपायों के बारे में सीमित जागरूकता, विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में, महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराधों के खिलाफ लड़ाई में प्राथमिक चुनौतियों में से एक है। इसके अलावा, कई महिलाएं सामाजिक भय और पीड़ित को दोषी ठहराए जाने के डर से मामला दर्ज नहीं करवाती हैं। इसके अलावा, कानून कार्यान्वयन एजेंसियों के पास ऑनलाइन उत्पीड़न से संबंधित मामलों को प्रभावी ढंग से संभालने के लिए आवश्यक संसाधनों, प्रशिक्षण और संवेदनशीलता का भी अभाव है। प्रौद्योगिकी प्लेटफ़ॉर्म और सोशल मीडिया ऐप भी कभी-कभी महिलाओं की सुरक्षा से संबंधित शिकायतों को दूर करने के लिए पर्याप्त सुरक्षा सुविधाएँ और तत्काल प्रतिक्रिया तंत्र प्रदान करने में विफल रहते हैं।

इस मुद्दे की गंभीरता को समझते हुए, भारत सरकार ने महिलाओं के लिए साइबर सुरक्षा में सुधार के लिए कई पहल की हैं। गृह मंत्रालय द्वारा शुरू की गई महिलाओं और बच्चों के खिलाफ साइबर अपराध रोकथाम (CCPWC) योजना, महिलाओं और बच्चों को लक्षित करने वाले साइबर अपराधों से निपटने के लिए कानून कार्यान्वयन एजेंसियों की क्षमता को मजबूत करने पर केंद्रित है। राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (cybercrime.gov.in) ऐसे अपराधों की ऑनलाइन रिपोर्टिंग के लिए एक समर्पित मंच प्रदान करता है, जिससे पीड़ितों के लिए न्याय तक आसान पहुँच सुनिश्चित होती है। सरकार ने साइबर धोखाधड़ी की सूचना देने के लिए राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 भी शुरू किया है। महिलाओं के लिए विभिन्न साइबर सुरक्षा जागरूकता योजनाएँ भी शुरू की गई हैं ताकि महिलाओं को उनके खिलाफ विभिन्न साइबर अपराधों, रोकथाम तकनीकों और उपलब्ध रिपोर्टिंग सुविधाओं के बारे में जागरूक किया जा सके। सूचना सुरक्षा शिक्षा और जागरूकता (ISEA) परियोजना और साइबर शक्ति परियोजनाएँ इस दिशा में सरकार की उल्लेखनीय पहल हैं।

महिलाओं की साइबर सुरक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए, हाल ही में शुरू किया गया डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम (DPDP Act) भी डेटा गोपनीयता के मुद्दों को एड्रेस करके बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है। महिलाओं को रिवेंज पोर्न से संबंधित अपराधों से बचाने में stopNCII.org जैसी वेबसाइट भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। महिलाओं के लिए साइबर सुरक्षा का उद्देश्य सिर्फ़ अपराधों को रोकना नहीं है; बल्कि डिजिटल दुनिया में स्वतंत्र और निडर होकर भाग लेने के उनके अधिकार की रक्षा करना भी है।

♦ ♦ ♦

हमें तो हिन्दी भाषा को इस योग्य बना देना है कि वह साधारण से साधारण मजदूर से लेकर अत्यंत विकसित मस्तिष्क के बुद्धिजीवी के दिमाग में समान भाव से विहार सकें।

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

उभरती तकनीकों में साइबर खतरों की चुनौती

- डॉ. लक्ष्मी कल्याणी, वैज्ञानिक- एफ
- डॉ. मैरी जैसिन्था, वैज्ञानिक- एफ
- रिया चेची, परियोजना सहायक

जैसे-जैसे दुनिया आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), ब्लॉकचेन और 5G जैसी नई तकनीकों को अपना रही है, एक चुपचाप चल रही जंग भी तेज हो रही है। यह जंग है साइबर खतरों से लड़ने की। ये तकनीकें जहां हमारी जिंदगी को आसान बना रही हैं, वहीं साइबर हमलों के नए रास्ते भी खोल रही हैं।

AI को लें, तो इसका इस्तेमाल वॉयस असिस्टेंट से लेकर बैंकिंग सिस्टम तक में हो रहा है। लेकिन यही AI अब धोखाधड़ी के लिए भी इस्तेमाल हो रहा है, जैसे कि नकली वीडियो बनाना, लोगों को फंसाने वाले ई-मेल भेजना और इंसानों जैसा व्यवहार दिखाकर लोगों को धोखा देना। अब तो हैकर्स AI की मदद से ऐसे मैसेज बना रहे हैं जो बिल्कुल असली लगते हैं।

IoT की बात करें तो यह हमारे घर के स्मार्ट डिवाइस, पहनने वाले गैजेट, हेल्थ डिवाइस और मशीनों को आपस में जोड़ता है। लेकिन इनमें से कई डिवाइसों में ठीक से सुरक्षा नहीं होती। एक छोटा-सा डिवाइस भी पूरे नेटवर्क के लिए खतरा बन सकता है। इसी तरह 5G नेटवर्क ने स्पीड और कनेक्टिविटी तो बढ़ाई है, लेकिन इसके साथ ही साइबर हमलों को पकड़ना और भी मुश्किल हो गया है। 5G में जुड़े डिवाइसों की संख्या बहुत ज़्यादा होती है, जिससे खतरे भी ज़्यादा हो जाते हैं।

ब्लॉकचेन को आमतौर पर सुरक्षित माना जाता है, लेकिन असल में इसके स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट में कमियाँ होती हैं। कई बार क्रिप्टो वॉलेट भी हैक हो जाते हैं और पैसे वापस लाना नामुमकिन होता है।

आज हम जो भी एप्लिकेशन रोज़मर्रा में इस्तेमाल करते हैं, चाहे वो ई-कॉमर्स ऐप्स जैसे अमेज़न (Amazon), फ्लिपकार्ट (Flipkart), मिंत्रा (Myntra) हों, या मनोरंजन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक (Facebook), इंस्टाग्राम (Instagram), प्राइम वीडियो (Prime Video), जियो (Jio), यूट्यूब (YouTube), या फिर शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़ी ऐप्स जैसे बायजूस (Byju's), कोर्सेरा (Coursera), उडेमी (Udemy) और कई सरकारी वेबसाइट्स, ये सभी क्लाउड (Cloud) के ज़रिए एक्सेस की जाती हैं। क्लाउड कंप्यूटिंग ने होस्टिंग, आसान एक्सेस, मल्टी-टेनेन्सी जैसी कई सुविधाएं दी हैं, लेकिन इसके साथ ही हर दिन सामने आने वाले साइबर खतरों को भी बढ़ा दिया है, जिनका सामना एप्लिकेशन्स और व्यवसायों को करना पड़ता है।

इन खतरों में शामिल हैं; डेटा ब्रीच (Data Breach) यानी यूज़र की जानकारी का गलत हाथों में पहुँच जाना, डेटा लॉस (Data Loss) यानी डेटा का मिट जाना, इनसिक्योर एपीआईज़ (Insecure APIs) यानी कमजोर इंटरफेस जिनसे सुरक्षा में सेंध लग सकती है, कॉम्प्लायंस इशूज़ (Compliance Issues) यानी नियमों का पालन न होना, अकाउंट हाईजैकिंग (Account Hijacking) यानी किसी का अकाउंट जबरन लेना, और इनसाइडर थ्रेट्स (Insider Threats) यानी संस्था के अंदर के व्यक्ति द्वारा किया गया साइबर नुकसान। इसके अलावा, नेटवर्क पर सीमित निगरानी, मैलवेयर, और सिस्टम की कमजोरियाँ इस खतरे को और बड़ा बना देती हैं।

सबसे बड़ा खतरा सिर्फ़ हमला नहीं है, बल्कि हमारी तैयारी की कमी है। जब नई तकनीकें बनती हैं, तो अक्सर उनकी सुरक्षा पर कम ध्यान दिया जाता है। कई बार डेवलपर्स जल्दबाज़ी में सिस्टम बना देते हैं, और बाद में सुरक्षा में कमजोरियाँ रह जाती हैं।

अब आवश्यकता है कि हम तकनीकी विकास के साथ-साथ सुरक्षा को भी उतनी ही अहमियत दें। हर नई तकनीक के साथ साइबर सुरक्षा को भी शुरू से ही शामिल किया जाए। क्योंकि जैसे-जैसे दुनिया स्मार्ट बन रही है, खतरों का तरीका भी और खतरनाक होता जा रहा है। जागरूकता, सही सुरक्षा उपाय और सतर्कता ही हमें इन खतरों से बचा सकते हैं।

♦ ♦ ♦

बच्चों की फुलवारी

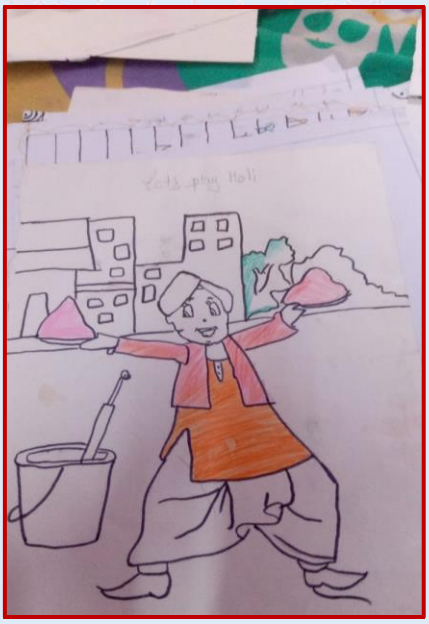

- अनन्या
कक्षा- सातवीं
सुपुत्री नवीन चन्द्र

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की दोहरी प्रकृति - एक सुरक्षा जोखिम और एक सुरक्षा समाधान

- तुषार पटनायक, वैज्ञानिक- एफ
- शिवांगी नंदा, परियोजना सहायक

जैसे-जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तेजी से विभिन्न उद्योगों के महत्वपूर्ण सिस्टम्स में शामिल हो रही है, साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में खतरों की एक नई लहर सामने आ रही है, जो पारंपरिक सुरक्षा तरीकों को चुनौती देती है। AI-आधारित सिस्टम्स पर निर्भरता तेजी से बढ़ रही है। AI और साइबर सुरक्षा का मेल एक जटिल दोहरी स्थिति बनाता है, जहाँ AI सिस्टम खुद हमलों का निशाना बनते हैं और साथ ही हमलावरों के लिए एक ताकतवर हथियार भी बन जाते हैं।

आज के साइबर खतरे AI की क्षमताओं की वजह से पहले से कहीं ज्यादा उन्नत हो गए हैं। डीपफेक तकनीक का इस्तेमाल बहुत असली दिखने वाले नकली वीडियो और ऑडियो बनाने के लिए किया जाता है, जिससे धोखाधड़ी, गलत जानकारी फैलाने या किसी की पहचान चुराने जैसी गंभीर समस्याएँ हो सकती हैं। फिशिंग तकनीकें अब व्यक्तिगत डेटा के आधार पर इतने भरोसेमंद नकली संदेश तैयार करती हैं कि लोग आसानी से धोखा खा जाते हैं। इन हमलों का पता लगाना मुश्किल होता है, जिससे ये पारंपरिक तरीकों की तुलना में अधिक असरदार बन जाते हैं।

AI सिस्टम एडवर्सरियल अटैक्स के प्रति भी कमजोर होते हैं, जहाँ इनपुट डेटा में किए गए बहुत छोटे और लगभग नज़र न आने वाले बदलाव AI को गलत निर्णय लेने पर मजबूर कर देते हैं। इसके अलावा, यदि AI को गलत या भटकाने वाले डेटा से ट्रेन किया जाए, तो वह कुछ खास स्थितियों में गलत तरीके से काम कर सकता है। AI तकनीकों से बनाए गए खतरनाक सॉफ़्टवेयर अपना व्यवहार खुद बदल सकते हैं, जिससे ये पारंपरिक सुरक्षा उपायों को चकमा देकर बहुत तेजी से सिस्टम्स में फैल सकते हैं।

कुछ और बढ़ते हुए खतरे ऐसे हमलों से जुड़े हैं, जो बड़े स्तर पर और तेज़ी से किए जाते हैं। डिस्ट्रिब्यूटेड डिनायल ऑफ सर्विस (DDoS) अटैक्स में, AI का इस्तेमाल नेटवर्क पर इतनी अधिक मात्रा में ट्रैफिक भेजने के लिए किया जाता है कि सिस्टम धीमा या बंद हो जाता है। यह ट्रैफिक लगातार बदलता रहता है, जिससे इसे पहचानना और रोकना मुश्किल हो जाता है। एक और गंभीर खतरा है मॉडल एक्सट्रैक्शन अटैक, जिसमें हमलावर AI सिस्टम के व्यवहार को लगातार देखते हैं और धीरे-धीरे उसकी संरचना को समझकर उसे कॉपी कर लेते हैं। इससे मॉडल की तकनीक और उसमें उपयोग किए गए संवेदनशील डेटा का खुलासा हो सकता है।

हालांकि ये खतरे गंभीर हैं, AI साइबर सुरक्षा को मजबूत करने के नए तरीके भी प्रदान करता है। स्मार्ट सिक्योरिटी सिस्टम्स बड़ी मात्रा में नेटवर्क गतिविधियों का विश्लेषण कर सकते हैं, असामान्य

पैटर्न को पहचान सकते हैं, नकली कंटेंट और धोखेबाज संदेशों को पकड़ सकते हैं, और ऐसे हमलों का पता लगा सकते हैं जो इंसान की नज़र से बच सकते हैं। ये सिस्टम तुरंत प्रतिक्रिया दे सकते हैं, हमलों को रोक सकते हैं और पारंपरिक तरीकों की तुलना में बहुत तेज़ी से अपनी सुरक्षा को अपडेट कर सकते हैं।

AI की यह दोहरी प्रकृति–एक तरफ खतरा और दूसरी तरफ समाधान–साइबर सुरक्षा के विकास का एक निर्णायक मोड़ है। जहाँ एक ओर AI नए और जटिल खतरे पैदा करता है जिन्हें हमलावर जल्दी से अपनाते हैं, वहीं यह ऐसे सुरक्षा समाधान भी देता है जो तेज़, सटीक और अनुकूलनशील हैं। भविष्य की डिजिटल सुरक्षा इस बात पर निर्भर करेगी कि संगठन इस संतुलन को कितनी कुशलता से संभालते हैं।

♦ ♦ ♦

बच्चों की फुलवारी

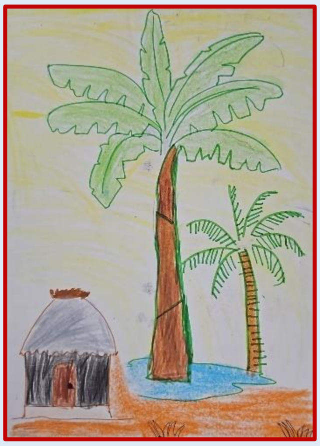

- निवान गर्ग
कक्षा- तीसरी
सुपुत्र हिमानी गर्ग

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) का हमारे दैनिक जीवन में योगदान

- नितिन कुमार वार्ष्णेय
वैज्ञानिक-ई

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस - AI) द्वारा हमारे दैनिक कार्यों में क्रांति

आज के डिजिटल युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) ने हमारे जीवन के कई पहलुओं में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। पहले जहां मशीनें केवल निर्धारित कार्यों को ही करने में सक्षम थीं, अब AI इंसान की तरह सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता हासिल कर चुका है। इस तकनीक का प्रभाव स्वास्थ्य देखभाल, व्यापार, परिवहन, और रोज़मर्रा की गतिविधियों जैसे हर क्षेत्र में महसूस किया जा रहा है।

स्मार्ट असिस्टेंट्स और व्यक्तिगत जीवन में सुधार

AI आधारित स्मार्ट असिस्टेंट्स, जैसे कि गूगल असिस्टेंट, एलेक्सा, और सिरी, हमारे रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। ये असिस्टेंट्स न केवल सूचनाएं प्रदान करते हैं, बल्कि हमारी आवाज़ को पहचान कर विभिन्न कार्य करते हैं, जैसे रिमाइंडर सेट करना, म्यूजिक प्ले करना, और स्मार्ट होम डिवाइस को नियंत्रित करना। यह हमारे समय की बचत करने और जीवन को सरल बनाने में सहायता करते हैं।

स्वचालित वाहन और परिवहन

AI का एक महत्वपूर्ण उपयोग स्वचालित वाहनों में देखा जा रहा है। कई कंपनियां अब बिना ड्राइवर के चलने वाली कारों पर काम कर रही हैं, जो सड़क की स्थिति, यातायात, और दुर्घटनाओं से बचने के लिए वास्तविक समय में निर्णय लेती हैं। इसके साथ ही, नेविगेशन ऐप्स और राइड-शेयरिंग सेवाएं AI का उपयोग करके यात्रा को सुविधाजनक और सुरक्षित बना रही हैं।

स्वास्थ्य देखभाल में सुधार

AI का सबसे बड़ा योगदान स्वास्थ्य क्षेत्र में हो रहा है। AI आधारित उपकरण डॉक्टरों को मरीजों का सही निदान करने में मदद करते हैं, जैसे कि मेडिकल इमेजिंग तकनीक से कैंसर जैसी बीमारियों का

जल्दी पता लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, AI चैटबॉट्स मरीजों को प्राथमिक जानकारी और परामर्श देते हैं, जिससे अस्पतालों में भीड़ कम होती है। यह तकनीक निदान, उपचार, और दवाओं की खोज में तेजी ला रही है।

स्मार्ट होम और व्यक्तिगत जीवन

AI की मदद से, स्मार्ट होम डिवाइस जैसे स्मार्ट थर्मोस्टैट्स, स्मार्ट लाइट्स, और स्मार्ट सिक्योरिटी कैमरे घर की सुरक्षा और आराम को बढ़ा रहे हैं। ये उपकरण हमारी आदतों को समझकर अपने आप कार्यों को समायोजित करते हैं, जिससे ऊर्जा की बचत होती है और जीवन सरल बनता है। रोबोट वैक्युम क्लीनर्स जैसे गैजेट्स सफाई के काम को और भी सुविधाजनक बना रहे हैं।

वित्तीय सेवाएं और बैंकिंग

AI का उपयोग अब वित्तीय सेवाओं में भी बढ़ रहा है। बैंकिंग क्षेत्र में AI द्वारा क्रेडिट स्कोर का आंकलन, धोखाधड़ी का पता लगाना और स्वचालित निवेश सलाह जैसी सेवाएं दी जा रही हैं। AI ने न केवल लेन-देन को तेज और सुरक्षित बनाया है, बल्कि यह ग्राहकों को व्यक्तिगत वित्तीय योजनाओं के लिए सटीक परामर्श भी देता है।

शिक्षा और ऑनलाइन लर्निंग

AI शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार ला रहा है। AI आधारित टूल्स छात्रों के अध्ययन पैटर्न को समझते हैं और व्यक्तिगत शिक्षा अनुभव प्रदान करते हैं। एडटेक प्लेटफॉर्म्स स्वचालित ग्रेडिंग, कस्टमाइज्ड लर्निंग पैथ्स, और ऑनलाइन कोचिंग के माध्यम से छात्रों को बेहतर तरीके से सीखने में सहायता कर रहे हैं।

सोशल मीडिया और कस्टमर सर्विस

AI सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर व्यक्तिगत कंटेंट रेकमेंडेशन प्रदान करता है, जबकि कस्टमर सर्विस में AI चैटबॉट्स और वॉयस असिस्टेंट्स के रूप में मदद करता है, जो 24/7 ग्राहकों की सहायता करते हैं। AI के माध्यम से ग्राहक सेवा में सुधार हुआ है, और उपभोक्ताओं को तत्काल समाधान मिल रहा है।

ऑनलाइन सेवाओं में सुधार

AI ने ऑनलाइन शॉपिंग और एंटरटेनमेंट को पूरी तरह से बदल दिया है। शॉपिंग वेबसाइट्स AI आधारित रेकमेंडेशन सिस्टम के द्वारा हमें हमारी पसंद के उत्पाद सुझाती हैं। इसी तरह, वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स AI का उपयोग करके हमारे लिए मनोरंजक सामग्री का चयन करते हैं। AI द्वारा संचालित चैटबॉट्स खरीदारी में मदद करते हैं और ग्राहक पूछताछ का जवाब देते हैं।

भविष्य की संभावनाएं

AI के विकास ने हमारे जीवन को न केवल सरल और सुविधाजनक बनाया है, बल्कि नए रोजगार के अवसर भी उत्पन्न किए हैं। भविष्य में, यह संभावना है कि हम और अधिक स्मार्ट और स्वचालित प्रणालियाँ देखेंगे, जो हमारे दैनिक कार्यों को और अधिक आसान और कुशल बनाएंगी। हालांकि, इसके साथ-साथ हमें डेटा गोपनीयता, रोजगार पर प्रभाव, और AI के दुरुपयोग जैसी चुनौतियों का भी सामना करना होगा।

निष्कर्ष

संक्षेप में, AI हमारे जीवन को सुविधाजनक और स्मार्ट बना रहा है। यह तकनीक स्वास्थ्य सेवाओं, स्मार्ट होम, वित्तीय सेवाओं, और शिक्षा जैसे कई क्षेत्रों में क्रांति ला रही है। हालांकि, AI के बढ़ते प्रभाव के साथ हमें इस तकनीक का उपयोग जिम्मेदारी से करना चाहिए, ताकि हम इसके सकारात्मक प्रभावों का पूर्ण लाभ उठा सकें। आने वाले समय में, AI हमारे जीवन को और भी अधिक स्मार्ट और सुविधा से भरा हुआ बना देगा।

♦ ♦ ♦

> अपने देश की आजादी की रक्षा करना केवल सैनिकों का काम नहीं, बल्कि ये पूरे देश का कर्तव्य है।
>
> – लाल बहादुर शास्त्री

स्वास्थ्य सेवा में एआई (AI): भारत के लिए चुनौतियां और अवसर

- अनंत कौशिक
वरिष्ठ परियोजना अभियंता

भारत सरकार ने एक साहसिक घोषणा करते हुए अगले पांच वर्षों के भीतर हर भारतीय को "मुफ्त AI-संचालित प्राथमिक देखभाल चिकित्सक" प्रदान करने की योजना का खुलासा किया है। यह महत्वाकांक्षी लक्ष्य भारत के स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली की क्षमता, स्थिरता और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) को इस पैमाने पर लागू करने की तैयारी के बारे में व्यापक बहस का कारण बना है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) से भारतीय स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) ने दुनिया भर के कई क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है, और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में इसके संभावित योगदान को लेकर उम्मीदें आशाएँ बहुत बढ़ गई हैं। भारत, एक विशाल और विविधतापूर्ण देश है, जहां स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ हैं। जनसंख्या की अधिकता, सीमित संसाधन, और ग्रामीण इलाकों में चिकित्सा सुविधाओं की कमी जैसी समस्याएँ भारतीय स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के सामने हैं। ऐसे में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तकनीक भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है।

सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ

भारत में अधिकांश लोग स्वास्थ्य सेवाओं के लिए गांवों से शहरों में जाते हैं, लेकिन यहाँ तक पहुँचने के लिए बहुत सारी समस्याएँ होती हैं। AI की मदद से टेलीमेडिसिन और दूरस्थ चिकित्सा सेवाएँ अधिक सुलभ हो सकती हैं। AI आधारित प्लेटफार्मों के माध्यम से डॉक्टरों से सलाह लेना अब आसान हो सकता है, चाहे वे दूरस्थ क्षेत्रों में ही क्यों न हों। इसके अलावा, AI हेल्थ चेकअप्स और निदान के लिए उपयोग किए जा रहे उपकरण सस्ते और अधिक प्रभावी हो सकते हैं, जिससे देशभर में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता बढ़ सकती है।

निदान में सुधार

AI द्वारा संचालित मशीन लर्निंग और डेटा विश्लेषण के उपकरणों का उपयोग करके निदान में अधिक सटीकता हासिल की जा सकती है। डॉक्टरों द्वारा एक बेहतर और तेज़ निदान देने में AI का अहम योगदान हो सकता है। AI तकनीक, जैसे कि इमेज प्रोसेसिंग को मेडिकल इमेजेज (जैसे X-ray, CT scan, MRI आदि) का विश्लेषण करने में इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे गलत निदान की संभावना घटती है और रोगों का समय पर पता चल सकता है। उदाहरण के लिए, कैंसर जैसी जटिल बीमारियों का जल्दी निदान AI की मदद से किया जा सकता है, जिससे उपचार की प्रक्रिया जल्दी शुरू हो सकती है और मरीज की जीवन रक्षा की संभावना बढ़ जाती है।

स्मार्ट हेल्थ रिकॉर्ड्स

आजकल के मेडिकल रिकॉर्ड्स को डिजिटल रूप में रखा जा सकता है और AI का उपयोग करके इन रिकॉर्ड्स का अधिक प्रभावी ढंग से विश्लेषण किया जा सकता है। AI के माध्यम से, एक मरीज के स्वास्थ्य इतिहास को तुरंत उपलब्ध कराया जा सकता है, जिससे डॉक्टर को त्वरित निर्णय लेने में मदद मिलती है। साथ ही, यह व्यक्तिगत उपचार योजना बनाने में भी मददगार साबित हो सकता है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति की दीर्घकालिक बीमारियों, जीवनशैली, और जेनेटिक जानकारी के आधार पर AI व्यक्तिगत उपचार संबंधी सुझाव प्रदान कर सकता है।

स्वास्थ्य सेवा में मानव संसाधनों की कमी को दूर करना

भारत में डॉक्टरों, नर्सों और अन्य स्वास्थ्य सेवा कर्मचारियों की बहुत कमी है। AI तकनीक इस कमी को दूर करने में मदद कर सकती है। AI आधारित चैटबोट्स और वर्चुअल असिस्टेंट्स का इस्तेमाल करके रोगियों से प्रारंभिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है और प्राथमिक उपचार की सलाह दी जा सकती है। इसके अलावा, AI उपकरणों का इस्तेमाल रूटीन चेकअप और निगरानी कार्यों के लिए किया जा सकता है, जिससे डॉक्टरों को महत्वपूर्ण मामलों पर ध्यान केंद्रित करने का समय मिलेगा।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में शोध और विकास

AI के माध्यम से बड़े पैमाने पर डेटा का विश्लेषण संभव है, जो नए उपचार विधियों और दवाइयों के शोध में मदद कर सकता है। AI ने चिकित्सा अनुसंधान में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जैसे कि नई दवाओं के निर्माण, जीनोम अध्ययन, और अधिक सटीक चिकित्सा प्रक्रियाओं के विकास में। भारत में AI का इस्तेमाल नई दवाओं और उपचार विधियों को जल्दी और सस्ते तरीके से विकसित करने में किया जा सकता है, जो देश के स्वास्थ्य के स्तर को बेहतर बना सकता है। इसके अलावा, AI से उत्पन्न होने वाले मॉडल और प्रेडिक्शंस भारतीय स्वास्थ्य सेवाओं के लिए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में वृद्धि

AI आधारित स्वास्थ्य एप्लिकेशन्स और प्लेटफार्मों के माध्यम से लोगों को उनके स्वास्थ्य के बारे में लगातार जानकारी और सुझाव मिल सकते हैं। उदाहरण के लिए, फिटनेस ट्रैकर्स, आहार प्रबंधन ऐप्स, और मानसिक स्वास्थ्य के लिए AI आधारित ऐप्स व्यक्तिगत स्वास्थ्य को ट्रैक कर सकते हैं और स्वास्थ्य संबंधी चेतावनियाँ दे सकते हैं। इससे लोग स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हो सकते हैं और पूर्व-निर्धारित बीमारियों से बचने के उपाय कर सकते हैं।

महामारी और आपातकालीन स्थितियों में प्रभावी प्रतिक्रिया

AI का उपयोग महामारी जैसे कोविड-19 की स्थिति में प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। AI द्वारा संचालित मॉडल और प्रेडिक्शन टूल्स का इस्तेमाल करके महामारी के फैलने के पैटर्न का पूर्वानुमान

किया जा सकता है, जिससे सरकारों और स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर तैयारी करने का अवसर मिलता है। इसके अलावा, AI के माध्यम से अस्पतालों में बिस्तरों, दवाओं और चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता पर निगरानी रखी जा सकती है, जिससे महामारी के दौरान अधिक कुशलता से सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं।

डॉक्टरों और स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए सहायक उपकरण

AI तकनीक डॉक्टरों को उनके कार्य में सहायक साबित हो सकती है। उदाहरण के लिए, स्वचालित रेडियोलॉजी सिस्टम और सर्जिकल रोबोट्स डॉक्टरों के कार्य को आसान बना सकते हैं और चिकित्सा प्रक्रिया को अधिक सटीक बना सकते हैं। AI की मदद से डॉक्टरों को रोगियों के इलाज में अधिक सही दिशा मिल सकती है, जिससे उपचार की सफलता दर बढ़ सकती है।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) भारतीय स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में क्रांति ला सकता है। यह केवल चिकित्सा प्रक्रियाओं को तेज और सटीक बनाने का काम नहीं करेगा, बल्कि यह स्वास्थ्य सेवाओं को सस्ती, सुलभ और अधिक प्रभावी बनाएगा। AI के जरिए भारत में स्वास्थ्य के स्तर को सुधारने और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का शीघ्र समाधान करने में मदद मिल सकती है। इस तकनीक के माध्यम से हम एक बेहतर और समावेशी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की ओर बढ़ सकते हैं, जो सभी नागरिकों के लिए सुलभ और प्रभावी हो। इस प्रकार, भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में AI का योगदान न केवल तकनीकी दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभ पहुँचाने में भी सक्षम है।

♦ ♦ ♦

अगर आप तेजी से चलना चाहते है तो अकेले चलिए,
लेकिन अगर आप दूर तक चलना चाहते है तो साथ मिलकर चलिए।

\- रतन टाटा

सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन डेवलपमेंट जीवन चक्र में रोबोटिक्स का योगदान

- दीपशिखा वन्दना
वरिष्ठ परियोजना अभियंता

सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन डेवलपमेंट जीवन चक्र (Software Application Development Life Cycle) एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन्स का निर्माण, परीक्षण और कार्यान्वयन किया जाता है। इस जीवन चक्र में कई चरण होते हैं, जैसे योजना बनाना, डिज़ाइन, कोडिंग, परीक्षण और रखरखाव। वर्तमान समय में, रोबोटिक्स और स्वचालन ने इस जीवन चक्र को अधिक सटीक, त्वरित और प्रभावी बना दिया है। रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग इन प्रक्रियाओं को स्वचालित करने, त्रुटियों को कम करने और समय बचाने में मदद करता है।

सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन डेवलपमेंट जीवन चक्र के प्रमुख चरण:

सॉफ़्टवेयर डेवलपमेंट जीवन चक्र में निम्नलिखित प्रमुख चरण होते हैं:

1. **योजना बनाना (Planning):**
   इस चरण में, सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन के उद्देश्य, आवश्यकताएँ और संसाधन तय किए जाते हैं। यह चरण इस बात को निर्धारित करता है कि एप्लिकेशन को किस प्रकार के फीचर्स और कार्यों की आवश्यकता है।

2. **डिज़ाइन (Design):**
   इस चरण में सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन की संरचना तैयार की जाती है। इसमें सिस्टम आर्किटेक्चर, उपयोगकर्ता इंटरफेस (UI) और अन्य आवश्यक तत्वों का डिज़ाइन किया जाता है।

3. **कोडिंग (Coding):**
   इस चरण में, सॉफ़्टवेयर को वास्तविक कोड के रूप में लिखा जाता है। विभिन्न प्रोग्रामिंग भाषाओं का उपयोग करके सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन को विकसित किया जाता है।

4. **परीक्षण (Testing):**
   इस चरण में, सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन का परीक्षण किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि एप्लिकेशन बिना किसी त्रुटि के कार्य कर रहा है। यह चरण एप्लिकेशन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

5. **रखरखाव (Maintenance):**
   इस चरण में, सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन के बाद की समस्याओं का समाधान और एप्लिकेशन के नए संस्करणों का विकास किया जाता है। समय-समय पर सॉफ़्टवेयर को अपडेट और सुधार किया जाता है।

सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन डेवलपमेंट जीवन चक्र में रोबोटिक्स का योगदान:

रोबोटिक्स और स्वचालन ने सॉफ़्टवेयर डेवलपमेंट जीवन चक्र को सरल और अधिक प्रभावी बना दिया है। आइए देखें कि रोबोटिक्स का उपयोग विभिन्न चरणों में कैसे किया जा सकता है:

1) **योजना और डिज़ाइन में रोबोटिक्स का योगदान:**
   रोबोटिक्स और AI आधारित टूल्स का उपयोग सॉफ़्टवेयर डिज़ाइन को स्वचालित करने में किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप, रोबोटिक डिज़ाइन टूल्स एप्लिकेशन के यूज़र इंटरफेस (UI) और सिस्टम आर्किटेक्चर को स्वचालित रूप से तैयार करने में मदद कर सकते हैं। यह समय बचाता है और डिज़ाइन की त्रुटियों को कम करता है।

2) **कोडिंग में रोबोटिक्स का योगदान:**
   कोडिंग के दौरान, रोबोटिक्स और स्वचालन टूल्स का उपयोग कोड जनरेशन और रिपिटिटिव कार्यों को स्वचालित करने के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, रोबोटिक प्रक्रिया स्वचालन (RPA) का उपयोग डेवलपर्स द्वारा कोडिंग के लिए उपयोग किए जाने वाले सामान्य कार्यों को स्वचालित कर सकता है, जैसे कोड की जांच, संस्करण नियंत्रण, और तैनाती। इससे विकास की गति में वृद्धि होती है और त्रुटियाँ कम होती हैं।

3) **परीक्षण (Testing) में रोबोटिक्स का योगदान:**
   सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन्स के परीक्षण में भी रोबोटिक्स का महत्वपूर्ण योगदान है। रोबोटिक्स टेस्टिंग टूल्स स्वचालित परीक्षण करने के लिए उपयोग किए जा सकते हैं, जो बग्स और त्रुटियों की पहचान करने में मदद करते हैं। इससे परीक्षण की प्रक्रिया तेज़ होती है और सॉफ़्टवेयर की गुणवत्ता में सुधार होता है।

4) **रखरखाव (Maintenance) में रोबोटिक्स का योगदान:**
   सॉफ़्टवेयर के रखरखाव में भी रोबोटिक्स का महत्वपूर्ण योगदान है। रोबोटिक टूल्स सॉफ़्टवेयर के नए संस्करणों को स्वचालित रूप से अपडेट कर सकते हैं और किसी भी नई समस्या का समाधान कर सकते हैं। इसके अलावा, रोबोटिक्स टूल्स नए फीचर्स और पैचेस को तेजी से लागू कर सकते हैं, जिससे एप्लिकेशन का रखरखाव और सुधार करना सरल हो जाता है।

निष्कर्ष:

सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन डेवलपमेंट जीवन चक्र में रोबोटिक्स और स्वचालन का उपयोग समय की बचत, त्रुटियों को कम करने और कार्यों को अधिक कुशल बनाने में सहायक है। आने वाले समय में, रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग और भी बढ़ेगा, जिससे सॉफ़्टवेयर विकास की प्रक्रिया और भी सटीक और तेज़ हो जाएगी। यह तकनीकें न केवल सॉफ़्टवेयर विकास को स्मार्ट बनाती हैं, बल्कि हमें अपने कार्यों को बेहतर ढंग से और कम समय में करने की क्षमता भी प्रदान करती हैं।

♦ ♦ ♦

सोशल मीडिया का कंटेंट और डिजिटल निगरानी

- विवेक आर्य, परियोजना अभियंता
- आशीष गौतम, परियोजना अभियंता

हाल के वर्षों में, भारत विश्व के सबसे बड़ी डिजिटल समुदायों में से एक बनकर उभरा है। वर्ष 2025 तक, देश में 600 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, जिनमें से 491 मिलियन से अधिक सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे फ़ेसबुक, ट्विटर (एक्स), यूट्यूब, इंस्टाग्राम, थ्रेड्स और विभिन्न न्यूज़ व कंटेंट-शेयरिंग ऐप्स पर सक्रिय हैं। व्हाट्सएप और टेलीग्राम जैसे प्लेटफ़ॉर्म भी तेज़ी से कंटेंट प्रसार के केंद्र बन चुके हैं। हर सेकंड में हज़ारों पोस्ट, वीडियो, टिप्पणियाँ और संदेश साझा किए जाते हैं, जिससे हर दिन डिजिटल चैनलों पर टेराबाइट्स में डेटा उत्पन्न हो रहा है।

दर असल सोशल मीडिया उपयोग में उछाल ने सार्वजनिक विमर्श को काफी हद तक बदल दिया है। इसने कंटेंट निर्माण को लोकतांत्रिक बनाया है, हाशिए पर खड़े समुदायों को आवाज़ दी है और नागरिक सहभागिता को सशक्त किया है। हालांकि, इस डिजिटल विस्फोट ने कई जटिल चुनौतियाँ भी सामने रखी हैं: झूठी जानकारी (misinformation), घृणा भाषण, अनैतिक सामग्री, बच्चों के यौन शोषण से जुड़ी सामग्री (CSAM), और राष्ट्रीय सुरक्षा या सांस्कृतिक सौहार्द्र को खतरे में डालने वाली पोस्ट्स। इस तरह की सामग्री की व्यापकता और प्रसार की गति तथ्यों को विकृत करने, हिंसा को भड़काने, नैतिक मूल्यों को कमजोर करने और समाज के बुनियादी सिद्धांतों को खतरे में डाल सकती है।

इस अनियंत्रित डिजिटल सामग्री के दूरगामी प्रभावों को समझते हुए, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने सोशल मीडिया पर प्रसारित होने वाली सामग्री की निगरानी और नियंत्रण हेतु सक्रिय कदम उठाए हैं। इसका उद्देश्य अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करना नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और नैतिक अखंडता के बीच संतुलन बनाना है। MeitY की दूरदर्शिता एक ऐसे तकनीकी रूप से सशक्त पारिस्थितिकी तंत्र की कल्पना करती है जो भाषा, संस्कृति और संदर्भ की बारीकियों को समझते हुए दुर्भावनापूर्ण सामग्री का सक्रिय रूप से पता लगा सके–चाहे वह झूठी जानकारी हो, गैरकानूनी गतिविधियाँ हों, बाल शोषण से जुड़ी सामग्री हो या साइबर खतरे।

इस दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदलने के लिए, प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक) ने एक अभिनव प्लेटफ़ॉर्म विकसित किया है जो सोशल मीडिया की तेज़ी से बदलती दुनिया पर नज़र रखने में सक्षम है। यह AI-सक्षम सोशल मीडिया इंटेलिजेंस प्लेटफार्म विशेष रूप से हानिकारक, भ्रामक या गैरकानूनी सामग्री की पहचान करने में सहायता के लिए तैयार किया गया है। यह प्लेटफ़ॉर्म फ़ेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, थ्रेड्स, रेडिट सहित 20 से अधिक ऑनलाइन स्रोतों की सामग्री को ट्रैक और विश्लेषित

कर सकता है। यह कई भारतीय भाषाओं और क्षेत्रीय बोलियों को समझने में सक्षम है, जो इसे भारत की विविध जनसंख्या के लिए उपयुक्त बनाता है।

यह उपकरण स्वचालित रूप से पोस्ट्स (Posts) को स्कैन करता है, उन्हें वर्गीकृत करता है और संभावित समस्याओं जैसे झूठी जानकारी, खतरों या अनैतिक सामग्री के बारे में अलर्ट देता है। यह डेटा को सरल डैशबोर्ड्स और दृश्यों में प्रस्तुत करता है, जिससे निर्णय-निर्माताओं को तेज़ी से और प्रभावी ढंग से कार्य करने में मदद मिलती है। यह सोशल मीडिया ट्रेंड्स, न्यूज़ जाँच या ऑनलाइन भावना (sentiment) के लिए दैनिक या अनुकूलित रिपोर्ट भी उत्पन्न कर सकता है, जिससे प्राधिकरण सूचित निर्णय ले सकें।
रीयल-टाइम ट्रैकिंग, स्मार्ट कंटेंट डिटेक्शन और आसानी से समझ में आने वाली इनसाइट्स के साथ, सी-डैक का यह प्लेटफ़ॉर्म हमारे राष्ट्र के मूल्यों, सुरक्षा और सौहार्द्र की रक्षा में लगे लोगों के लिए एक विश्वसनीय डिजिटल साथी है।

डिजिटल निगरानी के नैतिक पहलुओं को सी-डैक के निर्माताओं ने गंभीरता से लिया है। यह समाधान पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और समावेशिता की नींव पर आधारित है। यह संवैधानिक सिद्धांतों और लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप कार्य करता है, और हस्तक्षेप केवल आवश्यक स्थानों पर ही किया जाता है। जैसे-जैसे भारत डिजिटल युग में आगे बढ़ रहा है, सी-डैक के इस सोशल मीडिया इंटेलिजेंस प्लेटफ़ॉर्म जैसे उपकरण यह दिखाते हैं कि कैसे प्रौद्योगिकी को डिजिटल शासन और सामाजिक कल्याण के लिए सशक्त रूप से उपयोग किया जा सकता है। MeitY की दूरदर्शिता और सी-डैक की तकनीकी उत्कृष्टता से प्रेरित यह पहल उन सभी राष्ट्रों के लिए मार्गदर्शक है जो गलत जानकारी और नैतिक ह्रास की दोहरी चुनौती से जूझ रहे हैं। जिम्मेदार AI और डेटा इंटेलिजेंस के माध्यम से सी-डैक न केवल डिजिटल संवाद को समझ रहा है, बल्कि भारत के सुरक्षित और नैतिक भविष्य की कहानी भी गढ़ रहा है।

♦ ♦ ♦

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

- देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

UI/UX डिज़ाइन: अनुभवों की भाषा, भविष्य की दृष्टि

- डोला मनुदीप राव
परियोजना अभियंता

जब पहली बार मैंने सी-डैक, नोएडा के दरवाज़े पर क़दम रखा, तो लगा जैसे तकनीक और संवेदना का संगम सजीव हो उठा। हर स्क्रीन, हर सिस्टम, हर समाधान - जैसे संवाद कर रहे हों, बिना एक शब्द बोले। यही तो है UI/UX डिज़ाइन - अनुभवों की वो अनकही भाषा, जो उपयोगकर्ता के मन को छू जाए, और संगठन की पहचान बन जाए।

तकनीकी उत्कृष्टता तब सार्थक होती है, जब उसे समझना सरल हो, अपनाना सहज हो। UI यानी यूज़र इंटरफेस – जो आंखों को दिखे, UX यानी यूज़र एक्सपीरियंस – जो दिल को महसूस हो। यह सिर्फ रंगों और बटन की बात नहीं है, यह उस अनुभव की बात है, जिससे कोई उपयोगकर्ता खुद को जुड़ा हुआ महसूस करे। सी-डैक में, हर डिज़ाइन के पीछे होती है एक सोच, जो उपयोगकर्ता की यात्रा को सरल, सुंदर और सुलभ बनाए। हम हर दिन UI/UX से घिरे रहते हैं - मोबाइल ऐप्स, वेबसाइट्स, डिजिटल सेवाएं, यह सब हमारे निर्णयों को आकार देते हैं। एक बेहतरीन डिज़ाइन न केवल समय बचाता है, बल्कि भरोसा भी पैदा करता है। सी-डैक की परियोजनाओं में, UI/UX डिज़ाइन केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व है। चाहे वो स्वास्थ्य से जुड़े समाधान हों, या साइबर सुरक्षा, या शिक्षा के डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म - हर अनुभव को मानवीय और अर्थपूर्ण बनाना ही लक्ष्य है।

सी-डैक की एक विशेषता है - भविष्य की समस्याओं को आज के समाधान में ढालने की क्षमता। और यही क्षमता UI/UX डिज़ाइन में झलकती है - जब हम सोचते हैं कि आने वाला समय क्या माँग करेगा, और हम ऐसा इंटरफ़ेस गढ़ते हैं, जो न केवल आज की, बल्कि कल की भी ज़रूरत को पूरा करे। विज़ुअल हियरार्की से लेकर नेविगेशन फ़्लो तक, हर छोटा निर्णय, बड़ी सोच का हिस्सा होता है। यह डिज़ाइन नहीं, दर्शन है - जहाँ उपयोगकर्ता की मुस्कान, हमारी सबसे बड़ी जीत होती है। जहाँ विचारों को जीवन मिलता है, जहाँ समस्याएँ केवल चुनौतियाँ नहीं, बल्कि नए समाधान की शुरुआत होती हैं। मेरे कई डिज़ाइन प्रोजेक्ट्स में, हमने नागरिकों के लिए पोर्टल्स बनाए, जहाँ सरलता और स्पष्टता ने जटिल तकनीकों को जनमानस के लिए सुलभ बना दिया। वो क्षण जब किसी वरिष्ठ ने कहा – "*यह डिज़ाइन तो बोलता है...*"

वहीं मुझे UI/UX की असली शक्ति का अनुभव हुआ। एक प्रभावशाली UI/UX डिज़ाइन न केवल सी-डैक CDAC की परियोजनाओं को सफल बनाता है, बल्कि संगठन की विश्वसनीयता और पहचान को भी मज़बूत करता है। जब देश और विदेश से उपयोगकर्ता हमारे डिज़ाइनों पर भरोसा करते हैं, तो यह केवल कोड की जीत नहीं होती – यह एक संस्कृति की जीत होती है, जो उपयोगकर्ता को केंद्र में रखती है।

UI/UX डिज़ाइन एक दर्पण है – जो न केवल तकनीक को दर्शाता है, बल्कि मानवता की गहराई भी। सी-डैक जैसी संस्था, जहाँ नवाचार और अनुभव का संगम होता है, UI/UX डिज़ाइन एक ऐसी कविता है, जो हर उपयोगकर्ता के मन में उतरती है।

♦ ♦ ♦

संसद भाषिणी पहल: AI के साथ भाषा और शासन का मेल

- सोमेश
सॉफ्टवेयर डेवेलपर

भारत की संसद में भाषा की विविधता को ध्यान में रखते हुए, लोकसभा सचिवालय और इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने मिलकर 'संसद भाषिनी' पहल की शुरुआत की है। यह AI-संचालित डिजिटल प्लेटफॉर्म संसद की कार्यवाही को अधिक सुलभ और बहुभाषी बनाने में मदद करेगा, जिससे भाषा की बाधाएँ दूर होंगी और आम जनता को बेहतर जानकारी मिलेगी।

नए युग की शुरुआत: बहुभाषी संसद

यह पहल डिजिटल शासन में एक बड़ा कदम है, जो कई भारतीय भाषाओं को सपोर्ट करने के लिए डिज़ाइन की गई है। इसमें उन्नत AI तकनीकों का उपयोग किया गया है, जो संसद की कार्यवाही का वास्तविक समय में अनुवाद, प्रतिलेखन और डेटा एक्सेस की सुविधा प्रदान करता है। यह सांसदों, शोधकर्ताओं और आम नागरिकों को विधायी प्रक्रियाओं से जुड़ने में मदद करता है।

मुख्य विशेषताएँ

1. AI-संचालित रियल-टाइम अनुवाद

इस प्लेटफॉर्म का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह संसद की बहसों, एजेंडा फाइलों और समिति की रिपोर्टों को तुरंत कई भाषाओं में अनुवाद कर सकता है। इससे सांसदों और आम नागरिकों को अपनी पसंदीदा भाषा में जानकारी प्राप्त करना आसान होगा।

2. भाषण-से-पाठ रूपांतरण

यह तकनीक संसद में बोले गए शब्दों को स्वचालित रूप से लिखित रूप में बदल देती है। इसमें शोर-रहित रिकॉर्डिंग और संसद की भाषा के अनुरूप शब्दावली का उपयोग किया जाता है, जिससे सटीकता बनी रहती है। यह भविष्य के संदर्भ और विश्लेषण के लिए भी मददगार साबित होगा।

3. स्वचालित सारांश सुविधा

संसद की लंबी बहसों को समझना कई बार चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इस पहल में एक विशेष AI-सक्षम टूल शामिल किया गया है, जो इन बहसों का संक्षिप्त सारांश तैयार करता है। इससे सांसद और नीति-निर्माता तेजी से महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझ सकेंगे और निर्णय लेने की प्रक्रिया को बेहतर बना सकेंगे।

4. AI-चैटबॉट सपोर्ट

प्लेटफॉर्म में एक इंटेलिजेंट चैटबॉट भी शामिल है, जो संसद की प्रक्रियाओं, नियमों और दस्तावेज़ों से जुड़ी त्वरित जानकारी प्रदान करता है। इससे सांसदों और अधिकारियों को आवश्यक जानकारी प्राप्त करने में आसानी होगी।

5. भाषिणी प्लेटफॉर्म से एकीकरण

यह पहल MeitY के भाषिणी प्लेटफॉर्म के साथ एकीकृत है, जो AI-आधारित भाषा प्रसंस्करण में विशेषज्ञता रखता है। इससे अनुवाद और डेटा प्रोसेसिंग अत्याधुनिक और भारतीय भाषाओं के अनुरूप होगा।

समावेशिता और सार्वजनिक जुड़ाव

संसद भाषिणी पहल केवल एक तकनीकी सुधार नहीं, बल्कि अधिक समावेशी लोकतंत्र की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह सुनिश्चित करता है कि हर नागरिक, चाहे वह किसी भी भाषा की जानकारी रखता हो, संसद की कार्यवाही को समझ सके। इस पहल से जनभागीदारी बढ़ेगी और लोकतंत्र अधिक पारदर्शी व सहभागितापूर्ण बनेगा।

भविष्य की दिशा

जैसे-जैसे यह पहल आगे बढ़ेगी, यह AI और लोक प्रशासन के एकीकरण में एक नया मानदंड स्थापित करेगी। रियल-टाइम अनुवाद, बेहतर डेटा एक्सेस और बहुभाषी सपोर्ट के माध्यम से, यह पहल संसद की कार्यप्रणाली को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाएगी। लोकसभा सचिवालय और MeitY का यह संयुक्त प्रयास डिजिटल नवाचारों का उपयोग करके शासन को अधिक समावेशी और कुशल बनाने की सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस पहल के सफल क्रियान्वयन के साथ, भारत एक ऐसे भविष्य की ओर बढ़ रहा है, जहाँ तकनीक की मदद से शासन अधिक पारदर्शी, सूचनात्मक और नागरिकों के लिए सहज होगा।

♦ ♦ ♦

आप जिस तरह बोलते है, बातचीत करते है, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

- महावीर प्रसाद द्विवेदी

सॉफ्टवेयर परीक्षण में ऑटोमेशन की भूमिका – एक व्यावहारिक अनुभव

- भावेश गुप्ता
परियोजना अभियंता

आज के तेज़ी से बदलते तकनीकी परिवेश में, सॉफ्टवेयर की गुणवत्ता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। परंपरागत मैनुअल परीक्षण विधियाँ समय-लेवा, दोहराव-युक्त और मानवीय त्रुटियों से ग्रसित हो सकती हैं। ऐसे में सॉफ्टवेयर परीक्षण में ऑटोमेशन एक क्रांतिकारी कदम है।

हमने PMS (Project Management System) जैसे एप्लिकेशन के लिए Selenium, TestNG और Extent Report जैसे टूल्स का प्रयोग करके एक पूरा ऑटोमेशन फ्रेमवर्क तैयार किया है, जिससे संपूर्ण Regression Testing प्रक्रिया को सरल, त्वरित और विश्वसनीय बनाया जा सका है।

उपयोग किए गए तकनीकी उपकरण:

Selenium WebDriver - ब्राउज़र ऑटोमेशन के लिए।
TestNG - स्क्रिप्ट ऑर्गनाइजेशन, डाटा ड्रिवन टेस्टिंग और रिपोर्टिंग के लिए।
ExtentReports - प्रत्येक परीक्षण चरण का विस्तृत रिपोर्ट लॉग जनरेट करने हेतु।

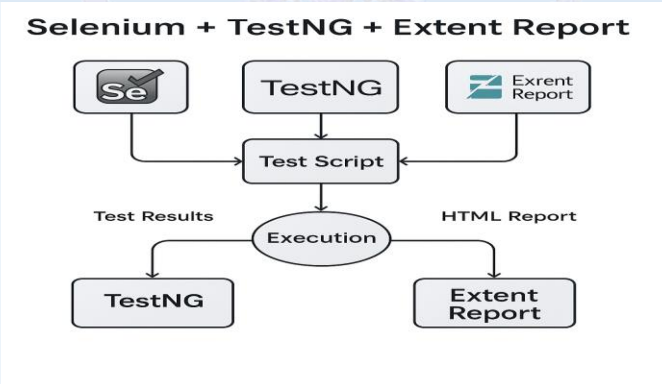

परियोजना प्रबंधन पद्धति (PMS) के मॉड्यूल जिनका ऑटोमेशन किया गया:

1. **सभी प्रकार के विकल्पों के साथ लॉगीन करें**
   विभिन्न यूजर रोल्स के लिए लॉगीन प्रक्रिया का स्वचालन किया गया, जिसमें पॉज़िटिव और नेगेटिव दोनों प्रकार के परीक्षण सम्मिलित थे।

2. **परियोजना रूपांतरण का प्रस्ताव:**
   एक प्रपोज़ल को प्रोजेक्ट में रूपांतरित करने की प्रक्रिया का संपूर्ण कार्यप्रवाह ऑटोमेट किया गया, जिसमें दस्तावेज़ अपलोड, तिथियाँ, एवं प्रोजेक्ट डिटेल्स का सत्यापन शामिल था।

3. **परियोजना अनुमोदन:**
   संबंधित प्राधिकृत उपयोगकर्ता द्वारा प्रोजेक्ट अप्रूवल वर्कफ़्लो को सफलतापूर्वक ऑटोमेट किया गया।

4. **भुगतान अनुसूची सत्यापन:**
   भुगतान अनुसूचियों की प्रविष्टि और उनके वैधता की पुष्टि हेतु परीक्षण तैयार किया गया।

5. **परियोजना टीम मानचित्रण:**
   विभिन्न प्रोजेक्ट रोल्स के साथ टीम सदस्य जोड़ने की प्रक्रिया को भी ऑटोमेट किया गया।

6. **परियोजना समापन:**
   प्रोजेक्ट बंद करने से संबंधित प्रत्येक चरण का परीक्षण सुनिश्चित किया गया।

7. **मानव संसाधन जॉब आवश्यकता कार्यप्रवाह:**
   मानव संसाधन आवश्यकताओं से संबंधित परीक्षणों को तैयार किया गया जिसमें जॉब रिक्विज़िशन प्रवाह सम्मिलित था।

8. **डेटा अद्यतन और डैशबोर्ड सर्चिंग:**
   डैशबोर्ड में डेटा अपडेट करने और सर्च फंक्शनैलिटी का परीक्षण भी ऑटोमेट किया गया।

ऑटोमेशन की आवश्यकता और लाभ:

समय की बचत: बार-बार दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वतः कर सकने से समय बचता है।
विश्वसनीयता: मैनुअल परीक्षण में मानवीय त्रुटियाँ आम होती हैं, जबकि ऑटोमेशन उन्हें न्यूनतम करता है।
रिपोर्टिंग में पारदर्शिता: विस्तार रिपोर्ट के माध्यम से हर टेस्ट का विस्तृत लॉग उपलब्ध होता है।
प्रतिगमन परीक्षण (Regression Testing) का सशक्त माध्यम: सॉफ़्टवेयर में नए बदलावों के बाद यह सुनिश्चित करना आवश्यक होता है कि पूर्व कार्यक्षमताएं प्रभावित न हों – यह ऑटोमेशन से सहज हो जाता है।

निष्कर्ष:

ऑटोमेशन केवल एक तकनीकी सुविधा नहीं, बल्कि एक रणनीतिक आवश्यकता है। परियोजना प्रबंधन पद्धति (PMS) जैसे एप्लिकेशन में जहां निरंतर बदलाव होते हैं, वहाँ स्वचालित परीक्षण से गुणवत्ता और डिलीवरी समय - दोनों में उल्लेखनीय सुधार होता है। इस तरह उपरोक्त चर्चा के आधार पर हम कह सकते है कि हमें प्रत्येक ऑटोमेशन टेस्टिंग को एक अनिवार्य भाग के रूप में शामिल करना चाहिए।

♦ ♦ ♦

सॉफ्टवेयर

- शशांक कुमार
प्रोजेक्ट एसोसिएट

सॉफ्टवेयर निर्देशों, डेटा या कंप्यूटर प्रोग्राम का एक संग्रह है जिसका उपयोग मशीनों को चलाने और विशेष गतिविधियों को पूरा करने के लिए किया जाता है। यह हार्डवेयर का विपरीत है जो कंप्टूयर के बाहरी घटकों को संदर्भित करता है। इस संदर्भ में डिवाइस को संचालित करने वाले प्रोग्राम, स्क्रिप्ट और एप्लिकेशन को 'सॉफ्टवेयर' कहा जाता है।

सॉफ्टवेयर क्या है?

कंप्टूयर सिस्टम में सॉफ्टवेयर मूल रूप से निर्देशों या आदेशों का एक सेट होता है जो कंप्यूटर को निर्देशित करता है कि क्या करना है। दूसरों शब्दों में, सॉफ्टवेयर एक कंप्यूटर प्रोग्राम है जो उपयोगकर्ता के आदेशों को निष्पादित करने के लिए निर्देशों का एक सेट प्रदान करता है और कंप्यूटर को बताता है कि क्या करना है। उदाहरण के लिए MS-Word, MS-Excle, MS-Powerpoint आदि।

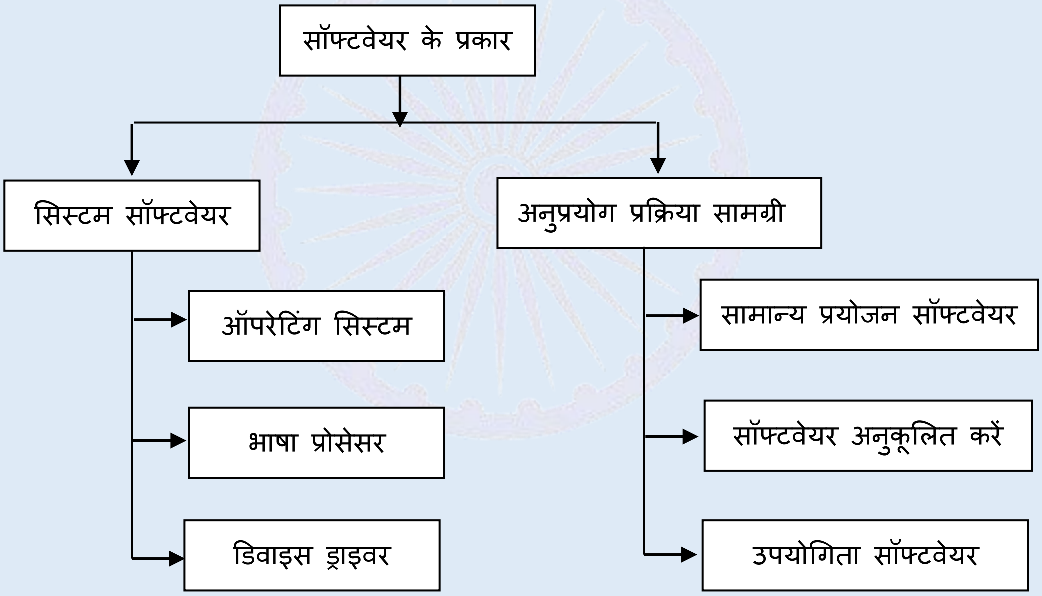

सिस्टम सॉफ्टवेयर

सिस्टम सॉफ्टवेयर वह सॉफ्टवेयर है जो सीधे कंप्यूटर हार्डवेयर को संचालित करता है और उपयोगकर्ताओं के साथ-साथ अन्य सॉफ्टवेयर को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए बुनियादी कार्यक्षमता प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में सिस्टम सॉफ्टवेयर मूल रूप से कंप्यूटर की आंतरिक कार्यप्रणाली को नियंत्रित करता है। यह हार्डवेयर और उपयोगकर्ता अनुप्रयोगों के बीच एक इंटरफेस की तरह है, यह उन्हें एक दूसरे के साथ संवाद करने में मदद करता है, क्योंकि हार्डवेयर मशीन भाषा (यानी 1 या 0) को समझता है जबकि उपयोगकर्ता अनुप्रयोग अंग्रेजी, हिन्दी, जर्मन आदि जैसी मानव पठनीय भाषाओं में काम करते हैं। इसलिए सिस्टम सॉफ्टवेयर मानव-पठनीय भाषा में परिवर्तित करता है।

सिस्टम सॉफ्टवेयर की विशेषताएं

आइए सिस्टम कंप्यूटर की कुछ विशेषताओं पर चर्चा करें

- सिस्टम सॉफ्टवेयर कंप्यूटर सिस्टम के अधिक निकट है।
- सिस्टम सॉफ्टेयर सामान्यतः निम्न-स्तरीय भाषा में लिखा जाता है।
- सिस्टम सॉफ्टवेयर को डिजाइन करना और समझना कठिन है।
- सिस्टम सॉफ्टवेयर की गति (कार्य करने की गति) तेज होती है।
- एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर की तुलना में सिस्टम सॉफ्टवेयर उपयोगकर्ताओं के लिए कम इंटरैक्टिव होता है।

एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर के प्रकार

अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर विभिन्न प्रकार के होते है और वे इस प्रकार हैं-

1. **सामान्य प्रयोजन सॉफ्टवेयरः** इस प्रकार के एप्लीकेशन का उपयोग विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए किया जाता है और यह केवल एक विशिष्ट कार्य करने तक ही सीमित नहीं होता है। उदाहरण के लिए MS-Word, MS-Excle, MS-Powerpoint आदि।
2. **कस्टमाइज्ड सॉफ्टवेयरः** इस प्रकार के एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर का उपयोग विशिष्ट कार्यों या कार्यों को करने के लिए किया जाता है या विशिष्ट संगठनों के लिए डिजाइन किया जाता है। उदाहरण के लिए रेलवे आरक्षण प्रणाली, एयरलाइन्स आरक्षण, चालान प्रबंधन प्रणाली आदि।
3. **यूटिलिटी सॉफ्टवेयरः** इस प्रकार के एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर का उपयोग कंप्यूटर इंफ्रास्ट्रक्चर को सपोर्ट करने के लिए किया जाता है। इसे सिस्टम का विश्लेषण, कॉन्फिगरेशन और रख-रखाव करने के साथ-साथ इसकी आवश्यकताओं का भी ध्यान रखने के लिए डिजाइन किया गया है। उदाहरण के लिए एंटीवायरस, डिस्क फैगमैंटर, मेमोरी टेस्टर, डिस्क रिपेयर, डिस्क क्लीनर, रजिस्ट्री क्लीनर, डिस्क स्पेस एनालाइज़र आदि।

एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर की विशेषताएं

आइए एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर की कुछ विशेषताओं पर चर्चा करें-

- एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अधिक विशिष्ट कार्य करता है, जैसे वर्ड प्रोसेसिंग, स्प्रेडशीट, ई-मेल आदि।
- अधिकांशतः सॉफ्टवेयर का आकार बड़ा होता है, इसलिए उसे अधिक भण्डारण स्थान की आवश्यकता होती है।
- एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर उपयोगकर्ताओं के अधिक इंटरैक्टिव होता है, इसलिए इसका उपयोग और डिजाइन करना आसान होता है।
- एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर को डिजाइन करना और समझना आसान है।
- अनुप्रयोग सॉफ्टवेयर सामान्यतः उच्च स्तरीय भाषा में लिखा जाता है।

♦ ♦ ♦

स्प्रिंग बूट माइग्रेशन: आसान, तेज और आधुनिक डेवलपमेंट

- देवेश सिंह
परियोजना अभियंता

स्प्रिंग बूट एक शक्तिशाली और लोकप्रिय ओपन-सोर्स जावा-आधारित फ्रेमवर्क है जो डेवलपर्स को एप्लिकेशन बनाने, विकसित करने और संचालित करने में सहायता करता है। यह स्प्रिंग फ्रेमवर्क का हिस्सा है और इसका मुख्य उद्देश्य डेवलपमेंट प्रक्रिया को सरल और तेज करना है। यदि आपका मौजूदा एप्लिकेशन किसी पुराने फ्रेमवर्क या तकनीक पर आधारित है, तो इसे स्प्रिंग बूट में माइग्रेट करना एक स्मार्ट निर्णय हो सकता है। यह लेख आपको इस प्रक्रिया को समझने और इसे सफलतापूर्वक लागू करने में मदद करेगा।

परिचय

स्प्रिंग बूट ने जावा एप्लिकेशन डेवलपमेंट को क्रांतिकारी रूप से बदल दिया है। यह डेवलपर्स को बॉयलरप्लेट कोड (अनावश्यक और दोहराव वाले कोड) को कम करने, ऑटो-कॉन्फ़िगरेशन का लाभ उठाने और उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम बनाता है। पुराने फ्रेमवर्क पर चल रहे एप्लिकेशनों को स्प्रिंग बूट में माइग्रेट करने से बेहतर प्रदर्शन, आसान रखरखाव और आधुनिक सुविधाओं का उपयोग संभव हो सकता है। इस लेख में, हम माइग्रेशन की पूरी प्रक्रिया को चरण-दर-चरण समझने का प्रयास करेंगे।

माइग्रेशन की तैयारी

माइग्रेशन शुरू करने से पहले, अपने मौजूदा एप्लिकेशन को अच्छी तरह से समझना और उसकी तैयारी करना आवश्यक है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि माइग्रेशन सुचारू रूप से हो और कोई बड़ी समस्या उत्पन्न न हो।

- **वर्तमान आर्किटेक्चर का अध्ययन**: सबसे पहले, अपने एप्लिकेशन के आर्किटेक्चर को समझें। क्या यह मॉनोलिथिक (एक ही संरचना वाला) है या माइक्रोसर्विसेज (छोटी-छोटी स्वतंत्र सेवाओं) पर आधारित है? यह जानकारी माइग्रेशन की रणनीति तय करने में मदद करेगी।
- **निर्भरताओं की पहचान**: आपके एप्लिकेशन में उपयोग की जाने वाली सभी बाहरी लाइब्रेरीज़ और फ्रेमवर्क्स की सूची बनाएं। यह जांचें कि क्या ये स्प्रिंग बूट के साथ संगत हैं।
- **माइग्रेशन की योजना**: एक विस्तृत योजना तैयार करें जिसमें माइग्रेशन के चरण, समयसीमा, और आवश्यक संसाधन शामिल हों। यह योजना जोखिमों को कम करने में मदद करेगी।

माइग्रेशन की प्रक्रिया

माइग्रेशन एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसे निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

स्प्रिंग बूट प्रोजेक्ट सेटअप

- **नया प्रोजेक्ट बनाएं**: स्प्रिंग इनिशियलाइज़र (Spring Initializr) का उपयोग करके एक नया स्प्रिंग बूट प्रोजेक्ट बनाएं। यह ऑनलाइन टूल आपको आवश्यक निर्भरताओं को चुनने की सुविधा देता है।
- **निर्भरताएं जोड़ें**: अपने एप्लिकेशन की आवश्यकताओं के अनुसार निर्भरताएं जैसे स्प्रिंग वेब, स्प्रिंग डेटा, या स्प्रिंग सिक्योरिटी जोड़ें।

कॉन्फ़िगरेशन

- **ऑटो-कॉन्फ़िगरेशन**: स्प्रिंग बूट की ऑटो-कॉन्फ़िगरेशन सुविधा का उपयोग करें, जो बहुत सारी सेटिंग्स को स्वचालित रूप से संभाल लेती है।
- **कस्टम कॉन्फ़िगरेशन**: यदि आपके एप्लिकेशन को विशिष्ट कॉन्फ़िगरेशन की आवश्यकता है, तो उसे मैन्युअल रूप से जोड़ें।

कोड अनुकूलन

- **कोड अपडेट**: मौजूदा कोड को स्प्रिंग बूट के साथ संगत बनाने के लिए संशोधित करें। उदाहरण के लिए, कंट्रोलर्स में @RestController, सर्विसेज में @Service, और रिपॉजिटरीज़ में @Repository जैसे एनोटेशन्स का उपयोग करें।
- **संरचना समायोजन**: अपने कोड को स्प्रिंग बूट की परतदार संरचना (layered architecture) के अनुसार व्यवस्थित करें।

डेटाबेस माइग्रेशन

- **स्प्रिंग डेटा जेपीए**: यदि आपका एप्लिकेशन डेटाबेस का उपयोग करता है, तो स्प्रिंग डेटा जेपीए का उपयोग करके डेटाबेस इंटीग्रेशन को कॉन्फ़िगर करें।
- **स्कीमा अनुकूलन**: मौजूदा डेटाबेस स्कीमा को स्प्रिंग बूट के साथ संगत बनाएं और डेटा माइग्रेशन को सावधानीपूर्वक पूरा करें।

सुरक्षा

- **स्प्रिंग सिक्योरिटी**: अपने एप्लिकेशन की सुरक्षा को मजबूत करने के लिए स्प्रिंग सिक्योरिटी को अप्लाई करें। इसमें उपयोगकर्ता प्रमाणीकरण (authentication) और ऑथोराइजेशन (authorization) शामिल हो सकते हैं।

परीक्षण और त्रुटि निवारण

माइग्रेशन पूरा होने के बाद, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि एप्लिकेशन ठीक से कार्य कर रहा है। इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाएं:

- **यूनिट टेस्टिंग**: स्प्रिंग बूट के साथ यूनिट टेस्ट लिखें और चलाएं ताकि कोड के प्रत्येक हिस्से की कार्यक्षमता की जांच हो सके।
- **इंटीग्रेशन टेस्टिंग**: एप्लिकेशन के विभिन्न मॉड्यूल्स के बीच एकीकरण की जांच करें।
- **त्रुटि निवारण**: माइग्रेशन के दौरान उत्पन्न होने वाली सामान्य समस्याओं जैसे निर्भरता संघर्ष, कॉन्फ़िगरेशन त्रुटियां, या डेटाबेस कनेक्शन समस्याओं का समाधान करें।

निष्कर्ष

एप्लिकेशन को स्प्रिंग बूट में माइग्रेट करना एक ऐसा निवेश है जो लंबे समय में आपके प्रोजेक्ट को आधुनिक, कुशल और रखरखाव के लिए आसान बनाता है। यह प्रक्रिया न केवल डेवलपमेंट को सरल करती है बल्कि आपके एप्लिकेशन को नवीनतम तकनीकों के साथ अपडेट रखती है। सही योजना, तैयारी और क्रियान्वयन के साथ, आप अपने एप्लिकेशन को सफलतापूर्वक स्प्रिंग बूट में माइग्रेट कर सकते हैं और इसके लाभों का पूरा उपयोग कर सकते हैं।

♦ ♦ ♦

इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।"

- राहुल सांकृत्यायन

स्प्रिंग सिक्योरिटी - सुरक्षित वेब अनुप्रयोगों की नींव

- अनुज सजवाण
परियोजना अभियंता

आज का युग डेटा और गोपनीयता का युग है। वेब अनुप्रयोगों (Web Applications) के बिना जीवन की कल्पना अधूरी है, लेकिन इन्हें सुरक्षित रखना एक बड़ी चुनौती भी है। साइबर हमले, डेटा चोरी, और अनधिकृत पहुँच जैसे खतरों से निपटने के लिए स्प्रिंग सिक्योरिटी (Spring Security) एक विश्वसनीय समाधान है। यह न केवल डेवलपर्स को सुरक्षा का "सुपरहीरो" बनाता है, बल्कि यूजर्स के विश्वास को भी बढ़ाता है।

इस लेख में, हम इस बात पर चर्चा करेंगे कि कै से स्प्रिंग सिक्योरिटी वेब एप्लिकेशन्स को हैकर्स से सुरक्षित करती है। इसकी कार्यप्रणाली और इसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं के बारे में हम जानकारी हासिल करेंगे। साथ ही, इस चर्चा को रोचक बनाने के लिए हम उदाहरणों और सादृश्यों (Analogies) का उपयोग भी करेंगे।

क्या है स्प्रिंग सिक्योरिटी?

स्प्रिंग सिक्योरिटी, स्प्रिंग फ्रेमवर्क का एक शक्तिशाली मॉड्यूल है, जो जावा-आधारित वेब एप्लिकेशन्स को सुरक्षा प्रदान करता है। यह दो मुख्य स्तंभों पर कार्य करता है:

1. **प्रमाणीकरण (Authentication):** "आप कौन हैं?" – यूजर की पहचान सत्यापित करना (जैसे लॉगिन क्रेडेंशियल्स)।
2. **प्राधिकरण (Authorization):** "आप क्या कर सकते हैं?" – यूजर के अधिकारों की जाँच करना।

स्प्रिंग सिक्योरिटी की आवश्यकता क्यों?

- ✓ **साइबर हमलों का बढ़ता खतरा:** हैकर्स द्वारा CSRF, SQL इंजेक्शन, और XSS जैसे हमले आम हो गए हैं।
- ✓ **लचीली सुरक्षा नीतियाँ:** स्प्रिंग सिक्योरिटी कस्टमाइज़ेशन की अनुमति देती है, जिससे एप्लिकेशन की आवश्यकताओं जरूरतों के अनुसार नियम बनाए जा सकते हैं।

स्प्रिंग सिक्योरिटी की कार्यप्रणाली

सुरक्षा की "फिल्टर चेन"

स्प्रिंग सिक्योरिटी कार्य करती है एक फिल्टर चेन (Filter Chain) के माध्यम से, जो किसी सुरक्षा चौकी (Security Checkpoint) की तरह कार्य करती है। हर यूजर रिक्वेस्ट इस चेन से गुजरती है, और निम्न चरणों में संसाधित होती है:

1. प्रमाणीकरण:

- यूजर का यूजरनेम/पासवर्ड, टोकन, या बायोमेट्रिक डेटा जाँचा जाता है।

- उदाहरण: बैंक ऐप में लॉगिन करते समय OTP वेरिफिकेशन।

2. प्राधिकरण:

- यूज़र की भूमिका (Role) के आधार पर पहुँच निर्धारित की जाती है।
- उदाहरण: एक एडमिन सभी यूजर्स का डेटा देख सकता है, जबकि ग्राहक केवल अपना डेटा एक्सेस कर सकता है।

3. सुरक्षा नीतियाँ लागू करना:

- CSRF टोकन: फर्जी रिक्वेस्ट्स को ब्लॉक करना।
- HTTPS अनिवार्य करना: डेटा एन्क्रिप्शन सुनिश्चित करना।
- सत्र प्रबंधन (Session Management): यूजर की गतिविधियों को ट्रैक करना।

स्प्रिंग सिक्योरिटी की प्रमुख विशेषताएं

1. फॉर्म-बेस्ड ऑथेंटिकेशन

यूजर को एक कस्टम लॉगिन पेज प्रदान करता है। पासवर्ड को BCrypt जैसे एल्गोरिदम से एन्क्रिप्ट करता है।

2. OAuth2 और सोशल लॉगिन

गूगल, फेसबुक, या GitHub जैसी सेवाओं के साथ सिंगल साइन-ऑन (SSO) सक्षम करता है।
उदाहरण: "Google के साथ साइन इन करें" बटन।

3. JWT (JSON Web Tokens)

स्टेटलेस ऑथेंटिकेशन के लिए उपयोगी, जहाँ सर्वर यूजर सत्र को ट्रैक नहीं करता। टोकन-आधारित सुरक्षा: हर रिक्वेस्ट के साथ टोकन भेजा जाता है।

4. सुरक्षा हेडर्स और CORS प्रबंधन

XSS हमलों से बचाव के लिए हेडर्स सेट करना। CORS (Cross-Origin Resource Sharing) नीतियों को कॉन्फ़िगर करना।

वास्तविक दुनिया के उदाहरण

उदाहरण 1: ई-कॉमर्स वेबसाइट

समस्या: हैकर्स द्वारा यूजर्स का क्रेडिट कार्ड डेटा चोरी करना।
समाधान: स्प्रिंग सिक्योरिटी के साथ PCI-DSS कंप्लायंस लागू करना और HTTPS अनिवार्य करना।

उदाहरण 2: हेल्थकेयर ऐप

समस्या: रोगियों के मेडिकल रिकॉर्ड्स तक अनधिकृत पहुँच।
समाधान: RBAC (Role-Based Access Control) के साथ डॉक्टर्स, नर्सेस, और मरीजों के लिए अलग-अलग एक्सेस लेवल्स सेट करना।

स्प्रिंग सिक्योरिटी सीखने के टिप्स

- **स्प्रिंग बूट के साथ शुरुआत करें:** स्प्रिंग इनिशियलाइज़र (start.spring.io) का उपयोग करके बेसिक सिक्योरिटी कॉन्फ़िगरेशन जेनरेट करें।
- **कस्टम सुरक्षा नीतियाँ बनाएँ:** अपनी आवश्यकताओं के अनुसार फिल्टर, यूजर रोल्स, और एंडपॉइंट्स कॉन्फ़िगर करें।
- **कम्युनिटी संसाधनों का उपयोग करें:** स्प्रिंग सिक्योरिटी की ऑफिशियल डॉक्युमेंटेशन और स्टैक ओवरफ्लो पर चर्चाएँ पढ़ें।

निष्कर्ष

स्प्रिंग सिक्योरिटी न केवल कोड की सुरक्षा करती है, बल्कि यूजर्स के विश्वास को भी स्थापित करती है। यह डेवलपर्स को एक सशक्त ढाँचा प्रदान करती है, जिससे वे समय और संसाधन बचाते हुए सुरक्षित एप्लिकेशन्स बना सकते हैं। आने वाले समय में, जैसे-जैसे साइबर खतरे जटिल होते जाएँगे, स्प्रिंग सिक्योरिटी जैसे टूल्स की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाएगी।

"सुरक्षा कोडिंग का अंतिम लक्ष्य नहीं, बल्कि उसकी नींव है। स्प्रिंग सिक्योरिटी के साथ, मजबूत नींव रखें!"

♦ ♦ ♦

जरा सोचिए

हिन्दी हमारी राजभाषा है
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है
हिन्दी हमारी राज्यभाषा है

फिर हिन्दी के कार्य में संकोच क्यों?

हिन्दी में कार्य करें, राष्ट्र का निर्माण करें।

बदलती पीढ़ियाँ और समय का चक्र

- दीपशिखा वन्दना
वरिष्ठ परियोजना अभियंता

समय एक ऐसा पहिया है जो कभी रुकता नहीं। इसके साथ चलती हैं पीढ़ियाँ, जो अपने-अपने युग में नए विचार, नई सोच और नया अनुभव लेकर आती हैं। हर पीढ़ी अपने से पिछली पीढ़ी को पुरानी और अगली को अजीब समझती है, पर यही बदलाव जीवन का स्वाभाविक चक्र है।

बदलती पीढ़ियाँ: एक स्वाभाविक प्रक्रिया

एक समय था जब चिट्ठियाँ लिखना भावनाओं की अभिव्यक्ति होती थी, आज व्हाट्सऐप पर "Seen" आ जाए तो भी बहुत कुछ कह जाता है। पहले सुबह सूर्योदय के साथ खेतों में हल चलता था, अब सूर्योदय के साथ मोबाइल का अलार्म Snooze होता है। पीढ़ियाँ बदलती हैं तो आदतें, सोच, रहन-सहन और भाषा भी बदल जाती है।

पुरानी और नई पीढ़ी का टकराव नहीं, समझ होनी चाहिए

अक्सर कहा जाता है कि आज की पीढ़ी अनुशासनहीन है, तकनीक पर निर्भर है, परंतु यह उनकी ताकत भी है। जहाँ पहले लोग अनुभव से सीखते थे, वहीं आज की युवा पीढ़ी डेटा और जानकारी से निर्णय लेती है। जरूरी है कि पुरानी पीढ़ी अपनी सीख दे और नई पीढ़ी तकनीक के साथ उसे आगे बढ़ाए।

समय का चक्र

समय का एक ही नियम है - यह निरंतर परिवर्तनशील है। जो कल नया था, आज पुराना हो गया और जो आज नया है, वह कल इतिहास बनेगा। समय की यही सच्चाई है कि वह किसी के लिए नहीं रुकता, ना ही किसी के कहने से बदलता है। हमें समय के साथ चलना सीखना चाहिए, न कि केवल अतीत की यादों में अटक जाना।

निष्कर्ष

बदलती पीढ़ियाँ कोई समस्या नहीं, बल्कि समाज के विकास की प्रक्रिया हैं। यदि हम समय के चक्र को समझें और हर पीढ़ी को उसकी विशेषता के साथ अपनाएँ, तो हम एक समृद्ध और संतुलित समाज की ओर बढ़ सकते हैं। हर पीढ़ी अपने समय की किताब है - बस हमें उसे पढ़ने का तरीका सीखना है।

♦ ♦ ♦

तुलसी: धर्म और विज्ञान का मेल

- प्रांशु जगूरी
परियोजना अभियंता

भारतीय घरों में तुलसी सिर्फ एक पौधा नहीं, बल्कि संस्कृति, आस्था और विज्ञान का प्रतीक है। आइए जानें कि कैसे यह छोटा सा पौधा हमारे पूर्वजों की समझदारी का उदाहरण है।

धार्मिक महत्व:

1. **देवी का स्वरूप:** हिंदू मान्यताओं में तुलसी को विष्णु प्रिया माना जाता है। इसकी पूजा से घर में सुखशांति बनी रहती है। रोज सुबह तुलसी के पत्ते चढ़ाने और दीपक जलाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है।
2. **संस्कारों से जुड़ाव:** मृत्यु के बाद तुलसी की लकड़ी से चिता जलाने का रिवाज़ है, जो आत्मा की शुद्धि का प्रतीक माना जाता है।

वैज्ञानिक तथ्य:

1. **प्राकृतिक एंटीबायोटिक:** तुलसी में यूजेनॉल और कार्वाक्रोल जैसे यौगिक होते हैं, जो बैक्टीरिया और वायरस से लड़ते हैं। उदाहरण: खाँसीजुकाम होने पर तुलसी की पत्तियाँ उबालकर पीना आयुर्वेदिक नुस्खा है।
2. **वायु शुद्धिकरण:** NASA की एक स्टडी के मुताबिक, तुलसी हवा से टॉक्सिन्स (जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, बेंजीन) को फिल्टर करती है।
3. **मच्छर भगाएँ:** तुलसी के पौधे से निकलने वाली गंध मच्छरों को दूर रखती है। इसलिए पुराने समय में इसे घर के आँगन में लगाया जाता था।

क्यों है यह मेल ज़रूरी?

1. **पूर्वजों की दूरदर्शिता:** उन्होंने धर्म के माध्यम से विज्ञान को जीवन का हिस्सा बनाया, ताकि लोग स्वस्थ रहें।
2. **आधुनिक सबक:** आज हम सेनेटाइज़र और एयर प्यूरीफायर खरीदते हैं, जबकि तुलसी यही काम मुफ्त में करती आई है।

आगे की राह:

1. **तुलसी को वापस लाएँ:** शहरी घरों में गमलों में तुलसी उगाएँ, खासकर बच्चों को इसके फायदे बताएँ।
2. **रिसर्च को बढ़ावा:** तुलसी के मेडिसिनल यूसेज पर और रिसर्च होनी चाहिए, ताकि इसके गुणों का पूरा फायदा मिल सके।

♦ ♦ ♦

ईश्वर की दुकान

- अनिल कुमार
पी.पी.एस.

एक दिन मैं सड़क से जा रहा था, रास्ते में एक बोर्ड लगा था, 'ईश्वरीय किरयाने की दुकान'। मेरी जिज्ञासा हुई कि देखूं इसमें बिकता क्या है? जैसे ही खयाल आया दरवाजा अपने आप खुल गया। जरा-सी जिज्ञासा रखते हैं तो द्वार अपने आप खुल जाते हैं, खोलने नहीं पड़ते।

दुकान के अंदर जगह-जगह देवदूत खड़े थे। एक देवदूत ने मुझे टोकरी देते हुए कहा, 'मेरे बच्चे ध्यान से खरीदारी करना, यहां सब कुछ है जो एक इंसान को चाहिए। एक बार में टोकरी भर कर न ले जा सको तो दोबारा आ जाना, फिर दोबारा टोकरी भर लेना।'

मैं सब चीजें देखने लगा। सबसे पहले धीरज खरीदा, फिर प्रेम, फिर समझ, फिर एक-दो डिब्बे विवेक के ले लिए। आगे विश्वास के भी डिब्बे उठा लिए, मेरी टोकरी भरती गई। आगे पवित्रता मिली, सोचा इसको कैसे छोड़ सकता हूं। थोड़ा आगे चला तो हिम्मत का बोर्ड आया, सोचा हिम्मत बिना तो जीवन नहीं चलता। थोड़ा आगे बढ़ने पर सहनशीलता व मुक्ति का डिब्बा भी ले लिया। लगा कि अब बहुत हो गया। तभी नजर प्रार्थना पर पड़ी, मैंने उसका डिब्बा भी ले लिया कि सब गुण होते हुए भी अगर मुझसे भूल हो जाए तो मैं प्रभु से प्रार्थना कर लूंगा कि वे मुझे माफ कर दें।

आनंदित होते हुए मैं काउंटर पर गया और देवदूत से पूछा, 'सर.. मुझे कितना बिल चुकाना होगा।?' देवदूत बोले, 'मेरे बच्चे, यहां बिल चुकाने का ढंग भी ईश्वरीय है। अब तुम जहां भी जाना इन चीजों को भरपूर बांटना, जो चीज जितनी ज्यादा तेजी से लुटाओगे, उतना तेजी से बिल चुकता हो जाएगा। इन चीजों का बिल इसी तरह चुकाते हैं। कोई-कोई विरला इसमें प्रवेश करता है। जो प्रवेश कर लेता है, वह मालामाल हो जाता है। वह इन गुणों को खूब भोगता व लुटाता है।'

दोस्तों, इस दुकान का नाम है सत्संग की दुकान। जब लगे कि खजाने खाली हो रहे हैं, तो अच्छी संगति की शरण में जाएं और वापस अपने गुणों का खजाना भर लें।

♦ ♦ ♦

राष्ट्रीय व्यवहार के लिए हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

- महात्मा गाँधी

भारत में कृषि और ड्रोन तकनीक: नवाचार की ओर बढ़ते कदम

- भावेश गुप्ता
सॉफ्टवेयर डेवेलपर

भारत में कृषि क्षेत्र, जिसे अक्सर राष्ट्र की रीढ़ कहा जाता है, आज कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। संसाधनों की कमी, अप्रत्याशित मौसम परिवर्तन और पारंपरिक कृषि पद्धतियों की सीमाएँ, कृषि की प्रगति में बाधक बन रही हैं। ऐसे में, वैज्ञानिक नवाचार और नई तकनीकों का समावेश आवश्यक हो जाता है।

ड्रोन प्रौद्योगिकी, जो अन्य क्षेत्रों में पहले से ही क्रांतिकारी परिवर्तन ला रही है, अब कृषि में भी अपनी पहचान बना रही है। हालाँकि, भारतीय कृषि में ड्रोन का उपयोग अभी शुरुआती चरण में है, लेकिन इसकी क्षमताएँ भविष्य में कृषि क्षेत्र को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकती हैं। यह लेख कृषि में ड्रोन तकनीक के अवसरों, लाभों और चुनौतियों की गहराई से पड़ताल करता है।

भारतीय कृषि के सामने चुनौतियाँ

भारतीय कृषि कई समस्याओं से जूझ रही है, जो इसकी उत्पादकता और स्थिरता को प्रभावित कर रही हैं। इनमें प्रमुख हैं:

1. भूमि का विखंडन: छोटे खेतों की बड़ी समस्या

भारत में कृषि भूमि छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटी हुई है, जिससे किसानों के लिए इसे कुशलता से उपयोग करना कठिन हो जाता है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (NSSO) के अनुसार, भारत में 86% खेत सीमांत या छोटे श्रेणी के अंतर्गत आते हैं, जिनका आकार दो हेक्टेयर (लगभग पाँच एकड़) से कम है। यह समस्या निम्नलिखित कारणों से गंभीर हो जाती है:

- **पैमाने की अर्थव्यवस्था की बाधाएँ:** छोटे खेतों के कारण किसान आधुनिक कृषि मशीनरी और तकनीकों का पूरा लाभ नहीं उठा पाते है।
- **कुशल सिंचाई की समस्या:** ड्रिप सिंचाई जैसी आधुनिक प्रणालियों को छोटे खेतों में लागू करना कठिन और महंगा हो जाता है।
- **श्रम पर अधिक निर्भरता:** सीमित मशीनीकरण के कारण किसानों को पारंपरिक श्रम पर निर्भर रहना पड़ता है, जिससे उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

2. पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ: नवाचार से दूरी

भारतीय कृषि में अब भी परंपरागत तरीकों का अधिक प्रयोग किया जाता है। इन विधियों में जल और उर्वरकों का अनुचित उपयोग आम है, जिससे भूमि की उर्वरता प्रभावित होती है और जल संकट बढ़ता है।

3. पर्यावरणीय संकट: संतुलन बनाना जरूरी

भारतीय कृषि को एक ओर अधिक उत्पादन करने की जरूरत है, तो दूसरी ओर पर्यावरण को बचाने की भी जिम्मेदारी है। वर्तमान में, अधिक रसायनों और पानी के अत्यधिक उपयोग के कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं:

- **जल संकट:** भारत में कृषि क्षेत्र द्वारा मीठे पानी की 80% खपत की जाती है। 2023 में केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) की रिपोर्ट के अनुसार, देश की 3% से अधिक भूजल इकाइयाँ 'अत्यंत संकटग्रस्त' मानी गई हैं।
- **मृदा क्षरण:** अत्यधिक उर्वरक और रसायनों के प्रयोग से मिट्टी की गुणवत्ता खराब हो रही है।

ड्रोन तकनीक: भारतीय कृषि के लिए वरदान

ड्रोन क्या हैं और वे कैसे काम करते हैं?

ड्रोन, जिन्हें मानव रहित हवाई वाहन (UAV) भी कहा जाता है, स्वचालित या रिमोट-नियंत्रित तकनीक से संचालित होते हैं। जीपीएस और सेंसर तकनीक के संयोजन से ये कृषि के लिए महत्वपूर्ण डेटा एकत्र करने में सक्षम होते हैं। ड्रोन में स्पेक्ट्रल कैमरे, थर्मल इमेजिंग और LiDAR जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिससे खेतों की विस्तृत निगरानी की जा सकती है।

ड्रोन तकनीक के लाभ

यदि भारतीय कृषि में ड्रोन को प्रभावी रूप से शामिल किया जाए, तो यह कई स्तरों पर मददगार साबित हो सकता है:

1. **सटीक खेती:** ड्रोन सेंसर की मदद से फसलों की स्थिति का सही आकलन किया जा सकता है, जिससे जल और उर्वरकों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित होगा।
2. **फसल सुरक्षा:** ड्रोन कीटनाशकों और उर्वरकों का छिड़काव सटीक रूप से कर सकते हैं, जिससे लागत कम होगी और पर्यावरण पर भी कम प्रभाव पड़ेगा।
3. **जल प्रबंधन:** ड्रोन खेतों की नमी और जल स्रोतों की स्थिति का विश्लेषण कर सकते हैं, जिससे जल की बचत होगी।

अन्य देशों में ड्रोन तकनीक का सफल उपयोग

1. अमेरिका:
कैलिफ़ोर्निया के किसान मिट्टी की नमी मापने के लिए ड्रोन-आधारित इमेजिंग तकनीक का उपयोग कर रहे हैं, जिससे सिंचाई की लागत कम हो रही है।

2. अफ्रीका:
मलावी जैसे देशों में ड्रोन का उपयोग कीट नियंत्रण के लिए किया जा रहा है, जिससे कृषि को नुकसान से बचाया जा रहा है।

3. जापान:

जापानी किसान ड्रोन का उपयोग फसल रोगों की शीघ्र पहचान और उर्वरकों के लक्षित अनुप्रयोग के लिए कर रहे हैं, जिससे उपज और गुणवत्ता दोनों में सुधार हुआ है।

भारत में ड्रोन तकनीक का भविष्य

सरकारी पहल और नीतियाँ

भारतीय सरकार कृषि में ड्रोन तकनीक को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ चला रही है:

1. **ड्रोन शक्ति योजना:** नवाचार और स्टार्टअप को सपोर्ट करने के लिए बनाई गई यह योजना ड्रोन प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देती है।
2. **किसान ड्रोन योजना:** किसानों को सब्सिडी पर ड्रोन उपलब्ध कराने के लिए यह योजना शुरू की गई है।
3. **ड्रोन नियम, 2021:** ड्रोन संचालन को सरल और सुगम बनाने के लिए नए नियम बनाए गए हैं।

चुनौतियाँ और समाधान

हालाँकि ड्रोन तकनीक का भविष्य उज्ज्वल है, लेकिन इसे अपनाने में कुछ प्रमुख बाधाएँ भी हैं:

- **उच्च लागत:** ड्रोन और उनके उन्नत सेंसर छोटे किसानों के लिए महंगे हो सकते हैं। समाधान के रूप में, सरकार द्वारा दी जाने वाली सब्सिडी का लाभ उठाया जा सकता है।
- **सीमित जागरूकता:** कई किसानों को ड्रोन तकनीक के फायदों के बारे में जानकारी नहीं है। इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है।
- **विनियामक सीमाएँ:** कुछ क्षेत्रों में ड्रोन के उपयोग के लिए विशेष अनुमति आवश्यक होती है, जिससे किसानों को कठिनाइयाँ हो सकती हैं।

निष्कर्ष: ड्रोन से भारतीय कृषि में क्रांति संभव

ड्रोन तकनीक भारतीय कृषि को दक्षता, स्थिरता और उत्पादकता की नई ऊँचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखती है। इसके लिए सरकार, उद्योग और किसानों को मिलकर काम करना होगा।

- **सरकार** को अनुसंधान एवं विकास में निवेश करना चाहिए और नियमों को सरल बनाना चाहिए।
- **उद्योग** को किफायती ड्रोन विकसित करने और किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है।
- **किसानों** को आधुनिक तकनीकों को अपनाने और प्रशिक्षित होने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

यदि सभी हितधारक मिलकर कार्य करें, तो ड्रोन तकनीक भारतीय कृषि के लिए एक क्रांतिकारी परिवर्तन साबित हो सकती है, जिससे न केवल किसानों बल्कि पूरे देश को लाभ होगा।

♦ ♦ ♦

पालमपुर : एक खूबसूरत घाटी

- चंद्र मोहन
परियोजना सहायक

इस लेख के माध्यम से हम हिमाचल प्रदेश के एक बेहद खूबसूरत शहर पालमपुर के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। कुछ समय पहले मैं भी अपने परिवार के साथ पालमपुर गया था। प्राकृतिक रूप से समृद्ध इस घाटी में पहुँचते ही हमें एक सुकून भरा अहसास हुआ। चारों ओर देवदार के ऊँचे-ऊँचे पेड़ जैसे आसमान को छू रहे हों। हर तरफ हरियाली और पानी के झरनों के मनोरम दृश्यों को देखकर आनंद ही आ गया। एक ओर देवदार के जंगलों और चाय बागानों से घिरी हुई घाटी अपनी हरियाली ओर जल स्रोतों से प्राकृतिक छटा बिखेर रही थी, वहीं दूसरी ओर धौलाधार पहाड़ियों की बर्फ से ढकी चोटियों का अलौकिक नजारा देखते ही बनता था।

पालमपुर, हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित है। इस शहर का नाम स्थानीय शब्द 'पलुम' से पड़ा है, जिसका अर्थ है पानी की बहुतायत। पालमपुर में बहुत-सी छोटी-छोटी जलधाराएँ और कलकल करती नदियाँ बहती हैं। पालमपुर मैदानों और पहाड़ियों के संगम पर स्थित है, इसलिए यहां जल स्रोतों की कोई कमी नहीं है। हरियाली और पानी का संयोजन यहाँ की सुंदरता में चार चाँद लगाते हैं।

पालमपुर का लगभग एक किलोमीटर लंबा बाजार सैलानियों को आकर्षित करता है। दिन भर बाजार में गहमागहमी रहती है। सड़क के दोनों ओर सजी–धजी भव्य दुकानें राह गुजरते लोगों को खरीदारी के लिए बरबस ही अपनी ओर खींचती हैं। बाजार से गुजरते सैलानियों की निगाहें जैसे ही सामने बर्फीले पहाड़ों पर पड़ती हैं, वे मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

पालमपुर और इसके आसपास दर्शनीय स्थल

चाय के बागान- यहां चारों ओर फैले चाय के बागान पालमपुर की शान हैं। ब्रिटिश काल से ही यहां चाय की खेती हो रही है, और यह चाय देश-विदेश में लोकप्रिय है। पालमपुर टी-गार्डन में घूमना एक अद्भुत अनुभव होता है। इन्हीं विशाल बागानों के कारण पालमपुर को 'टी-सिटी' के नाम से भी जाना जाता है।

न्यूगल खड्ड - पालमपुर आने वाले सैलानी सबसे पहले न्यूगल खड्ड की ओर ही जाते हैं। यह एक खूबसूरत नदी है जो पालमपुर से होकर बहती है। पालमपुर से तीन किलोमीटर दूर न्यूगल खड्ड तक का सफर स्वयं में अनोखा अनुभव है। आप यहां नदी के किनारे टहल सकते हैं और प्राकृतिक दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। रास्ते के दोनों ओर चाय के बागान और देवदार के पेड़ हैं। न्यूगल नदी के डेढ़ सौ मीटर ऊपर एक पहाड़ी पर न्यूगल पार्क है, जहां छोटी सी नहर के साथ घास का मैदान और जलपान के लिए हिमाचल पर्यटन विभाग का कैफेटेरिया बना है। यह एक लोकप्रिय पिकनिक स्पॉट है जहां आप शहर की चकाचौंध से दूर रहकर कुछ दिन अपने परिवार के साथ यादगार पल बिता सकते हैं।

अंद्रेटा गाँव - यह गाँव पालमपुर शहर से 12 किलोमीटर दूर स्थित है जो कि चारों तरफ से प्राकृतिक खूबसूरती से घिरा हुआ है। यहां की आर्टिस्ट कॉलोनी को देखने के लिए दुनिया भर के पर्यटक यहां आते हैं। कलाकारों की यह कॉलोनी 1920 के दशक में स्थापित की गई थी। यह बहुत ही शांत जगह है। यहां आने वाले पर्यटक शोभा सिंह आर्ट गैलरी को देखना बिलकुल भी नहीं भूलते। इस आर्ट गैलरी में आपको मूर्तियां, पोस्टर और कैनवास प्रिंट आदि देखने को मिलेंगे। इसके अलावा आप यहां से स्थानीय हस्तशिल्प की वस्तुएँ भी खरीद सकते हैं।

चामुंडा देवी मंदिर - घने जंगलों से घिरे इस मंदिर के पास से बानेर नदी प्रवाहित होती है। इस मंदिर की पालमपुर से दूरी लगभग 20 किलोमीटर है। माँ काली को यहाँ के निवासी चामुंडा माता के रूप में पूजते हैं। यह मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है। यह मंदिर न केवल धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि प्राकृतिक खूबसूरती और शांत वातावरण के कारण पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय स्थान है।

बैजनाथ मंदिर - पालमपुर के पास ही भगवान शिव का बैजनाथ मंदिर स्थित है। इस प्राचीन की देखरेख भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा की जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार इस मंदिर का निर्माण कार्य 'आहुका' और 'ममुक' नाम के दो व्यापारी भाइयों ने 1204 ई. में किया था। यह मंदिर अपनी पौराणिक महत्व और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। पूरा मंदिर एक ऊंची दीवार से घिरा है और दक्षिण और उत्तर में प्रवेश द्वार हैं। मंदिर की बाहरी दीवारों और झरोखों में कई देवी-देवताओं की मूर्तियाँ हैं। बहुत सारे चित्र दीवारों में नक्काशी करके बनाए गए हैं। इस मंदिर से धौलाधार की वादियों का सौंदर्य देखते ही बनता है।

बीड़ बिलिंग - पालमपुर न केवल प्रकृति प्रेमियों के लिए बल्कि साहसिक खेलों के शौकीनों के लिए भी एक आदर्श स्थल है। पालमपुर से लगभग 55 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बीड़-बिलिंग को "भारत की पैराग्लिडिंग कैपिटल" के रूप में जाना जाता है। यह एशिया का सबसे ऊँचा पैराग्लाइडिंग स्पॉट है। यही कारण है कि पैराग्लाइडिंग का मजा लेने के लिए दुनिया भर से लोग यहां आते हैं। यहां बहुत सारे बौद्ध मठ भी स्थापित हैं। इस तरह यह स्थान एडवेंचर गतिविधियों के साथ-साथ ईकोटूरिज्म, अध्यात्म और शांत वातावरण के लिए भी पर्यटकों की पसंदीदा जगह है।

पालमपुर का मौसम

यहां का मौसम साल भर सुहावना रहता है। अप्रैल से लेकर जून तक कुछ गर्मी रहती है जबकि नवंबर से लेकर फरवरी तक ठंड का मौसम रहता है। गर्मियों में यह ठंडी हवाओं और हरियाली के कारण शहरी जीवन की भागदौड़ से राहत पाने का आदर्श स्थान बन जाता है, जबकि सर्दियों में यह बर्फीले दृश्यों का आनंद लेने के लिए पर्यटकों को आकर्षित करता है। पहाड़ी इलाका होने के कारण यहां अक्सर ही बादल डेरा डाले रहते हैं और कभी भी बारिश हो जाती है लेकिन जुलाई-अगस्त के महीनों में यहाँ खूब वर्षा होती है।

कैसे जाएँ

पालमपुर सड़क और हवाई मार्ग से देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। पालमपुर की दिल्ली से दूरी लगभग 460 किलोमीटर है। नजदीकी हवाई अड्डा गग्गल की पालमपुर से दूरी लगभग 35 किलोमीटर है। दिल्ली और चंडीगढ़ से यहां के लिए नियमित उड़ानें संचालित की जाती हैं। दिल्ली से पालमपुर के लिए हिमाचल परिवहन की नियमित बस सेवा भी उपलब्ध है। आप अपनी कार या टैक्सी द्वारा भी पालमपुर जा सकते हैं।

निष्कर्ष

आखिर में मैं कहना चाहूँगा के पालमपुर एक ऐसी खूबसूरत घाटी है, जो मन और आत्मा दोनों को सुकून देती है। यहां का सुहावना मौसम, बर्फ से लदी धौलाधार पर्वत श्रृंखला, हरी-भरी और ऊंची–नीची घाटियां, कल-कल करता हुआ पानी, सर्पीली सड़कें और मीलों फैले चाय बागानों की सुंदरता सैलानियों को आकर्षित करती है। यहां की सरल जीवन शैली, पहाड़ी संस्कृति और स्थानीय व्यंजन भी पर्यटकों को बहुत भाते हैं। मेरा मानना है कि प्रकृति की गोद में कुछ समय बिताना हो, तो पालमपुर निश्चित तौर पर एक बेहतरीन पर्यटन स्थल है।

♦ ♦ ♦

अगर देश को भ्रष्टाचार मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, मेरा यह मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य यह कार्य कर सकते – पिता, माता और गुरु।

- डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

युद्ध और शांति

- रवि कुमार सिंह
पी.एस.एस.

युद्ध और शांति मानव सभ्यता के दो ऐसे पहलू हैं जो सदियों से इतिहास को आकार देते आ रहे हैं। युद्ध ने न केवल मानव जीवन और समाज पर गहरा प्रभाव डाला है, बल्कि शांति की आवश्यकता को भी उजागर किया है। यह एक विचारणीय प्रश्न है कि क्या शांति स्थापित करने के लिए युद्ध अनिवार्य है या इसके लिए कोई वैकल्पिक उपाय अपनाए जा सकते हैं। इस संबंध में हम विश्व के प्रसिद्ध युद्धों, विशेष रुप से प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध, भारत-पाकिस्तान युद्ध और वर्तमान रूस-युक्रेन संघर्ष के संदर्भ में युद्ध और शांति के जटिल संबंधों का विश्लेषण करेंगे। साथ ही इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करेंगे कि क्या युद्ध शांति का एकमात्र साधन है।

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) : आधुनिक युद्ध का आरंभ

प्रथम विश्व युद्ध का कारण यूरोपीय शक्तियों के बीच बढ़ती साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा थी। यह युद्ध मानव इतिहास का पहला ऐसा संघर्ष था जिसमें लगभग पूरी दुनिया शामिल हुई। 4 वर्षों तक चले इस युद्ध ने लाखों लोगों की जान ली और वैश्विक भू-राजनीति को पूरी तरह बदलकर रख दिया।

- **प्रमुख कारणः**
  - साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा
  - सैन्य गठबंधनों की राजनीति
  - आर्चड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड की हत्या
- **परिणामः**
  - लीग ऑफ नेशंस की स्थापना
  - वर्साय संधि के तहत जर्मनी पर कठोर प्रतिबंध
  - यूरोप में सामाजिक और आर्थिक अस्थिरता

यह युद्ध एक सबक के रुप में सामने आया कि सत्ता और साम्राज्यवाद के लिए लड़ाई केवल विनाश और अस्थिरता को जन्म देती है।

द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) : मानव इतिहास का सबसे घातक संघर्ष

द्वितीय विश्व युद्ध प्रथम विश्व युद्ध की शांति प्रक्रिया की विफलताओं का परिणाम था। इस युद्ध ने आधुनिक हथियारों और सामूहिक विनाश के साधनों का इस्तेमाल करते हुए पूरे विश्व को एक बार फिर तबाह कर दिया।

- **प्रमुख कारणः**
  - वर्यास संधि की असफलता
  - नाजीवाद और फासीवाद का उदय
  - जापान, जर्मनी और इटली का आक्रमणकारी रवैया

परिणामः

संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) की स्थापना

अमेरिका और सोवियत संघ के बीच शीत युद्ध का आरंभ, विश्व की नई राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना।

द्वितीय विश्व युद्ध ने यह साबित कर दिया कि युद्ध का अंत शांति सुनिश्चित नहीं करता, बल्कि यह भविष्य के संघर्षों की नींव रख सकता है।

भारत-पाकिस्तान युद्ध : विभाजन और संघर्ष

1947 में भारत के विभाजन के बाद से भारत और पाकिस्तान के बीच कई युद्ध हुए है। इनमें 1947, 1965, 1971 और 1999 के कारगिल युद्ध शामिल हैं। इन युद्धों के कारण मुख्यतः कश्मीर विवाद और सीमाओं पर अस्थिरता रही है।

- **मुख्य घटनाएं:**
  - 1947 : कश्मीर के विलय को लेकर पहला युद्ध
  - 1965 : ऑपरेशन जिब्राल्टर और ताशकंद समझौता
  - 1971 : बांग्लादेश का गठन
  - 1999 : कारगिल युद्ध

इन युद्धों ने यह दर्शाया की सीमा विवाद और राजनीतिक मतभेद हिंसक संघर्ष का कारण बन सकते हैं।

रूस-यूक्रेन युद्ध : 21वीं सदी का सबसे बड़ा संघर्ष

रूस और यूक्रेन के बीच चल रहा युद्ध न केवल क्षेत्रीय विवाद है, बल्कि यह वैश्विक भू-राजनीतिक तनाव का भी प्रतीक है।

- **मुख्य कारणः**
  - युक्रेन का नाटो (NATO) में शामिल होने की संभवाना
  - रूस की सामारिक चिंताएं और उसकी ऐतिहासिक सीमाएं
  - क्रीमिया पर कब्जा (2014) और डोनबास क्षेत्र में संघर्ष

- **परिणाम**
  - हजारों निर्दोष लोगों की मौत और विस्थापन
  - ऊर्जा संकट और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव
  - पश्चिमी देशों और रूस के बीच तनाव बढ़ना

यह संघर्ष इस बात को दर्शाता है कि आज भी भू-राजनीति और शक्ति संतुलन के लिए बड़े देशों के बीच युद्ध की संभावना बनी हुई है।

युद्धः शांति स्थापित करने का साधन या मानवता पर संकट युद्ध की सकारात्मक और नकारात्मक भूमिका।

1. **सकारात्मक पक्षः**
   - तानाशाही और साम्राज्यवादी नीतियों के खिलाफ संघर्ष।
   - स्वतंत्रता और अधिकारों की रक्षा।
   - नई राजनीतिक व्यवस्थाओं का उदय।

2. **नकारात्मक पक्षः**
   - मानव जीवन का भारी नुकसान।
   - समाज और अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालिक प्रभाव।
   - अस्थिरता और नए संघर्षों का जन्म।

क्या शांति के लिए युद्ध आवश्यक है?

इतिहास के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि युद्ध से केवल अस्थायी समाधान मिलता है। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भी संघर्ष पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ। भारत-पाकिस्तान और रूस-युक्रेन जैसे उदाहरण यह दर्शाते हैं कि युद्ध से शांति स्थापित करना कठिन है।

युद्ध का विकल्प : शांति और कूटनीति

1. कूटनीतिक समाधानः
- अंतरराष्ट्रीय संगठन जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से संवाद।
- तनावपूर्ण देशों के बीच संधि और वार्ता

2. आर्थिक देशों के बीच संधि और वार्ता
- गरीबी और असमानता को समाप्त करना।
- शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ाना।

3. अंतरराष्ट्रीय सहयोग
- वैश्विक समस्याओं जैसे जलवायु परिवर्तन और आंतकवाद पर संयुक्त प्रयास।
- देशों के बीच व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

युद्ध और शांति के बीच का यह संघर्ष मानव सभ्यता के लिए एक बड़ा प्रश्न है। युद्ध कभी-कभी आवश्यक लग सकता है, लेकिन इसके दीर्घकालिक परिणाम हमेशा विनाशकारी होते हैं। इतिहास ने यह

बार-बार साबित किया है कि युद्ध से अस्थायी समाधान तो मिल सकता है, लेकिन स्थायी शांति सेवल कूटनीति, सहयोग और समझदारी से ही संभव है।

इसलिए यह समय की आवश्यकता है कि हम मानवता को विनाश से बचाने के लिए शांति और कूटनीति के विकल्पों को प्राथमिकता दें। केवल तभी हम एक ऐसे विश्व का निर्माण कर सकते हैं, जहां युद्ध नहीं बल्कि शांति मानव सभ्यता की पहचान है।

♦ ♦ ♦

महाभारत के सबक

मत करो

- युधुष्ठिर की तरह जुआ मत खेलो।
- कर्ण की तरह दुष्ट का एहसान मत लो।
- धृतराष्ट्र की तरह पुत्र मोह में मत पड़ो।
- कुन्ती की तरह अनुचित प्रयोग मत करो।
- द्रौपदी की तरह अनुचित जगह मत हंसो।
- दुर्योधन की तरह अनाधिकार हठ मत पालो।
- भीष्म की तरह अनुचित प्रतिज्ञाओं में न बांधो।
- दुःशासन की तरह नारी का अपमान मत करो।
- अश्वत्थामा की तरह अनियंत्रित मत हो जाओ।
- गांधारी की तरह नेत्रहीन का अनुसरण मत करो।
- शान्तनु की तरह काम में आसक्त मत हो जाओ।
- द्रोणाचार्य की तरह अर्धसत्य पर विश्वास मत करो।

अवश्य करो

- अभिमन्यु की तरह वीर बनो।
- कृष्ण की तरह धर्म का साथ दो।
- विदुर की तरह स्पष्टवादी शुभचिंतक बनो।
- घटोत्कच की तरह धर्म-कार्य में सहर्ष बलिदान दो।
- अर्जुन की तरह अपनी बागडोर भगवान के हाथों में सौंप दो।

संकलनकर्ता

- अनुष्का
कक्षा- बारहवीं
सुपुत्री नवीन चन्द्र

♦ ♦ ♦

कर्म बनाम भाग्य

- हिमांशु पाण्डेय
परियोजना अभियंता

हम सभी के जीवन में कभी न कभी ऐसा समय आता है जब हम सोचते हैं – जो हो रहा है, वो हमारे हाथ में है या सब पहले से ही तय है? क्या हम अपने भाग्य के गुलाम हैं, या अपने कर्मों से कुछ भी बदल सकते हैं?

यह सवाल सिर्फ मेरा या आपका नहीं है, यह सवाल हर इंसान के मन में आता है। कई बार मेहनत करने के बाद भी सफलता नहीं मिलती, तो मन में आता है कि शायद किस्मत ही ख़राब है। वहीं कभी-कभी बिना ज़्यादा मेहनत के भी चीज़ें आसानी से मिल जाती हैं, तब लगता है कि शायद भाग्य का साथ था। लेकिन सच क्या है? कौन तय करता है कि जीवन किस दिशा में जाएगा - हमारे कर्म या हमारा भाग्य?

कर्म - हमारी मेहनत, हमारा प्रयास

जब भी हम कोई काम करते हैं - चाहे पढ़ाई, नौकरी, खेती या घर का काम - वो सब हमारा कर्म होता है। कहा भी जाता है कि “कर्म किए बिना फल नहीं मिलता, और बिना प्रयास के भगवान भी मदद नहीं करते।" इस बात का गहराई से मतलब समझ में तब आया, जब मैंने खुद मेहनत से कुछ पाया।

कर्म हमारे हाथ में होता है। हम सुबह उठकर क्या करते हैं, कैसे बात करते हैं, कितनी ईमानदारी से काम करते हैं – ये सब हमारे कर्म हैं। और यही धीरे-धीरे हमारे भविष्य की दिशा तय करते हैं।

कई बार हम सोचते हैं कि बस किस्मत साथ दे तो सब ठीक हो जाएगा, लेकिन अगर हम खुद कुछ न करें तो किस्मत भी क्या करेगी?

भाग्य - जो हमारे हाथ में नहीं होता

अब बात करते हैं भाग्य की। कई बार हम पूरी मेहनत करते हैं, फिर भी परिणाम वैसा नहीं आता जैसा हम चाहते हैं। ऐसे में हम कहते हैं – “शायद किस्मत में नहीं था।”

और कई बार ऐसा भी होता है कि कोई बिना ज़्यादा प्रयास के सफल हो जाता है, या कुछ ऐसा मिल जाता है जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी।

भाग्य को आप ऐसे समझिए – हमारा जन्म कहाँ होगा, हमारे माता-पिता कौन होंगे, हम किस समय में पैदा होंगे – ये सब हम नहीं चुनते। यह सब पहले से तय लगता है।

भाग्य को नकारा नहीं जा सकता। यह जीवन की वो शक्ति है जो हमारे कर्म से पहले या उसके साथ-साथ चलती है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि अगर भाग्य अच्छा नहीं है तो हम कुछ कर ही नहीं सकते।

कर्म और भाग्य - दोनों साथ चलते हैं

असल में जीवन की दिशा कर्म और भाग्य - दोनों मिलकर तय करते हैं। जैसे नाव को चलाने के लिए एक पतवार और एक हवा की जरूरत होती है।

कर्म पतवार है – जो हमारे हाथ में है। और भाग्य वह हवा है – जो हमारे बस में नहीं होती, लेकिन सही दिशा में हो तो गति देती है।

अगर सिर्फ हवा हो लेकिन हम पतवार न चलाएं, तो नाव कहीं भी भटक सकती है। और अगर हम पतवार चलाएं लेकिन हवा ही उलटी हो, तो हमें और ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है। पर तब भी नाव धीरे-धीरे सही दिशा में बढ़ सकती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त चर्चा से मेरी समझ में यह आया है कि हमें कर्म पर भरोसा करना चाहिए, लेकिन भाग्य को नकारना नहीं चाहिए। भाग्य हमारी मेहनत को दिशा देने का काम करता है, लेकिन मेहनत ही वह शक्ति है जो हमारे भाग्य को भी बदल सकती है। अगर हम लगातार प्रयास करें, तो भाग्य भी धीरे-धीरे हमारे साथ चलने लगता है। और अगर हम केवल भाग्य के भरोसे बैठ जाएं, तो शायद वो भी साथ देना छोड़ दे।
अंत में, यही कहूँगा –

"कर्म करते रहो, भाग्य अपने आप साथ देगा।"

ज़िंदगी की राहें आसान नहीं होतीं, लेकिन अगर हम चलना न छोड़ें तो मंज़िल ज़रूर मिलती है।

♦ ♦ ♦

आप जिस तरह बोलते है, बातचीत करते है, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

\- महावीर प्रसाद द्विवेदी

मौत का उत्सव

- राजेंद्र सिंह भंडारी
परियोजना अधिकारी

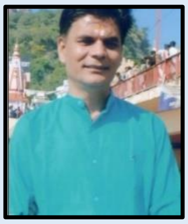

यह एक हादसा है, एक रहस्य है, एक घटना है, एक रिवाज है, एक संयोग है, एक नियम है, जीवनोत्थान की एक सीड़ी है, विनाश का कारण है, एक दुःख है, एक उत्सव है, एक अवसर है, या फिर यही संसार का परम सत्य है- इन बिन्दुओं पर ध्यान जाने से पहले, हम इंसान मौत का नाम सुनते ही थरथराने लगते हें और सोचने लगते हें कि ये मौत हमसे हमारी दौलत, शोहरत, यश, वैभव, विवेक, करुणा, रिश्ते नाते, सब छीन कर हमें भिखारी बना के छोड़ देगी। इसीलिए, मौत का बेसब्री से इन्तजार करने के बजाय, हम मौत से इधर उधर भागने की चेष्टा करते हें। खुद अपने दोस्तों, रिश्तेदारों, प्रियजनों और यहाँ तक कि अपने खुद के माँ बाप को मरघट तक छोड़ के आने के बावजूद भी हम मौत की तरफ आँख मूँद कर खड़े हो जाते हें और यही मानते हैं कि मौत आती होगी ओरों को, हम तो अमर हैं। मौत से भागने का मतलब है सांसारिक सत्य से अपने आप को जुदा रखना।

ज्ञानियों का ये कथन है कि यह जीवन एक झूठ है और मौत परम सत्य। हमारे दर्शनशास्त्री एवं खुद दर्शनशास्त्र भी इस ओर संकेत करता है कि हमारे पैदा होते ही हमें एक तरफ से जब जीवन मिलता है तो दूसरी तरफ से मौत भी एक नियमित गति से चलायमान हो जाती है। हमारे सारे शास्त्र ये कहते हैं कि वह मनुष्य जो मौत से भयभीत रहता है वह वास्तव में जिन्दगी जी ही नहीं रहा होता है। जीवन को इसके मूलस्वरूप में जीने एवं जीवन के सत्य को समझने वाले को मौत का कैसा डर। जीवन को वही सही मायने में जी पाता है जो मौत के महत्व को समझता है, और मौत के महत्व को वही समझ पाता है जो पूर्ण या आंशिक रूप से सत्य की खोज में निकल चुका हो।

सत्य की खोज भी एक अजीब खोज है, जो खुद से बाहर संसार में सत्य खोजने निकले उन्हें खाली हाथ ही लौटना पड़ा। लेकिन जो संसार की तरफ आँख मूँद कर खुद के ही भीतर पदार्पण करने का साहस जुटा पाया, वही सत्य की खोज करने में कामयाब रहा। मैं ये नहीं कहता हूँ कि हर किसी को पूर्ण सत्य की प्राप्ति हो गई, लेकिन अगर सत्य की असंख्य किरणों में से एक-दो किरण तक भी मनुष्य पहुँच पाया तो जीवन में एक क्रांति घटनी शुरू हो जाती है।

वह व्यक्ति जो सत्य की खोज में निकल चुका हो, उसमें इतनी शक्ति आ जाती है कि वह सही को सही और गलत को गलत कहने में कोई संकोच नहीं करता। दरअसल, संकोच कैसा, वह बिना किसी भय, भेदभाव, के वही कहता है जो सत्य की खोज के दौरान सीखता है। ऐसे ब्यक्ति में किसी प्रकार का दिखावा नहीं रह जाता है। जो भी उसके साथ घटता है वह उसी को सत्य मानता है, और हकीकत में वही सत्य होता भी है। दुर्भाग्यवश, हमारा समाज जो अपनी शुद्ध आत्मा के ऊपर, सदियों सदियों से झूठ के अशुद्ध आवरण लेकर घूमता है, उसको सत्य की तरफ अग्रसर व्यक्ति पागल लगता है। इसलिए, बुद्ध, महावीर, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, जैसे प्रबुद्ध आत्माओं को सांसारिक प्रताड़ना का सामना करना पड़ा।

शास्त्रों का ये भी मानना है कि वे व्यक्ति जो खुद की खोज की बिना ही समाज, पंडित, ज्ञानियों की बात को मानकर, धन, दौलत, जमीन, जायजाद को ही जीवन का सत्य समझ बैठे है, उनके लिए स्वाभाविक रूप से मौत एक अभिशाप रहेगी, और मौत का भय उनको पल पल कम्पित करता रहेगा। लेकिन, जो व्यक्ति सत्य की खोज में निकल पड़े हें, या ये कहें वो व्यक्ति या वे महापुरुष जिन्होंने आध्यात्मिकता या दर्शनशास्त्र पर विश्वास किया और सत्य की खोज में अपने ही भीतर डुबकी लगाने का साहस किया, वे महापुरुष मौत को एक त्यौहार के रूप में मनाने लगे। ऐसे विद्वानों एवं महापुरुषों की अर्थी गीत, संगीत, ढोल बाजे के साथ उठने लगी।

मेरा भी अपना यही विचार है कि मौत केवल एक रूपांतरण मात्र है। एक ऐसा रूपांतरण जो मानव जीवन के मामूली कद को एक विराट रूप में रूपांतरित करता है। जिन्दगी में होश सँभालने के बाद हम ये देखते आए हैं कि एक नदी के समुद्र में मिलते ही नदी का अपना अस्तित्व समाप्त हो जाता है। लेकिन क्या यह मान लिया जाए कि नदी की वास्तविक रूप में मौत हो गई या फिर इस सत्य को समझ लिया जाए कि नदी समुद्र में मिलते ही अपने विराट स्वरुप में रूपांतरित हो गई।

एक छोटा सा बीज जो हम इस बंजर जमीन के हवाले करते हें, वह बनते बनते एक विशाल पेड़ बन जाता है और उस छोटे से बीज का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। क्या हम ये मानें कि उस बीज की मौत हो गई, या ये समझें कि एक छोटे से बीज का एक विशाल बृक्ष में रूपांतरण हो गया। एक छोटे से बीज ने एक विशाल स्वरुप ले लिया है, जो वास्तविक और प्राकृतिक रूप से असली में एक बीज का धर्म है।

हम इंसानों की औसत आयु, जो सौ वर्ष से घटते घटते आज नीचे आ रही है, इसमें बचपन, जवानी, बृद्धावस्ता जैसे कई चरण हें। हम सभी कल तक छोटे अनजान बच्चे थे, जो धीरे धीरे युवावस्था में प्रवेश कर गए। यहाँ पर भी क्या यह मान लिया जाए कि हमारा बचपन मर गया या ये समझना उचित होगा कि हमारा बचपन होते होते युवावस्था में रूपांतरित हो गया और हमारी इस जिन्दगी में अब बचपन अदृश्य हो गया। जवानी भी धीरे धीरे ढलने लगी और हम बूढ़े हो गए। फिर से, क्या यह मान लिया जाए कि हमारा यौवन मर चुका है या ये समझा जाए कि यौवन होते होते एक बृद्ध शरीर में रूपांतरित हो गया......

उपरोक्त सन्दर्भ में, मौत भी एक विशाल रूपांतरण है जो हमें हमारे विशालतम रूप में रूपांतरित करता है.....

हम इंसान जो स्वभावतः अज्ञानी हैं मौत का नाम सुनते ही कापने लगते हैं। यह अज्ञान हमने खुद अर्जित नहीं किया, बल्कि हमारे तथाकथित समाज की यही ब्यवस्था है कि हम खुद को सत्य से बहुत दूर रख के झूठ के आवरण में जीने को अपनी आदत बना लें। हम लोग अगर सत्य के मार्ग की तरफ अग्रसर हों भी तो कैसे। हमें फुर्सत ही कहाँ है सत्य के मार्ग पर चलने की। सत्य के मार्ग पर चलने की प्रथम शर्त यही है कि हम सबसे पहले अपने को जानें। अपने को जानने के लिए मंदिर, मस्जिद, गिरजाघऱ, गुरुद्वारा का सैर सपाटा नहीं बल्कि अपने खुद के भीतर की तरफ रुख को मोड़ने का साहस चाहिए। अपने भीतर घुसने के लिए यह अनिवार्य है कि हम एकांत की तरफ अग्रसर हों। लेकिन हमारा समाज, और यहाँ तक कि हमारे खुद के मां बाप हमें एकांत में छोड़ते ही नहीं। हम उलझते उलझते

सांसारिक कार्यकलापों में इतने उलझ गए कि हम एक पल को भी अगर अकेले हो जाएं तो हमें परेशानी होने लगती है। फिर हम ढूंढते हैं साथ के लिए एक भीड़, खुद की याद तक न आ सके....

सिनेमाघरों, शराबघरों में ये दिनों दिन बढ़ती हुई भीड़ इस बात को सिद्ध करती है कि हमें बचपन से ही तालीम दी गयी है कि हम चाहे कितने ही बड़े अपराध करना शुरू कर दें लेकिन किसी भूल से भी कभी अकेले न होने पाएँ। उजाले की एक किरण ही इन पाखंडियों की रोजी, रोटी पर एक हमला साबित हो सकता है। यही हमारे सत्य की खोज में एक बड़ी बाधा बना हुआ है.....

एक बार किसी व्यक्ति पर अगर सत्य की एक किरण भी पड़ जाए तो वह व्यक्ति सत्य के सूर्य तक पहुंचने में समर्थ हो सकता है। ये सूर्य की किरण तभी पड़ती है जब इंसान को ये दुनियाँ निरर्थक लगने लगती है। निरर्थकता का मतलब यही है कि हमें हमारी सत्य आत्मा के ऊपर फैली ये झूठ की परतें जीवन में कुछ भी ऐसा हासिल नहीं करने देंगी जिसे हम मृत्य के बाद भी अपने साथ ले जा सकें। यही निरर्थकता हमें सत्य की खोज में पहाड़ों की तरफ ले जाने को विवश करती है। यहाँ पर एक बात और आती है कि अधिकांश महापुरुष पहाड़ों पर ही सच की खोज में क्यों निकलते हैं।

इस शरीर को अपने बारे में बहुत गुमान होता है, लेकिन आप इस धरती का महज एक छोटा सा हिस्सा हैं। इसलिए हम लोग शरीर को ज्यादा से ज्यादा धरती के संपर्क में रखने की कोशिश करते हैं, जिससे उसको लगातार इस बात का अहसास होता रहे कि वह इसी धरती का एक छोटा सा हिस्सा है। यही वजह है कि आध्यात्मिक लोग हमेशा नंगे पैर रहते हैं और जमीन पर बैठना पसंद करते हैं। जमीन पर पालथी मारकर बैठने से शरीर को कहीं न कहीं इस बात का अनुभव होता है। जिस क्षण यह धरती के संपर्क में आता है, इसे तुरंत अहसास हो जाता है कि यह भी धरती ही है। यही वजह है कि ज्यादातर आध्यात्मिक लोग पहाड़ों में जाना व रहना पसंद करते हैं, क्योंकि पहाड़ों में याद दिलाने का यह काम ज्यादा बड़े पैमाने पर होता है। पहाड़ वो जगह है, जहां धरती आपसे मिलने के लिए ऊपर उठी हुई है। अगर आप पहाड़ों में बनी गुफा में चले जाएं तो आपको अपने चारों तरफ धरती का अहसास होगा। यह अपने आप में याद दिलाने का एक जबरदस्त तरीका है। इसलिए पहाड़ों में रहना चुनौतीपूर्ण होते हुए भी योगी अक्सर अपने रहने के लिए पहाड़ों को चुनते हैं। वहां शरीर को लगातार याद दिलाया जाता रहता है, मन या बुद्धि को नहीं, कि वह नश्वर है।

मेरा खुद का भी यही कथन है कि मौत एक उत्सव है। वे इंसान जो इस सत्य को समझने में कामयाब हो गए, वे दूसरों को तो क्या खुद को भी कोई पीड़ा नहीं देते, वे हर कदम रखने से पहले ये सोचने लगते हैं कि मेरी लापरवाही से किसी चीटी को भी दर्द न पहुंचे। मौत के परम सत्य जानने के पश्चात ही इंसान सही मायनों में जिन्दगी को जीने की शुरुआत करता है। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि जिन्दगी से मोह में केवल प्रलोभन देता है, और मौत से दोस्ती, मौत से पहले, जिन्दगी को सही तरीके से जीने की प्रेरणा। मौत का सत्य जान लेना ही मनुष्य जाति को सारे दुःख दर्द, महत्वाकांक्षा, लोभ, मोह, अहंकार से दूर रखता है। यही स्वर्ग है।

♦ ♦ ♦

डिजिटल गिरफ्तारी: मेरी कहानी एक चेतावनी

- दिशा राठौर
परियोजना अभियंता

आजकल डिजिटल दुनिया में ठगी के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं, और मैं खुद इसका शिकार बन चुकी हूं। मैंने अपनी कहानी को साझा करना इसलिए जरूरी समझा ताकि और लोग सतर्क हो सकें।

कुछ समय पहले, मुझे एक अनजान कॉल आई जिसमें एक संदिग्ध पार्सल के मेरे नाम से डिलीवरी होने की बात कही गई। मेरी जिज्ञासा बढ़ी, और मैं कॉलर की बातों में फंस गई। इसके बाद उन्होंने मुझे स्काइप (Skype) पर बुलाया, जहां वे खुद को पुलिस अधिकारी बताने लगे।

धीरे-धीरे, उन्होंने मुझे एक मनोवैज्ञानिक जाल में फंसा लिया। उन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि मेरे नाम पर एक आपराधिक मामला दर्ज हो चुका है और मैं उन्हें 'बुरे लोगों' को गिरफ्तार करने में मदद कर सकती हूं। डर और भ्रम की स्थिति में, मैं उनके निर्देशों का पालन करती गई।

उन्होंने मेरे आधार कार्ड, बैंक स्टेटमेंट्स और यहां तक कि मेरे परिवार की जानकारी भी मांग ली। उनकी बातों में आकर, मैंने बड़ी रकम उनके कहे अनुसार ट्रांसफर कर दी।

इस घटना ने मुझे मानसिक, आर्थिक और भावनात्मक रूप से बुरी तरह प्रभावित किया। मुझे एहसास हुआ कि कैसे डिजिटल ठग, लोगों की मासूमियत का फायदा उठाते हैं और उन्हें अपने जाल में फंसाते हैं।

सावधानी ही सुरक्षा है

- अनजान कॉल्स पर व्यक्तिगत जानकारी कभी न दें।
- किसी भी तरह के भुगतान से पहले सत्यापित करें।
- पुलिस या किसी भी सरकारी अधिकारी को अपने दस्तावेज़ या बैंक डिटेल्स न दें, खासकर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स (स्काइप, इंस्टाग्राम, इत्यादि) पर।
- हमेशा अपने परिवार और दोस्तों से ऐसी परिस्थितियों में सलाह लें।

1. अगर आप भी ऐसी किसी स्थिति में फंसे, तो तुरंत साइबर क्राइम पोर्टल (https://cybercrime.gov.in/) में शिकायत दर्ज करें। शिकायत अपने नजदीकी साइबर पुलिस स्टेशन में करना ज्यादा फलदायी साबित होगा क्योकि आपकी कम्प्लेंट डायरेक्ट आपके नजदीकी थाने में रजिस्टर होगी न की किसी और थाने से ट्रांसफर होगी।
2. एक कम्प्लेंट फॉर्म में अपनी सारी डिटेल्स भरें और यदि कुछ पूछना हो या फॉर्म मे कोई दिक्कत हो तो साइबर हेल्पलाइन फोन संख्या 1930 मे कॉल करें। इस फॉर्म को 48 घंटे के अंदर भरें।
3. अपने बैंक में शिकायत दर्ज करें और ग्राहक विवाद फॉर्म जमा करें।

4. अगर आपकी शिकायत किसी स्थापित इकाई से है यानी किसी कंपनी या बैंक से, तो आप RBI Ombudsman पोर्टल (https://cms.rbi.org.in/cms/indexpage.html#eng) में शिकायत दर्ज करें। अधिक जानकारी के लिए RBI हेल्पलाइन नंबर (1448) पर कॉल करें।

पैसा और पैसों की जानकारी बहुत जरूरी है लेकिन पैसा सब कुछ नहीं होता है। जो होता है अच्छे के लिए होता है, यदि एक रास्ता बंद होता है तो दूसरा खुलता है। दुनिया किसी के लिए नही रुकती, परंतु आपके रुकने से आपकी दुनिया ज़रूर ठहर जाएगी। मेरी कहानी एक सीख है। डिजिटल युग में सतर्क रहना ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।

♦ ♦ ♦

बच्चों की फुलवारी

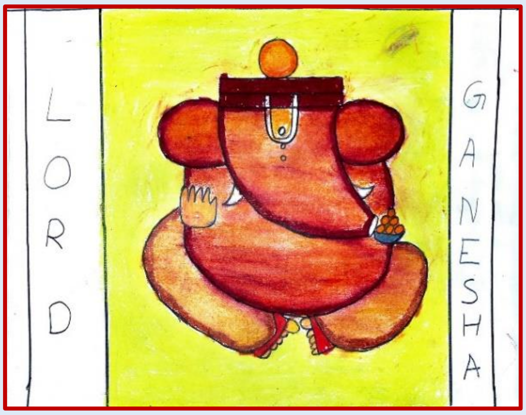

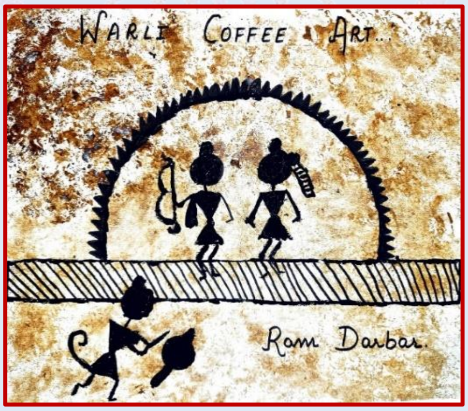

- इशानी वार्ष्णेय
कक्षा- पाचवीं
सुपुत्री नितिन कुमार वार्ष्णेय

ख़ुद से दोस्ती कैसे करें?

- जय कुमार
परियोजना अभियंता

हमारे जीवन में बहुत से रिश्ते होते हैं – माता-पिता, भाई-बहन, साथी, दोस्त, सहकर्मी– और हम इन सभी रिश्तों को निभाने में लगे रहते हैं। लेकिन एक रिश्ता ऐसा है, जो अक्सर सबसे ज़्यादा अनदेखा होता है – ख़ुद से हमारा रिश्ता।

अक्सर हम दूसरों को खुश करने में, उनकी अपेक्षाओं को पूरा करने में, समाज के मानकों पर खरे उतरने में, ख़ुद को ही भूल जाते हैं। लेकिन जब तक हम अपने आप से जुड़ना, ख़ुद को समझना, और स्वयं को स्वीकार करना नहीं सीखते, तब तक हम किसी भी रिश्ते में सच्चा संतुलन नहीं बिठा सकते है।

ख़ुद से दोस्ती क्यों ज़रूरी है?

- जब आप ख़ुद से जुड़े होते हैं, तो बाहरी मान्यता (validation) की ज़रूरत कम हो जाती है।
- अपनी तारीफ़ और आलोचना संतुलित तरीके से लेना आता है।
- आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ता है।
- जीवन की असफलताओं से जल्दी उबरना आसान हो जाता है।

ख़ुद से दोस्ती करने के 7 सरल लेकिन गहन कदम

1. **ख़ुद को जानिए - ख़ुद से सवाल पूछिए**

   हर दिन ख़ुद से एक छोटा-सा सवाल पूछें:
   - "मैं आज कैसा महसूस कर रहा हूँ?"
   - "मुझे क्या चीज़ खुश करती है?"
   - "मुझे क्या बात दुख देती है?"

   ये सवाल सुनने में छोटे लग सकते हैं, लेकिन इनके जवाब आत्म-अन्वेषण का दरवाज़ा खोलते हैं।

2. **अपनी कमजोरियों को स्वीकार करें**

   हम सभी में कमियाँ होती हैं – गुस्सा, डर, आलस्य, असुरक्षा। लेकिन जब आप इन्हें छिपाने की बजाय स्वीकार करते हैं, तो उनका बोझ हल्का हो जाता है। ख़ुद से कहिए: “मैं जैसा हूँ, ठीक हूँ। और मैं बेहतर बन सकता हूँ।”

3. **ख़ुद के साथ समय बिताइए**

   कभी-कभी अकेले वक़्त बिताना बहुत सुकूनदायक होता है।
   - किसी पार्क में सैर के लिए जाइए।
   - अपनी पसंदीदा चाय पीते हुए सुकून भरा समय बिताएं।
   - बिना मोबाइल के सिर्फ़ ख़ुद के साथ कुछ समय बिताइए।

   आप पाएँगे कि आप ख़ुद से बातें करने लगे हैं – और यह बहुत सुंदर अनुभव होता है।

4. ख़ुद को सराहना करें - बिना शर्त के

छोटी-छोटी जीत पर ख़ुद को शाबाशी दीजिए।

- सुबह समय पर उठे? वाह!
- किसी को मुस्कुराकर देखा? बेहतरीन!
- अपने मन की बात कह पाए? गर्व की बात है!

दूसरों की तारीफ़ का इंतज़ार करने से बेहतर है, ख़ुद की तारीफ़ करना सीखिए।

5. अपने इनर सर्कल को शांत करना सीखिए

हमारे अंदर एक आवाज़ होती है जो हमें बार-बार नीचे गिराने की कोशिश करती है –
"तू फेल हो जाएगा",
"तू अच्छा नहीं है", "कोई फ़र्क नहीं पड़ता"।
इस आवाज़ को पहचानिए और धीरे-धीरे उससे दूरी बनाइए। ख़ुद से कहिए:
“मैं कोशिश कर रहा हूँ, और यही सबसे बड़ी बात है।”

6. अपनी सीमाएँ तय करें

ख़ुद से दोस्ती का मतलब है – अपनी ऊर्जा की रक्षा करना।

- हर जगह 'हाँ' मत कहिए।
- ज़रूरत हो तो 'ना' कहना सीखिए।
- जो आपको मानसिक रूप से थकाता है, उससे थोड़ा दूर रहिए।

यह आत्म प्रेम (Self-Love) नहीं, बल्कि आत्म सम्मान (Self-Respect) है।

7. ध्यान और लेखन को अपनाइए

रोज़ 5-10 मिनट का ध्यान या लेखन आपकी सोच को स्पष्ट करता है।

- अपने विचार लिखिए।
- दिन में क्या अच्छा या बुरा लगा, वह दर्ज कीजिए।
- ख़ुद को खुलकर अभिव्यक्त करना शुरू कीजिए।

धीरे-धीरे, ये आदतें आपको अंदर से मजबूत बनाएँगी।

जब आप ख़ुद के दोस्त बनते हैं...

- तब आप अकेले होकर भी अकेले नहीं होते।
- तब हर असफलता एक सीख बन जाती है।
- तब आप ख़ुद को उसी रूप में स्वीकार करते हैं, जैसे आप हैं – बिना शर्तों के।

निष्कर्ष

ख़ुद से दोस्ती करना कोई एक दिन का काम नहीं, बल्कि एक निरंतर यात्रा है।

हर दिन थोड़ा-थोड़ा करके आप ख़ुद को बेहतर समझते हैं, अपनाते हैं और संवारते हैं। और जब आप ख़ुद से सच्ची दोस्ती कर लेते हैं, तब पूरी दुनिया आपके साथ दोस्ती करना चाहती है।

♦ ♦ ♦

बारिश

- रजनी शर्मा
कार्यालय सहायक

वर्षा, बरसात, बारिश या बरखा चाहे कुछ भी कह लीजिए सबका अर्थ एक ही है। जब तपती जलती धरती पर पानी की एक बूँद भी गिरती है और उस बूँद के गिरने से जो मिट्टी की सुगंध आती है, उस सुगन्ध मात्र से ही हमें ऐसे आनन्द की अनुभूति होती है कि हमारी आँखें अनायास ही बंद हो जाती हैं मानो उस सुगंध को हम अपनी आत्मा में बसा लेना चाहते हैं।

बारिश का हर किसी के लिए एक अपना ही महत्व है। जो बरसात एक के लिए ख़ुशी का कारण है तो दूसरे के लिए तकलीफ़ का कारण बन सकती है। बारिश या बरसात हमेशा ताज़गी या ख़ुशी लाए ये आवश्यक नहीं है। इसे इस तरह समझते हैं, आप अवकाश लेकर घर पर है, सुबह से तेज धूप है। दोपहर तक तापमान 35 डिग्री तक पहुंच गया और शाम होने से पहले आसमान में काले बादल घिर आयें और झमाझम बारिश होने लगे। उस समय आपको जो राहत और ख़ुशी मिलेगी वो शायद आपके मित्र को न मिले जो इस बारिश के कारण अपनी मोटरसाइकिल लिए बारिश में सड़क के बीचों बीच जाम में फँसा है। वह इस बारिश को मन ही मन कोस रहा होगा।

कुछ लोग बारिश देख ख़ुश हो जाते हैं तो कुछ दुःखी। बारिश प्रेमियों को अपने प्रेमी की याद दिला देती है ऐसा मैंने कई कविताओं और कहानियों में पढ़ा है। प्रेमियों के लिए तो बारिश से जुड़े कई विरह गीत भी लिखे गए हैं। बारिश से जुड़े कई लोक-गीत, कवितायें यहाँ तक के नृत्य भी हैं। जिन प्रदेशों में बारिश कम होती है, वहाँ बारिश का आना उत्सव की तरह है। वहीं जहाँ बारिश की अधिकता है वहाँ ये रोज़मर्रा की बात जैसी है जिसके होने ना होने का कोई ख़ास अर्थ नहीं है।

मेरा मानना है हर किसी की कोई ना कोई बारिश से जुड़ी याद या घटना अवश्य होती है। जब बारिश होती है मुझे मेरे बचपन से जुड़ी एक हास्यास्पद घटना याद आ जाती है। तेज बारिश थी मेरे पेट में दर्द था। हमारे पड़ोस में ही एक डॉक्टर रहते थे जो हमारे अच्छे पड़ोसी भी थे। माँ ने उनसे दवा लेने को कहा तो मैं और मेरा भाई हाथ में छतरी लेकर तुरंत घर से निकल पड़े। हमें छतरी पकड़ने का अवसर कम ही मिलता था, इस ख़ुशी में पेट का दर्द भूल सा गया था। हम दोनों भाई बहन एक छतरी के तले चल पड़े। चार कदम ही चले होंगे के हवा का तेज झोंका आया और छतरी उड़ा ले गया और भाई के हाथ में केवल छतरी का डंडा रह गया। हम दोनों का हंस-हंस कर बुरा हाल था, भीगते हुए बिना दवा लिए ही घर वापस आ गए। पेट दर्द छतरी के साथ उड़ चुका था। वो बारिश में भीगने की याद आज भी एक अलग ही आनंद दे जाती है।

बारिश हमें क्यों राहत या शांति दे जाती है इसके पीछे एक वैज्ञानिक कारण भी है। बारिश की आवाज़ एक प्रकार की व्हाइट नॉइज़ होती है, जो पृष्ठभूमि में चलती रहती है और हमारे मन मस्तिष्क को आराम देती है। यह अवांछित आवाज़ों को ढक देती है जैसे कि ट्रैफिक या लोगों की बातचीत, जिससे मन शांत महसूस करता है। इस कारण ही बारिश के संगीत का उपयोग कई रिकॉर्डिंग्स में भी किया जाता है, जिसे सुनने से नींद आने में मदद मिलती है।

जब भी बारिश होती है वातावरण में ठंडक आ जाती है और ताज़ी ठंडी हवा बहने लगती है। यह शरीर और मन दोनों को ठंडक और सुकून देती है, जिससे मन शांत होता है।

बारिश घास, पेड़, पोधों और खेत खलिहानों को धोकर हरा निखरा हुआ बना देती है और हरा रंग हमेशा आँखों और मस्तिष्क को शांत करता है।

मुझे लगता है बारिश ईश्वर द्वारा बनाया गया एक "पॉज़ बटन" है जो कहता है जब तक बारिश हो रही है तब तक तो रुको... ठहरो... थोड़ा साँस तो लो। अपनी भाग दौड़ भरी जिंदगी को ज़रा रुकने को कहो। प्रकृति को निहारो, बूंदों के गिरने का संगीत सुनो।

अगली बार जब भी बारिश आए तो घर के बिस्तर, गर्म चाय और पकोड़ो से भरी थाली को छोड़ कर घर के बाहर या घर की बालकनी तक जरूर आयें। मिट्टी की सोंधी ख़ुशबू का आनंद लें। पत्तों पर गिरती हर बूँद का संगीत सुनें। हरियाली को निहारें। अगर ऑफिस में हैं तो कुछ पल खिड़की के पास अवश्य जाएं, कुछ ना कुछ ऐसा अवश्य दिख जाएगा जो मन को शांत कर देगा, थोड़ा सा भीगने में भी कोई बुराई नहीं, हो सकता है मन मस्तिष्क से थोड़ी सी नकारात्मकता ही बह जाए।

♦ ♦ ♦

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएँ सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा का भक्त होना चाहिए।"

- श्यामसुंदर दास

प्रोत्साहन

- भुबन दास
पी.एस.एस.

प्रोत्साहन एक ऐसा शब्द है जिससे हम सब भलीभाँति परिचित हैं, इसे सुनते ही तन-मन उत्साह से भर जाता है। हमारे सीडैक कार्यालय में भी हर केन्द्र की तरह ही उत्साहपूर्वक हिंदी दिवस का कार्यक्रम 14 सितंबर को मनाया जाता है, उसकी तैयारी करने के लिये हमारे हिंदी अधिकारी निरंतर उत्साह वर्धन करते रहते हैं, समय समय पर और भी हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की जाती है, जिससे सबको हिन्दी में कार्य करने का प्रोत्साहन मिलता रहता है। यह एक सतत चलने वाला प्रयास है, हिंदी मे कार्य करने कि लिए ईनाम के रुप में प्रोत्साहन राशि भी प्रदान कि जाती है।

मेरा पढ़ाई-लिखाई बांग्ला माध्यम से हुआ है, इस कारण मुझे हिंदी पढ़ने-समझने में कठिनाईया होती थी, परन्तु अब कार्यालय में अपने सहयोगी के सहयोग से मैंने अथक प्रयास के बाद हिंदी में टंकण का कार्य भी आसानी से सीख लिया है, और पिछले साल ही भारत सरकार के अन्तर्गत राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित पारंगत पाठ्यक्रम को भी सफलता पूर्वक पूरा किया, जिससे मेरे आत्मविश्वास को और भी बल मिला। मेरा आप सबसे विनम्र निवेदन है कि आप लोग भी इस कार्यक्रम का लाभ उठाएँ, जिससे हिंदी में कार्य करने में सहूलियत होगी। इससे एक ललक भी पैदा होती है, हम भारतीय नागरिक होने के साथ साथ यह हमारा एक नैतिक दायित्व भी है, हिंदी जन-जन की भाषा हो इसका प्रयास हम सबको करना चाहिए।

हिंदी हमारी राजभाषा है, हमें प्रयास करना चाहिए कि हिंदी भाषा को कैसे पोषण मिले। यह भाषा और फले-फूले, जन जन की भाषा हो। भाषा ही एकमात्र माध्यम है जिससे एक दूसरे को एक सूत्र में पिरोता है, और आपस मे आदान-प्रदान-मेल-जोल को बढ़ावा देते हैं, एक दुसरे को प्रोत्साहित करना भी हमरा कर्यव्य है, न कि निरुत्साहित करना, शुरु शुरु में त्रुटियां हो सकती हैं, तो भी हमे प्रयास तो करना ही चाहिए, एक न एक दिन हम मंजिल पर जरुर पहुँच सकते हैं। हमें हर हाल में प्रोत्साहन देने चाहिए, प्रोत्साहन मिलना चाहिए, प्रोत्साहित होना भी चाहिए, तभी तो हमारे हिन्दी और भी पल्लवित, मुखरित, शशक्त, भाषा बनेगी, आज सिर्फ भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में भी हिंदी का प्रचार-प्रसार होने लगा। पहले हिंदी में बात करने में कुंठा बोध होता था, परन्तु अब यह गलतफहमी भी दूर हो गयी, हिंदी फिल्मे, हिंदी गाने सारी दुनिया में देखी और सुनी जाती है। ऐसी कोई जानकारी नहीं है जो कि हिंदी मे न मिलता हो, यह सब प्रोत्साहन से ही सम्भव हो पाया है। हम सबको हिन्दी भाषा को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

♦ ♦ ♦

वापसी की राह

- किरण वालिया
परियोजना अभियंता

आज भी याद है, वो घर का सुंदर आँगन,
जन्नत सी वादियों में बीता हुआ बचपन।
आज भी याद हैं, डल झील से लिपटे शिकारे,
वादी में महकते केसर के फूल प्यारे-प्यारे।
कश्मीर था धरती पर जन्नत का मंज़र,
फिर आया ऐसा दिन, जब सपने हो गए बंजर।
"हिंदू हूँ मैं"... यह जानकर मुझे इंसान न समझा गया,
पल भर में, मेरे ही घर से मुझे बेघर कर दिया गया।
क्या कसूर था मेरा, जो एक पंडित कहलाया?
इंसान हूँ, लहू मेरा भी लाल है... क्या यह काफ़ी नहीं था?
रूह भी काँप उठी देखकर, था ऐसा वो मंज़र,
इंसानियत को छोड़, बस घोंप दिया गया सीने में ख़ंजर।
सुना है उस घर में अब बस रह गई हैं,
खून से रंगी दीवारें, बिखरे हुए सपने, और खोया हुआ बचपन।
झेलम की लहरें भी अब आँसुओं-सी बहती थीं,
घाटी का आँचल, लाशों की मंडी था।
अरे! यह वही शंकराचार्य के ज्ञान का प्रतिबिंब कश्मीर था,
जहाँ धर्म नहीं, दर्शन था।
जो जन्नत सा सुंदर था,
यह तेरा मेरा - नहीं यह हम सब का कश्मीर था।
फिर बदली तस्वीर, बदला गया संविधान,
धारा 370 हटी – मिला गया जैसे खोया हुआ सम्मान।
कश्मीर की माटी फिर से गीत गाने लगी,
मेरी घर वापसी की राह सजाने लगी।
सोचा था – अब न होगा कोई डर,
हर सुबह होगी निडर, उजली और बेख़बर।
मगर आज ... फिर, वही मंज़र दोहराया गया,
धर्म के नाम पर बाँटकर, हमें ही निशाना बनाया गया।
क्या सोचते हो – इस दहशतगर्दी से हम डर जाएंगे?
अपनों की जान का हिसाब क्या यूँ ही छोड़ जाएंगे?
नहीं अब और न सहेंगे, अब जवाब ठोस होगा,
आख़िरी साँस तक, हर वार पर प्रतिकार जोश होगा।
अब वक़्त है शब्दों से आगे बढ़ने का,
सिर्फ़ संकल्प नहीं, हथियार उठाकर लड़ने का।
न्याय की मशाल को फिर से जलाएंगे,
अपने घर वापसी की उम्मीद फिर से जगाएंगे।

♦ ♦ ♦

एआई की अहमियत (व्यंग)

- दीपशिखा वन्दना
वरिष्ठ परियोजना अभियंता

अब ना पंडित, ना ही डॉक्टर, सब AI कर दे झकास,
ChatGPT से पूछो प्रश्न, मिल जाए सीधा जवाब!
पहले करते थे खुद का काम, अब बटन दबाओ बस,
AI बोले: "तू बैठा रह, मैं करूँ तेरा हर संघर्ष।"

बच्चा बोले: "मम्मी मम्मी, होमवर्क करना भारी है,"
AI बोला: "आ जा बेटा, मुझसे पूछ ले सारी 'ज्ञान-धारी' है!"
टीचर बोले: "नकल बंद करो, दिमाग से सोचो विचार,"
बच्चा हँसे: "AI है साथ, ज्ञान का अब नया व्यापार!"
गूगल सर्च अब बोरिंग लगे, AI से हो सीधा उत्तर,
बिना सोचे जवाब जो दे, वो बने अब ज्ञान का सागर।

AI बना अब कवि भी, लिख दे शायरी प्यारी,
बस बोलो "रोमांटिक हो", मिल जाए दिल से सारी!
बॉस बोले: "रिपोर्ट कहाँ है?" कर्मचारी बोले: "AI बना रहा है,"
"मैं तो बस कॉफ़ी पी रहा, स्लाइड्स भी वो सजा रहा है!"
पर डर भी थोड़ा लगता है, कहीं ये ना ले ले जगह हमारी,
फिर सोचा - चलो AI से दोस्ती कर लें, वही तो असली यारी!

♦ ♦ ♦

हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।
- विलियम केरी

याद पिता की

- देव कुमार मिश्रा
वरिष्ठ सहायक

जाते जाते अपने जाने का गम दे गए, आप न रहे अपने सुनहरी यादों का पल दे गए।
अब भी ढूंढती है आँखें हर जगह घर पर, पर कहीं होने का मुझे कैसा भ्रम दे गये॥

जिन्दगी तो मेरी कट रही है आपके बाद भी, मगर आप के बिन जीने में वो बात नहीं।
ऊपर से तो सब मेरे अपने ही अपने हैं, मगर आप की तरह अन्दर से कोई मेरे साथ नहीं॥

ख्याल सब रखते हैं मेरा अपने तरीके से, मगर आप जैसे ख्याल रखना किसी में बात नहीं।
लड़ाईयां तो अब भी होती है घर में, मगर आपसे वो प्यारी नोक झोक वाली कोई बात नहीं॥

दुनिया कहती है धीरे धीरे सब भूल जाओगे।
उन्हें कौन बताये जिन कन्धों पर खेले हैं, उन्हीं को अपने कन्धों पर उठाना भूला नहीं जाता॥

कोई भूल थी अगर मेरी तो एक दफा कहते, मुझे ऐसे अकेला छोड़ जाना कोई अच्छी बात नहीं।
उस हंसती हुई तस्वीर को क्या पता कि उसे देखकर कितना रोया जाता है॥

आज भी शाम को दरवाजे पे नजरें टिकाये रहता हूं।
आयेंगे अभी आप, मैं अपने दिल से बार-बार कहता हूं॥

मगर जब देखता हूं आस-पास आप नहीं होते हैं।
तब सच मानिए आपका ये बेटा छिप के अकेले में बहुत रोता है॥
तब सच मानिए आपका ये बेटा छिप के अकेले में बहुत रोता है॥

"आपके जाने पर घर ने, ना जाने क्या-क्या खोया है।
कभी न रोनेवाला बेटा, आज फूट-फूट कर रोया है"।।

♦ ♦ ♦

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

- देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

परमात्मा की तलाश

- राजेंद्र सिंह भंडारी
परियोजना अधिकारी

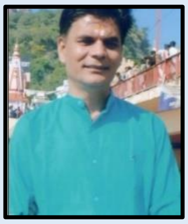

ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।
मंदिर मस्जिद भूल के गिरजा, जब भीतर खुदके जाओगे।

गलत को कहते फिरें सही हम, झूठ को सत्य समझते हें।
झूठ लगेगी ये दुनियाँ कदम जब, सत्य की ओर बढ़ाओगे।
तुमको पाक मिलेंगे रस्ते सारे, जब खुद रास्ते पर आओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

एक नेमत है ये खुदा की देखो, इंसान बने हो जीवन में।
गुमां करेगा खुदा भी तुम प, इंसान जो बनके दिखाओगे।
सुकूं मिलेगा दिल को तुम्हारे, फर्ज जो खुदका निभाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

दिल में कुछ और जुबां प कुछ, ये तो फकत किरदारी है।
असली जीवन जीयोगे अपना, तुम ख्वाबों में नहीं जाओगे।
बनाया जैसा खुदा ने तुमको, जब वैसा ही दिखलाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

दौलत शोहरत जो भी है तेरी, बस उसी खुदा की देन है।
मैं काबिल हूँ मैंने कमाया है, ये कहने में भी शरमाओगे।
दीन दुखी की मदद करोगे, तरस जो उन पर खाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

माँ बाप की मूरत से बड़कर, कोई खुदा नहीं है दुनियाँ में।
समझ के जीवन देन है उनकी, जब गीत ख़ुशी के गाओगे।
हर पल सेवा में लीन रहोगे, जो तुम नहीं उन्हें तरसाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

ये हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, बोली है कुछ मक्कारों की।
मज़हब जात को भुलाके जो तुम, सबको ही गले लगाओगे।
एक दूजे की राह में जब तुम, खुशबु फूलों की बिखराओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

हें उसी खुदा की हम संतानें, बस इंसानियत है धर्म हमारा।
कोई कहीं जो पूछे धर्म तुम्हारा,आदमियत ही तुम बताओगे।

छोटी मोटी चिंगारी को जो तुम, हवा देके नहीं भड़काओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

है एक घर एक परिवार हमारा, रिश्ता है हमारा आपस में।
भड़काने पर भी ओरों के तुम, जो आपस में नहीं टकराओगे।
छोड़ के ये शमशीरे बगावत, जब आपस में हाथ मिलाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

अपने खुदा का करम तो देखो, कायनात मिली बख्शीस में।
खुदको समर्पण करोगे इसमें, कोई जोर न तुम दिखलाओगे।
देकर जान भी इस को बचाएं, जब मिलकर कसमें खाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

बगैर खुदा की मर्जी के जानो, एक पत्ता भी नहीं हिलता है।
नहीं हैसियत कुछ भी हमारी, जब खुद को तुम बतलाओगे।
सोंप खुदा के हाथों में अपनी, उलझन को जब सुलझाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

एक मिटटी का पुतला हो तुम, मिटटी में ही मिल जाना है।
इतराओगे न ख़ुशी में ज्यादा, न गम में तुम अश्क बहाओगे।
तुम ही ताकतवर हो इस दुनियाँ में, खुदको नहीं उकसाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

अमीर गरीब में कोई फर्क नहीं, केवल ये पलड़ा ऊपर नीचे है।
एक राजा भी पल में रंक बनेगा, ये पाठ जो खुदको पढ़ाओगे।
अहंकार की इन लपटों में तुम, जब खुद को नहीं जलाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

बस दो दिन का इंसानी जीवन है, जियो इसे तुम जी भर के।
तारीफ करेगा खुदा भी तेरी, एक रोते को तुम जो हँसाओगे।
ऊंच नीच को देख के जो तुम, दामन नहीं खुद का बचाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

सच को सच कहना सीखो तुम, झूठ को झूठ कहो खुल कर।
जो किसी की झूठी बातों पर तुम, स्वार्थ में नहीं मुस्काओगे।
इस बुराई को मिलकर जब तुम, जड़ से ही इसकी मिटाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

दुःख दर्द जीवन में जो भी मिले, तुम खुद इसके जिम्मेदार हो।
अपनी नाकामी के लिए तुम, औरों पर नहीं अंगुली उठाओगे।
अपनी सारी गलती का तुम जब, खुदको जिम्मेदार ठहराओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

तजुर्बेदार ये कहते फिरते हैं, यहाँ सब कुछ मिलता नसीबों से।
खुदके काबिल होने पर खुदको, खुदके सिर में नहीं बिठाओगे।
इस झूठी तरक्की का परचम जब, तुम हवा में नहीं लहराओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

फूक - फूक के कदम उठाओगे तुम, तकलीफ न दोगे ओरों को।
तुमको अगर कोई जख्म मिले तो, दोनों हाथों से उसे दबाओगे।
पर भूलके भी जब जीवन में तुम, सितम नहीं किसी पर ढाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

लाचारों मजबूरों को देख के जब, तेरे होने लगे पीड़ा दिल में।
किसी दुबले पतले कमज़ोर पर तुम, कभी जोर नहीं आजमाओगे।
खुद के हिस्से का निवाला जो तुम, किसी भूखे को खिलवाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

जब इंसान के रूप में जन्म लिया, हम गलती भी कर सकते हैं।
खुद स्वीकार करोगे गलती को जब, तुम अपना शीश झुकाओगे।
भर कर आंसू पलकों में खुद की, जो बहुत ही तुम पछताओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

जब समझोगे कि मौत ही बेहतर है, कारोबार से झूठ फरेबी के।
सच और ईमान से जो मिल जाए, तुम वही रूखी सूखी खाओगे।
देखके वो छप्पन भोग औरों के, बिलकुल भी नहीं ललचाओगे।
ईश्वर अल्लाह गॉड खुदा तुम, अपने ही दिल में पाओगे।

♦ ♦ ♦

इस विशाल देश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिन्दी को समझते हैं।

- राहुल सांकृत्यायन

माँ का रिश्ता

- पुनीत गुरमुखानी
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

बचपन को जब याद करूं,
हर लम्हा फरियाद करूं,
कोई नहीं तुझ जैसा मां,
क्यूं झूठी मैं बात करूं।

मेरे दिन की शुरुआत से पहले,
भूख मेरी, मेरी प्यास से पहले,
मेरी हर आहट जान गई,
मेरी हर जिद को मान गई रोता मैं तकना उसका,
सोते में जगना उसका,
शिकन मेरे चेहरे पे जब,
माथे पे चुम्बन उसका पर दिन वो सारे बड़े हुए।

हम पैरो पे खड़े हुए,
अब चलने पे जोर हुआ,
मां का आंचल अब दूर हुआ,
घर के बाहर मेरा जाना,
मिट्टी में खेल के खिल जाना,
दूध को हाथ में लिए हुए इसी बीच उसका आना,
देख मुझे हंसना पहले, मां मेरी दुनिया सबसे पहले।

लिखने पढ़ने की बात शुरू,
मां की ठंडी वो डांट शुरू, क, ख, ग उसका कहना,
तुतलाता मैं उसका हंसना ये सारे नगमे छूट गए,
हम घर से मां से दूर गए।

अब स्कूल की बारी थी,
मां की पूरी तैयारी थी, बुक, बैग, टिफिन सब कुछ हाजिर,
बस मुझको लेकर जाती थी,
होमवर्क पे ध्यान रहे,
उसके बाद सम्मान रहे,
नम्बर ऐसे लाओ तुम खुद तुमको भी अभिमान रहे,
पर मां की मम्मता प्यारी है,

वो कविता की फुलवारी है।

आकाश मेरा अंबर हो तुम,
देवी मेरी दुर्गा हो तुम,
हो मुझको तुम शोभित पल पल,
न जीना हो तुम बिन एक पल यादों को मेरी खीच गई,
मां से मिलने की रीत गई,
अब आंखों ने देखे सपने,
घर को अपने जब छोड़ चला कितने आंसू बहे नयन से,
मां का साथ मैं छोड़ चला।

अब दूर शहर में रहता हूं,
सुख दुख न किसी से कहता हूं,
सब भूखे व्यापारी हैं,
मतलब भर सब को दिखता है अपनी जेबें भरनी सबको,
जमीर यहां अब बिकता है,
कहता हूं बिलकुल वध है वो,
यकीन करो पर सच है वो सुने को मेरे समझ सका,
ऐसा न कोई दिखता है,
मन को मेरे पढ़ ले ऐसा,
मां का ही बस रिश्ता है।

♦ ♦ ♦

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएँ सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा का भक्त होना चाहिए।"

- श्यामसुंदर दास

चार लोग

-ईशा गुप्ता
परियोजना अभियंता

ये एक बार की बात नहीं, हर बार की बात है,
ज़िंदगी के हर मोड़ पर चार लोगों की मात है।

हर उम्र, हर पड़ाव पर, ये कहने को साथ निभाते हैं,
पर असल में ये वही हैं, जो अरमानों को दबाते हैं।

इन चार लोगों को हमारी फिक्र नहीं, पर ख़बर सब है,
ये वो हैं जो हमारा डर, हमारे हम सफ़र हैं।

ये चाहते हैं कि हम अपने ख़्वाब इन्हें दें,
हर किए काम का हिसाब इन्हें दें।

इन चार लोगों की चिंता में हम सब जीते हैं,
पर कोई नहीं जानता कि ये आखिर कहां रहते हैं।

इन चार लोगों की बातें बड़ी ही अजीब हैं,
ना जाने फिर भी क्यों ये हमारे दिल के इतने करीब हैं।

इन चार लोगों के किस्से बचपन से शुरू हो जाते हैं,
बिना कुछ पूछे, बिना कुछ कहे, ये हर बात कह जाते हैं।

पढ़ाई न करने पर जब पड़ती थी मार,
माँ कहती, "चार लोग कहेंगे, ये बच्चा है बिल्कुल बेकार।"

मन तो था अपने दिल की सुनें, पर कुछ कर न पाए,
क्योंकि "चार लोग क्या कहेंगे," ये बात हरदम सताए।

बचपन बीता, हम बड़े हो गए,
देखा कि वो चार लोग भी साथ खड़े हो गए।

पहली बार किसी पर दिल आया,
पर चार लोगों के डर से किसी को कुछ न बताया।

अपने इरादों को दिल में दबा लिया,
खुश होने के लिए थोड़ा मॉडर्न लुक अपना लिया।

इस पर भी चार लोग बोले, "ये बच्चा तो बर्बाद हो गया,
संस्कारों को छोड़कर, ये तो आज़ाद हो गया।"

अब करियर का सवाल आया,
चार लोगों ने फिर से बवाल मचाया।

शायरी लिखने का शौक था, पर किसी ने न माना,
कहा, "शायर बनकर पेट कैसे भरेगा दीवाना?"

शादी का वक्त आया, तो दिल की बात को जताया,
चार लोग बोले, "देखो, ये तो अपनी मर्यादा ही भूल आया।

अपनी खुशियों के पीछे, सबको शर्मिंदा कर आया,
कौन समझाए इसे, इसने तो रिवाजों को ठुकराया।"

शादी के बाद भी चैन कहां पाने दिया,
"बच्चे कब होंगे?" चार लोगों ने ये सवाल हरदम किया।

बच्चों की परवरिश पर भी ताने कसते रहे,
ये चार लोग हर पल, दिमाग में बसते रहे।

जब उम्र ढलने लगी, तब भी चैन न आया,
चार लोग बोले, "अब क्यों आराम को अपनाया?"

"जो दौड़ते थे कभी, अब क्यों रुक गए?"
"कभी जीते थे जिंदादिली से, अब तुम क्यों झुक गए?"

कभी सोचा, कौन हैं ये चार लोग?
ना ये कोई अपने हैं, और न ही पराए।

असल में ये कोई नहीं, ये सिर्फ मन का भ्रम हैं,
हमारे मन का वो वहम हैं, जो हर कदम पर फिक्र जताते रहे,
जो ख्वाबों को चुराकर, डर दिखाते रहे।

इनका ना कोई नाम है, ना कोई चेहरा,
बस हम संग इनका रिश्ता है बहुत गहरा।

जो कभी थे ही नहीं, वो साए बने हैं,
हमारी सोच के बेबस दायरे तने हैं।

तो हो सके तो तुम उन चार लोगों की बातों से बच जाना,
कोई कुछ भी कहे, तुम खुद को खूब चाहना।

क्योंकि तुम चाहो कुछ भी कर लो, वो चार लोग हमेशा बातें बनाएंगे,
और अगर तुम ध्यान नहीं दोगे, तो वो खुद गायब हो जाएंगे।

♦ ♦ ♦

कोविड और महाकुंभ

- अनिल कुमार
पी.पी.एस.

इस जीवन में दो अद्भुत चीज देखने को मिली
पहला कोविड और दूसरा महाकुंभ
एक ने दूरी बढ़ायी और दूसरे ने घटाई।

बिलकुल! इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए कुछ और अंदाज़ में
कोविड ने कहा - "दूरी बना लो, जान बचा लो!"
महाकुंभ ने कहा - "भीड़ बढ़ा लो, पुण्य कमा लो!"

कोविड बोला - "मास्क लगाओ, घर में रहो!"
महाकुंभ बोला - "डुबकी लगाओ, मुक्ति पाओ!"
एक ने साँसों को उलझा दिया,
दूजे ने हर हर गंगे का नारा दिया!

कोई बोला - 'ऑनलाइन रहो, सुरक्षित रहो'
तो कोई बोला - 'संगम चलो, भवसागर से पार चलो'
ये ज़िंदगी भी अजीब रंग दिखाती है,
कभी दूरी ज़रूरी हो जाती है,
तो कभी भीड़ ही सबसे बड़ी ताकत बन जाती है...!

♦ ♦ ♦

हिन्दी को अपनाने का फैसला केवल हिन्दी वालों ने ही नहीं किया। हिन्दी की आवाज पहले अहिन्दी प्रान्तों से उठी। स्वामी दयानंद, महात्मा गाँधी या बंगाल के नेता हिन्दी भाषी नहीं थे। हिन्दी हमारी आजादी के आंदोलन का एक कार्यक्रम बनी।

- अटल बिहारी वाजपेयी

तकनीक की उड़ान

- प्रिंस तोमर
इंटर्न

कभी चिट्ठियों में बात होती थी,
अब वीडियो कॉल में बात होती है।
टेलीग्राम से शुरू हुआ कारवाँ,
अब 5G की सौगात होती है।

गाँव की गलियों में रेडियो बजता था,
अब पॉडकास्ट में ज्ञान छलकता है।
ब्लैकबोर्ड से निकली शिक्षा की राह,
अब टैबलेट पे हर पाठ दिखता है।

कभी मीलों चल के बैंक जाते थे,
अब मोबाइल से पैसा आता है।
हर जेब में है स्मार्ट मशीन,
जो हर सवाल का हल बताता है।

पर इस रफ्तार में मत खो जाना,
इंसानियत से दूर न हो जाना।
तकनीक तो साथी है मंज़िल की,
पर दिल से दिल का रिश्ता मत तोड़ जाना।

नम आँखों से माँ की तस्वीरें,
अब स्क्रीन पे सजीव हो जाती हैं।
पर एक गले की गर्मी के आगे,
सब तकनीकें फीकी पड़ जाती हैं।

♦ ♦ ♦

महाकुंभ की बेला में

- पार्थ पी. चट्टराज
प्रधान तकनीकी अधिकारी

आओ आओ चलो सब!
महा कुम्भ की बेला में!!

ना है रात और ना ही दिन!
शुभ मुहर्त की बेला में!!

अस्तित्व में अब आई है!
पुनः जागरण की ये बेला!!

काल-रेखा भी आज साथ है!
यह धर्म जागरण की बेला!!

आओ आओ चलो सब!
महा कुम्भ की बेला में!!

ना है रात और ना ही दिन!
शुभ मुहर्त की बेला में!!

जागो-चलो-उठो सब!
मिलें हम संगम के मेले में!!

आओ अर्पण करें हम!
पूर्वजों को अमृत की प्याला में!!

खुला है दरवाज़ा आज स्वर्ग का !
मुक्ति हो हमारे पितृऋण की!!

ये जीवन की अमृत कलश की!
ये सपूर्ण काल-खण्ड की-देव ऋण की बेला में!!

आओ-आओ चलो सब!
महा कुम्भ की बेला में!!

ना है रात और ना ही दिन!
शुभ मुहर्त की बेला में!!

ना जाति का भेद है!
ना धनी या निर्धन की भाषा है!!

जीवन के इस काल चक्र में!
संगम ही सनातन है!!

आओ आओ चलो सब!
महा कुम्भ की बेला में!!

ना है रात और ना ही दिन!
शुभ मुहर्त की बेला में!!

क्षमा करो माँ!
ये जीवन की बेला में!!

ना मैं कर सकूं जलाभिषेक!
आप की ममता की सागर को!!

रहने दो माँ आप की ममता!
मेरी अंतर आत्मा में!!

हमेशा रहो आप मेरे!
मातृ ऋण कमल ममता की आसन में!!

जन्म-जन्म से आया मैं !
आपके ही सानिध्य की बेला में!!

आओ आओ चलो सब!
महा कुम्भ की बेला में!!

ना है रात और ना ही दिन!
शुभ मुहर्त की बेला में!!

♦ ♦ ♦

मानवता की सेवा में प्रकृति का योगदान

- सुदेश शर्मा
(पत्नी ओमप्रकाश शर्मा
कंसलटेंट हिंदी)

मानवता की सेवा में प्रकृति का है योगदान
सूनी-सूनी खड़ी ठीठुरती पर्णहीन वृक्षों की पाँव है।
हरी-भरी इक लता पेड़ की,
शाखा में यूँ बंधी हुई,
धरती बहन की यह इच्छा,
प्रकृति में प्रकट हुई।
प्रक्रति ने हमको सांसों के,
धागे में बंधा है।
उर्जा से भर यही शपथ लें,
इसका बाल न हो कभी बांका।
पड़ी रौशनी सूरज भैया की,
उठकर मानों सूरज भैया,
बैठ चले हैं अपने रथ पर,
दौड़ रहे हैं जीवन पथ पर,
उन्हें देख जगती है दुनिया,
संग--संग चलती है दुनिया।
जितने सुंदर, उतने प्यारे,
पंछी नभ के कितने न्यारे,
कोयल मीठे गीत सुनाए,
चिड़िया रानी चहचाए।
दिन छोटे और रात बड़ी,
सर्दी बड़ी और बर्फ पड़ी,
सफेद होने लगे पहाड़,
प्यारे-प्यारे लगते ताड।
चीड वृक्ष की शान निराली,
मोहक दृश्य दिखाने वाली,
यह मौसम है सबसे प्यारा,
सुबह-शाम का गजब नज़ारा।
धुंध और कोहरे का साया,
लगती भली-धूप की माया,
धूम-धडाका खूब मचाती,
वर्षा की बारात आ गई।
बिजली आतिशबाजी करती,
चुनमुन चिड़िया गीत गा गई।

अलग-अलग तरह के मौसम तो,
चलते ही रहते हैं।
वर्षा, गर्मी और सर्दी में,
आते हैं मौसंम के फल।
पेड बगीचे मन ललचाते,
हर फल देता हमको बल।

बादल को भी सब याद करते हैं कि-
“ऐ बादल मेरे गावं आना.
साथ में अपने पानी भी लाना।
सूखे कुएं और सूखे तालाब,
देख खिलता नहीं मन का गुलाब।

बगीचे में सोन-चिड़िया,
छाता लेकर गाती है।
शाम हुई तो घास-फूस का,
कंबल ओढ़ सो जाती है।

जुगनू अपने लालटेन को,
जला-भुझा यों डोल रहे।
तारे टीम-टीम करके चंदा,
से आने को बोल रहे।
हवा चली सर-सर तो सागर,
अंगडाई ले जाग गया।

आओ मिट्टी में चलना सीखें,
अपने छोटे पांवों से।
मिट्टी ही हमें जोड़े रखती है,
अपनी- अपनी माओं से।

मिट्टी पैदा करती सोना,
मिट्टी पैदा करती वीर।
जो मिट्टी से करें प्यार,
होता नहीं कभी अधीर।

प्रकृति है सबसे न्यारी,
सबकी मदद से है सबसे प्यारी।
करती सहायता सबकी वह,
याद न आती किसी को वह।

प्रकृति के हैं रूप अनेक,
उसको बचाना है मनुष्य का काम।
मानवता की सेवा में है प्रकृति का स्थान,
उसकी कदर करना भी है मनुष्य का काम।

♦ ♦ ♦

मानव जीवन

रजनी शर्मा
कार्यालय सहायक

मानव जीवन पाया हमने,
कितनी लालसा कितने सपने
कितने कोमल कितने अपने,
बच्चे थे, तो खेलते रहते,
तेरा मेरा नहीं समझते,
गुरुजन हमको यही पढाते,
भाग्य से मानव जन्म है पाते।

नेक काम कर, सुन मेरे भाई,
पर दुःख कातर, बन मेरे भाई,
झुक कर जीना सीख रे भाई,
पर हमने कब किसी की मानी?
स्वार्थ हित करते मनमानी,
ऐसे ही बचपन बीता आई जवानी।

भौतिकता में लीन होकर,
भले बुरे का ज्ञान खोकर,
सहनशक्ति का भाव खोकर,
तर्क कुतर्क को साथ लेकर,
नाते-रिश्तों को भरमाया,
सोचो, क्या खोया क्या पाया।

बच्चों तक सिमटा परिवार,
भाई का साथ नकार,
करें संघर्ष, हुए तार,
अहंकार के मद में चूर,
संस्कारों के पोषण से दूर
संत वचन कर दिए बिसार।

संस्कारों का पतन हो रहा,
खंडित घर हो रहा,
हाय! जग में क्या हो रहा?
अर्थ आज, अनर्थ कर रहा,
सुख- शांति का हरण कर रहा,
है कोई, जो करे निराकरण,
खुशियों से भर दे अंतःकरण।

तृष्णा और लालच ने आज,
जीवन का रस सोख लिया,
बन कर बादल बरसना था,
पर तप्त हवा को ग्रहण किया,

न तन का उपयोग किया,
न कर्मठता को साथ लिया,
आलस का दामन थाम लिया।

गोलोक कभी तो जाओगे,
कैसे प्रभु से आँख मिलाओगे।
क्या कोई उत्तर दे पाओगे
क्या स्वयं को माफ कर पाओगे?
धिक्कार है ऐसे जीवन को,
फिर बार-बार पछताओगे।
फिर बार-बार पछताओगे।

♦ ♦ ♦

राजभाषा नियम 3 के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रों का वर्गीकरण

"क" क्षेत्र : बिहार, छतीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।

"ख" क्षेत्र : गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य, चंडीगढ़, दामन व द्वीप, दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

"ग" क्षेत्र : उपरोक्त "क" और "ख" क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य/संघ राज्य क्षेत्र।

♦♦♦

बेटे की जिम्मेदारी

- पुनीत गुरमुखानी
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी

मेरे पापा मेरी जिंदगी को उत्तम बना दिया,
अपना कुछ ना देखा क्यों ऐसा तुमने किया।

खुद तकलीफ उठाया, दुख हमको नहीं दिया,
खुद बिन खाए रहकर, मुझे शिक्षा उच्च दिया।

हम सबको आगे बढ़ने का अवसर पूर्ण दिया,
खुद फटा पुराना पहन वस्त्र हमें कपड़ा नया दिया।

पैरों में आपके फटे पुराने जूते थे,
पर कर्ज काढ़कर हमको तुमने जूते नए दिया।

अपना जीवन देकर, हम सबका उद्धार किया,
अपने श्रम के सागर से, मेरी नैय्या पार किया।

हमने दुख देखे है. आपके और महसूस किया,
हम सब के कारण ही अपना जीवन नष्ट किया।

बड़ा हुआ पढ़ लिखकर पाया नौकरी,
बचा खुचा जीवन का अंश मेरी शादी में दिया।

मेरी बीबी अगर कहे कि खर्च घर का मैं क्यों दिया,
पूरा ब्यौरा आपकी जिंदगी का मैंने उसे दिया।

मेरी घर की जिम्मेदारी अब सब मुझ पर है पापा,
मुझे याद सभी वो पल हैं संग आपके जो है जिया।

आपने अपना त्याग सभी था मुझको जो पाला,
सेवा की है मेरी बारी, संस्कार है यही दिया।

आजीवन आभारी हूं, जो आपने मुझे दिया,
ना कभी अऋण हो पाऊंगा जो उपकार किया।

जो जिम्मेदारी मेरी है मैं उसे निभाऊंगा,
कभी कष्ट न होवे आप सभी को ये निश्चय किया।

♦ ♦ ♦

जब मां 25 की थी

- काजल भारद्वाज
फ्रंट डेस्क एग्जीक्यूटिव

सोचती हूं, मां कैसी थी, जब वो 25 की थी?
जब मेरा, इंतजार, मेरा ख्याल भी नहीं था उन्हें,
ख्याल तो क्या दूर-दूर के ख्वाबों में भी नहीं थी मैं,
सोचती हूं, मां कैसी थी, जब वो मां नहीं थी?

मां के पास क्या था, मां का राज क्या था,
क्या ख्वाब थे आंखों में, क्या कहानी थी,
जब अपनी कहानी की खास किरदार खुद मां ही थी,
मुझे समझदार बनाने वाली, जब खुद बच्चों सी थी,
सोचती हूं, मां कैसी थी, जब वो 25 की थी?

मेरे पंखों को हवा देने वाली, जब अपने पर फैलाती थी,
रात-रात भर जग कर जब अपने ख्वाब सजाती थी,
मेरी तरह ही अपनी मां को, वो अपनी हर बात बताती थी,
मेरी मां के हर किस्से, हर फिक्र, हर ख्याल,
हर जिक्र में जब उनकी मां आती थी,
सोचती हूं, मां कैसी थी, जब वो 25 की थी?

जब मैं उनकी जैसी नहीं, वो अपनी में जैसी थी,
अचानक ये ख्याल तब आया,
जब मेरी बेटी ने मुझसे मेरा बचपन पूछा,
तब मुझे मेरी मां का बचपन याद आया,
सोचती हूं, मां कैसी थी, जब वो 25 की थी?

मां, मैं भी (मल्टी टास्किंग) नहीं हूं,
हमेशा कुछ न कुछ छूट जाता है,
कैरियर देखती हुं, तो घर छूट जाता है,
घर देखती हूं तो, दौड़ में पीछे रह जाती हूं।
और जब दोनों को संभाल लूं तो,
सेहत जवाब दे जाती है।

कल गुड़िया की किताब खोली तो देखा,
अब तो ए.बी.सी.डी. लिखना सीख गई है,
मैं तो चौक ही गई,
मैंने उससे पुछा, तुमने ये कब सीखा,
वो बोली स्कूल में,
मुझे याद है मां,
कैसे आप मुझे पढ़ाने के लिए उतावली रहती थी,
देखा मां, आप बेमतलब ही इतना परेशान रहती थी,
बच्चे सीख ही जाते हैं,
पर सच कहूं, उस समय बड़ा ही अजीब लगा,

मेरी बेटी लिखना भी सीख गई और मुझे मालूम हीं नहीं पड़ा।
मां तुमने सबका ख्याल पूरी सिद्दत से रखा, घर का, परिवार का,
समाज का पर खुद का खुद का किया मां,
नहीं मां तुम भी (मल्टी टास्किंग) नहीं हो,
तो छोड़ देता है, (मल्टी टास्किंग) होने का ढोंग क्योंकि आप भी तो मां बाद में,
एक इंसान पहले है हिसाब लगा कर देख लो,
दुनियां के हर रिश्ते में कुछ आधा-अधूरा ही निकलेगा।
एक मां का प्यार है, जो 9 महीने ज्यादा ही निकलेगा।
दुनियां की सबसे बड़ी झूठी है, मां, जितना उसका दिला दुखा, वो उतना ही मुस्कराई।
ऐसा नहीं है, की मां को बनाकर खुदा बहुत खुश हुआ होगा...
सच तो ये है कि वो बहुत पछताया ... कब,
उसका एक-एक जादू किसी ओर ने चुरा लिया,
और वह जान भी नहीं पाया,
खुदा का काम था मुहब्बत वो मां करने लगी,
खुदा का काम था हिफाजत, वो मां करने लगी,
खुदा का काम था बरकत वो भी मां करने लगी
देखते ही देखते आंखों के सामने कोई और परवरदिगार हो गया।
मुझे रब ने रियासतें नहीं दी फिर भी उसको माफी है
मैं तो अपनी मां की रानी बेटी हूं, बस यही काफी है।
चलो करें आज एक काम, अपना हर संडे हो मां के नाम।
आज दो घड़ी बैठो उसके साथ, छेड़ो कोई पुराना किस्सा।
पूछो कैसे हुई थी पापा से पहली मुलाकात,
दोहराओ उसके गुजरे जमाने, सुनाओं आज उसकी मनपसंद के गाने।
हर लड़की की तरह उसे भी तारीफें सुनना अच्छा लगता है।
तुम्हारी मां से सुंदर दुनिया की कोई लड़की नहीं हो सकती है,
ये सच उसे आज ही बताओ।
चलो करें आज एक काम, अपना हर संडे हो मां के नाम।
अब करें उनकी बात जिनके मन में चल रही यह बात।
देर हो गई, अब मां तो नहीं रही मेरे पास,
अरे अब तू याद तो कर धन्यवाद कर, देर तो कभी हुई ही नहीं।
क्योंकि मां हरपल है, अपने बच्चों के साथ।
बोलेगी मां... जहां भी होगी.... जीवन धन्य हुआ मेरा आज, पुकारा बेटे ने मेरे आज।
जब मां फुरसत में होती तो, हमें उस दिन की बातें सुनाती, जब वो खुद बच्ची साथी,
और हमें बड़ी मुश्किल से यकीन होता कि मां भी कभी बच्ची थी।
सोचती हूं, मां कैसी थी, जब वो 25 की थी?

♦ ♦ ♦

विराम के बाद

- जितेन्द्र जैन
फाइनेंस एग्जीक्यूटिव

पुरानी हवेली की दीवारों पर समय की दरारें थीं
जैसे किसी टूटे हुए दिल की रेखाएँ,
जो दिखती तो हैं, पर कोई उन्हें भर नहीं सकता।
आरव, हर रोज़ उस वीरान कमरे में बैठता
जहाँ कभी तृषा की हँसी गूंजा करती थी।
अब वहाँ सिर्फ़ दीवार घड़ी की टिक-टिक थी,
और उसकी आँखों में हर शाम ढलती धूप का इंतज़ार।
उसने तृषा के लिए एक कप चाय बनाना कभी नहीं छोड़ा
भले ही वो कप वर्षों से यूँ ही ठंडा पड़ा रहता।
पर प्रेम के नियम अलग होते हैं
वहाँ तर्क नहीं चलते, वहाँ आदतें भी पूजा बन जाती हैं।
उधर तृषा, एक नई दुनिया में थी, भीड़ भरे शहर में,
लेकिन हर शाम जब वह खिड़की खोलती,
तो कोई पुरानी हवेली की हवा उसके चेहरे को छू जाती
जैसे अतीत ने उसे कभी छोड़ा ही नहीं।
वो अक्सर सोते-सोते उठ जाती
सपनों में वही आवाज़ सुनाई देती:
“तृषा... कुछ अधूरा रह गया है।”
और तब वो खुद से लड़ती,
आँसुओं से अपनी डायरी के पन्ने गीले करती और लिखती –
"प्रेम कभी मरता नहीं... वो बस इंतज़ार करता है,
उस पल का जब हम अपने भीतर के शोर को शांत कर सकें।"
वक़्त बीत गया।
मौसम बदले।
रिश्तों की उम्र बढ़ गई, पर उनका प्रेम वहीं ठहरा रहा
उसी दोपहर में, जब तृषा चली गई थी... बिना कुछ कहे।
और फिर एक दिन...
बारिश हो रही थी।
हवेली की खिड़कियों से बूंदें टपक रही थीं
जैसे वक़्त खुद रो रहा हो।
तृषा आई।
दरवाज़े के सामने खड़ी थी
भीगी हुई, थकी हुई, और टूटी हुई।
आरव ने दरवाज़ा खोला
उसकी आँखों में कोई सवाल नहीं था...

सिर्फ़ एक चुप्पी थी, जिसने तृषा को तोड़ दिया।
वो फूट पड़ी
“मैं कहीं नहीं गई थी आरव...
मैं रोज़ तुम्हारे ही पास लौटती रही,
पर खुद को कभी माफ़ नहीं कर पाई...”
आरव ने बिना कुछ कहे,
अपने काँपते हाथों से उसका चेहरा थामा
और कहा:
“प्रेम लौट आया है,
तृषा... शायद थोड़ा टूटा हुआ,
पर अब और सच्चा।”
वे दोनों बैठ गए
उसी पुराने कमरे में।
वही चाय के कप फिर से भरे गए।
इस बार चाय में चीनी थोड़ी ज़्यादा थी
शायद ज़िंदगी की कड़वाहट को ढँकने के लिए।
कोई संगीत नहीं था,
कोई कविताएँ नहीं...
पर उस मौन में जो प्रेम था,
वो हर शब्द से बड़ा था।
और जब तृषा ने कहा,
"अब मुझे जाना नहीं, आरव..."
तो उसकी आवाज़ में वो पीड़ा थी
जो सिर्फ़ उन्हीं को समझ आती है,
जो प्रेम को जीते नहीं, सहते हैं।
कभी-कभी प्रेम लौटता है...
टूटे हुए पलों की राख से,
भीगे हुए खतों की स्याही से,
और अधूरी बातों की परछाइयों से।
और जब वह लौटता है –
तो आँखें नहीं बचतीं,
दिल नहीं छुपते,
और आंसू –
वो खुद प्रेम की गवाही बन जाते हैं।

♦ ♦ ♦

फंदा

- रिषभ शर्मा
इंटर्न

वो पैरों पे चढ़के कहेगा - आगे बढ़ो,
वो ज़मीन से पकड़ के कहेगा - आसमाँ छूओ।

वो जान के भी अनजान यूँ बनेगा,
ये कोई और नहीं, अपना ही फंदा रहेगा।

कैसे अब ये सर उठाऊँ मैं,
कैसे अब वो लौ जलाऊँ मैं।

जो मेरा जहाँ प्रकाश से भर देगी,
मेरी स्याह सी ज़िंदगी को दिन कर देगी।

या शायद ये एक सपना ही रहेगा,
जो अपना होकर भी अपना नहीं रहेगा।

घुट जाएँगी सारी आशाएँ,
अरमानों में कोई दम न रहेगा।

वो जान के भी अनजान यूँ बनेगा,
ये कोई और नहीं, अपना ही फंदा रहेगा।

एक रोज़ शायद आएगी रोशनी,
खिड़कियों पे खटखटाएगी रोशनी।

लेकिन तू है जो बंधा ही रहेगा,
क्योंकि तेरे पैरों में वो फंदा ही रहेगा।

♦ ♦ ♦

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।

- आचार्य विनोबा भावे

प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), नोएडा में राजभाषा हिन्दी संबंधी गतिविधियों की रिपोर्ट वर्ष 2024-25

- ओमप्रकाश शर्मा
कंसलटेंट (हिन्दी)

प्रगत संगणन विकास केन्द्र (सी-डैक), नोएडा भारत सरकार के इलेक्टॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के आधीन एक प्रमुख वैज्ञानिक एवं अनुसंधान संस्था है। जो सूचना, संचार प्रौद्योगिकियों एवं इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रमुख अनुसंधान एवं विकास संगठन के रूप में उभरा है। यह संस्था वैश्विक विकास के संदर्भ में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकीय क्षमताओं को सशक्त बनाने पर कार्य कर रही है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निरंतर नए कीर्तिमान स्थापित करने के साथ-साथ सी-डैक, नोएडा संघ सरकार की राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। विगत वर्षों की भांति उपरोक्त अवधि के दौरान भी इस केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित आदेशों का निष्ठापूर्वक अनुपालन सुनिश्चित किया गया है। कर्मचारियों को हिन्दी में कार्यालयीन कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु समय-समय पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करने के अलावा संगत सहायक सामग्री उपलब्ध कराई गई है। इसके अलावा इस केन्द्र में हिन्दी में मूल रूप से टिप्पण एवं आलेखन संबंधी प्रोत्साहन योजना भी वर्ष 2009 से लागू की गई है, जिसमें अधिक से अधिक कर्मचारियों को भागीदारी करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। वर्ष 2024-25 की वार्षिक प्रोत्साहन योजना में भाग लेने वाले 06 कर्मचारियों को पात्रता की शर्तें पूरी करने पर अनुदेशों के अनुसार पुरस्कृत भी किया गया।

कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए "ऑनलाइन राजभाषा प्रश्नोतरी प्रतियोगिता में भागीदारी करने के साथ-साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) नोएडा के सौजन्य से समय-समय पर आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं और गत्रिविधियों में भी निदेशानुसार कर्मचारियों की भागीदारी सुनिश्चित की गई। इस केंद्र के प्रतिभागियों ने "हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता और राजभाषा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में पुरस्कार हासिल करके इस केंद्र को गौरवान्वित किया है।

राजभाषा कार्यान्वयन के उत्कृष्ट काम के लिए शील्ड योजना के अंतर्गत सी-डैक, नोएडा को वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा हिन्दी का काम उत्कृष्ट रूप से निष्पादित करने के फलस्वरूप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय), नोएडा द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित गया। 26 अगस्त, 2025 को आयोजित नराकास, नोएडा की 49 वीं बैठक के दौरान सी-डैक, नोएडा के कार्यकारी निदेशक द्वारा यह सम्मान (शील्ड और प्रमाण पत्र) प्राप्त किया गया।

हिन्दी दिवस 2024 के अवसर पर कार्यकारी निदेशक महोदय द्वारा इस केन्द्र की गृह पत्रिका ”अभिव्यक्ति” के 16 अंक का विमोचन किया गया। इस पत्रिका का डिजिटल संस्करण सी-डैक की वेबसाइट www.cdac.in पर भी अपलोड किया गया है।

कर्मचारियों में हिन्दी प्रयोग के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 14-29 सितम्बर, 2024 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस आयोजन के अंतर्गत विभिन्न हिन्दी

प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। जिनमें 82 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की।

इसके अलावा सी-डैक कॉर्पोरेट, पुणे द्वारा अंतर सी-डैक स्तर पर ऑनलाइन मोड में आयोजित की गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में इस केंद्र के 14 विजेता प्रतिभागियों ने भाग लिया और 02 कर्मचारियों ने पुरस्कार हासिल करके इस केन्द्र को गौरवान्वित किया है।

1. सी-डैक, नोएडा में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों का विवरण

प्रतियोगिता का नाम	विजेता का नाम, पदनाम, विभाग
1. हिन्दी अनुवाद सह टंकण प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	श्री आशुतोष पाण्डेय, वैज्ञानिक-ई, बी.डी.पी.एम.
द्वितीय पुरस्कार	श्री चंद्र मोहन, परियोजना सहायक, एस.एन.एल.पी.
तृतीय पुरस्कार	श्री भुपेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक-ई, एस.एन.एल.पी.
2. स्वरचित कविता प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	सुश्री ईशा गुप्ता, परियोजना अभियंता, ई. एंड टी.
द्वितीय पुरस्कार	सुश्री रजनी शर्मा, कार्यालय सहायक, पी.एम.ओ. एंड एस.क्यू.ए.
तृतीय पुरस्कार	सुश्री किरन वालिया, परियोजना अभियंता, ई. एंड टी.
3. सूत्र संचालन कला प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	सुश्री हिमानी गर्ग, परियोजना अभियंता, बी.डी.पी.एम.
द्वितीय पुरस्कार	सुश्री रजनी शर्मा, कार्यालय सहायक, पी.एम.ओ. एंड एस.क्यू.ए.
तृतीय पुरस्कार	सुश्री नीरू शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, ई. एंड टी.
4. स्वरचित लेख प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	सुश्री नीरू शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, ई. एंड टी.
द्वितीय पुरस्कार	श्री पुष्पेन्द्र पाल सिंह, परियोजना अभियंता, बी.डी.पी.एम.
तृतीय पुरस्कार	श्री भागचन्द सिंह रावत, कनिष्ठ सहायक, वित्त
5. विज्ञापन प्रस्तुति प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	श्री के. किरन कुमार, परियोजना अभियंता, ई. एंड टी.
द्वितीय पुरस्कार	श्री दिपेश कुमार वर्मा, वरिष्ठ डिजाइन अभियंता, ई. एंड टी.
तृतीय पुरस्कार	सुश्री हिमानी गर्ग, परियोजना अभियंता, बी.डी.पी.एम.
6. वीडियो प्रस्तुति (परिचर्चा/वार्ता)	
प्रथम पुरस्कार	सुश्री ईशा गुप्ता, परियोजना अभियंता, ई. एंड टी.
द्वितीय पुरस्कार	श्री आशुतोष पाण्डेय, वैज्ञानिक-ई, बी.डी.पी.एम.
तृतीय पुरस्कार	श्री दिपेश कुमार वर्मा, वरिष्ठ डिजाइन अभियंता, ई. एंड टी.
7. पॉवर प्रेजेंटेशन (पीपीटीज)	
प्रथम पुरस्कार	डॉ. सुनीता प्रसाद, वैज्ञानिक-ई, ई. एंड टी.
द्वितीय पुरस्कार	सुश्री किरन वालिया, परियोजना अभियंता, ई. एंड टी.
तृतीय पुरस्कार	सुश्री प्रभा कुमारी, परियोजना अभियंता, ई. एंड टी.

8. वाद विवाद प्रतियोगिता	
प्रथम पुरस्कार	सुश्री किरन वालिया, परियोजना अभियंता, ई. एंड टी.
द्वितीय पुरस्कार	सुश्री प्रभा कुमारी, परियोजना अभियंता, ई. एंड टी.
तृतीय पुरस्कार	श्री हिमांशु पाण्डेय, परियोजना अभियंता, पी.एम.ओ. एंड एस.क्यू.ए.

2. सी-डैक कॉर्पोरेट स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं मे पुरस्कृत प्रतिभागी

क्र.सं.	प्रतियोगिता		विजेता
1	वीडियो प्रस्तुति प्रतियोगिता	प्रथम पुरस्कार	सुश्री ईशा गुप्ता, परियोजना अभियंता
2	पीपीटीज़ प्रस्तुति प्रतियोगिता	तृतीय पुरस्कार	सुश्री सुनीता प्रसाद, वैज्ञानिक-एफ

♦ ♦ ♦

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागज़ात

1. सामान्य आदेश / General Orders
2. संकल्प / Resolution
3. परिपत्र / Circulars
4. नियम / Rules
5. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन / Administrative or other reports
6. प्रेस विज्ञप्तियां / Press Release/Communiques
7. संविदाएं / Contracts
8. करार / Agreements
9. अनुज्ञप्तियां / Licences
10. निविदा प्रारुप / Tender Forms
11. अनुज्ञा पत्र / Permits
12. निविदा सूचनाएं / Tender Notices
13. अधिसूचनाएं / Notifications
14. संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र / Reports and documents to be laid before the Parliament

♦ ♦ ♦

वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के उत्कृष्ट काम के लिए नराकास, नोएडा द्वारा सी-डैक, नोएडा को राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा-2025 के दौरान 19 सितम्बर 2025 को आयोजित हिन्दी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता में उपस्थित निर्णायक मंडल एवं प्रतिभागी।

हिन्दी पखवाड़ा-2025 के दौरान 18 सितम्बर 2025 को आयोजित स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता में उपस्थित निर्णायक मंडल एवं प्रतिभागी।

सी-डैक, नोएडा में 12 अगस्त 2025 को कंप्यूटर पर कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने और वॉइस टाइपिंग विषय पर आयोजित हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागी।

हिन्दी पखवाड़ा-2025 के दौरान 19 सितम्बर 2025 को आयोजित आशु भाषण प्रतियोगिता में उपस्थित प्रतिभागी।

हिन्दी पखवाड़ा-2025 के दौरान 19 सितम्बर 2025 को आयोजित हिन्दी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता में उपस्थित निर्णायक मंडल एवं प्रतिभागी।

सी-डैक, नोएडा में 17 सितम्बर से 02 अक्तूबर 2025 तक आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा अभियान में शामिल कर्मचारी।

हिन्दी पखवाड़ा-2025 के दौरान 16 सितम्बर 2025 को आयोजित स्वरचित लेख प्रतियोगिता में उपस्थित निर्णायक मंडल एवं प्रतिभागी।

श्रद्धांजली

स्व. डॉ. सुनीता प्रसाद

कवर डिज़ाइन: ऋषभ सिंह
प्रगत संगणन विकास केन्द्र
सी-56/1 सेक्टर-62, नोएडा, उत्तर प्रदेश